वर्ष-03 अंक-02 जनवरी-2025 | ₹ 20/-
RNI No. UPHIN/2022/84386

लखनऊ जंक्शन

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

सनातन आस्था का प्रतीक है

प्रयाग कुम्भ

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

महाकुम्भ 2025 के लिए प्रयागराज है तैयार

अलौकिक अनुभूति के लिए आएं महाकुम्भ नगर

• 4,000 हेक्टेयर में विस्तृत • 25 सेक्टर में सुव्यवस्थित • 1,850 हेक्टेयर में पार्किंग • 1,50,000 शौचालय • 1,60,000 सुसज्जित टेंट • 67,000 एलईडी स्ट्रीट लाइट • 2 नए विद्युत सब स्टेशन • 66 नए विद्युत ट्रांसफॉर्मर • 2,000 सोलर हाइब्रिड स्ट्रीट लाइट • 1,249 किमी पेयजल पाइपलाइन • 200 वाटर एटीएम • 85 नलकूपों की स्थापना • 7,000 बस का बेड़ा • 550 शटल बस का बेड़ा • 7 नए बस स्टॉप • 30 पाण्टून ब्रिज (400 किमी में) • 9 पक्के घाटों की स्थापना • 7 रिवर फ्रंट रोड • 12 किमी में अस्थायी घाट • 14 नए फ्लाईओवर एवं अंडरपास • 11 नए कॉरिडोर का विकास • 3,000 स्पेशल सहित 13,000 रेल गाड़ियां • प्रयागराज एयरपोर्ट पर नया टर्मिनल

स्वस्थ महाकुम्भ

- सरकारी/प्राइवेट अस्पतालों में 6,000 बेड तैयार
- मेला क्षेत्र में 43 अस्पताल, 381 चिकित्सक तैनात
- 125 रोड, 7 रिवर एवं एक एयर एम्बुलेंस तैनात
- शहर के अस्पतालों में अतिरिक्त 6,000 बेड आरक्षित

स्वच्छ महाकुम्भ

- 850 समूहों में 10,200 स्वच्छताकर्मियों की तैनाती
- स्वच्छता निगरानी के लिए 1,800 गंगादूतों की तैनाती
- 25,000 लाइनर बैगयुक्त डस्टबिन, 300 सक्शन गाड़ियां
- जीपीएस से लैस 120 टिपर-हापर और 40 कॉम्पेक्टर ट्रक

सुरक्षित महाकुम्भ

- 37,000 पुलिसकर्मी एवं 14,000 होमगार्ड की तैनाती
- 2,750 एआई बेस्ड सीसीटीवी एवं 80 वीएमडी टीवी स्क्रीन
- 3 जल पुलिस स्टेशन, 18 जल पुलिस कंट्रोल रूम, 50 फायर स्टेशन
- 50 फायर स्टेशन, 20 फायर पोस्ट, 50 वॉच टावर, 4,300 फायर हाइड्रेंट

प्रमुख आकर्षण

• श्रद्धालुओं-पर्यटकों की मदद के लिए ट्रैवल गाइड • मार्गदर्शन के लिए कुम्भ सहायक AI चैटबॉट • मानसिक शांति के लिए बर्ड साउंड थेरेपी • देशभर के हस्तशिल्पियों/कारीगरों का संगम • संगम में श्रद्धालुओं को बोट राइड की सुविधा • वेदों-पुराणों की कथा का बखान करते चौराहे • सांस्कृतिक मंचों पर गायन/वादन/नृत्य प्रस्तुतियां • प्रत्येक दिशा में वाहन पार्किंग की उत्तम व्यवस्था • प्रत्येक पॉइंट पर ट्रैफिक पुलिस की तैनाती • हाईवे के थानों पर भी चिकित्सा सुविधा

आकस्मिक सेवाएं | आवास एवं आहार | मेला प्रशासन | यूपी की उपलब्धियां

कुम्भ सहायक चैटबॉट हेतु QR कोड स्कैन करें

कुम्भ सहायक
वाट्सऐप नं. 8887847135
पर 'नमस्ते' भेजें

लखनऊ जंक्शन
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष-03 अंक-02 जनवरी-2025

संपादक
अंजू सिंह
सहायक संपादक
मनोज गौतम
राजनीतिक संपादक
अनुराग पाण्डेय
सलाहकार संपादक
सुभाष चंद्र श्रीवास्तव
प्रवीण पाठक **दिल्ली ब्यूरो**
अनिल द्विवेदी **यूपी ब्यूरो**
मीनू कुमारी **उत्तराखण्ड ब्यूरो**
लखनऊ संवाददाता
राकेश कुमार मिश्र
अरविन्द कुमार
राजेश जोशी
विशेष संवाददाता (यूपी)
तारिक खान
विशेष संवाददाता (दिल्ली)
संदीप सिंह
विधि परामर्शदाता
महेन्द्र सिंह
मार्केटिंग मैनेजर
मोहन जोशी
ग्राफिक डिजाइन
सुमित साहू
9569607491

एम.आई.जी. 47, सेक्टर ई, अलीगंज, लखनऊ (उ0प्र0)-226024
E-mail-lkojunction@gmail.com
दूरभाष- 7376547600, 0522-4232552

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक धर्मेन्द्र सिंह द्वारा नीलम प्रिंटिंग प्रेस 41 / 381, नरही, लखनऊ (उ0प्र0) से मुदित एवं एम.आई.जी. 47, सेक्टर ई, अलीगंज, लखनऊ (उ0प्र0)-226024 से प्रकाशित

RNI No. UPHIN/2022/84386

इस अंक में प्रकाशित सामग्री के आंशिक या पूर्ण रुप से पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। लेखक के विचार व्यक्तिगत हैं। किसी भी प्रकार के विवाद के समाधान के लिए न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा।

इस अंक में

10

तीर्थानामुत्तमं तीर्थं प्रयागाख्यमनुत्तमम्

14

CM YUVA योजना के तहत प्रदेश के युवाओं के सपनों को पंख दे रहा UPICON

18

बांग्लादेश, पाकिस्तान और चीन का बनता त्रिकोण नई दिल्ली को सतर्क

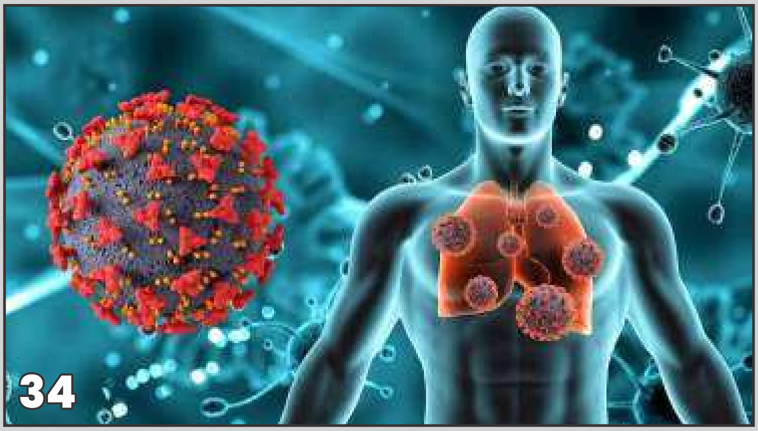

34

ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस फिर से चिंता में डूबी दुनिया

सड़क हादसे रोकने के लिए मुख्यमंत्री हुए सख्त

कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि हम सब की जिंदगी में सड़क हादसे एक बहुत बड़ी त्रासदी साबित हो रहे हैं। और यह अकारण नहीं है क्योंकि देश में सड़क हादसों से होने वाली मौतों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आंकड़ों के अनुसार देश में पिछले एक दशक में सड़क हादसों में करीब 15 लाख से अधिक लोगों ने अपनी जान गंवाई है। जबकि उत्तर प्रदेश का आंकडा यह कहता है कि सड़क हादसों में हर साल 23 से 25 हजार मौतेंं होती है। आम तौर से सड़क हादसों में अधिकांश ऐसे ही लोग अपनी जान गंवाते हैं, जो आर्थिक रूप से परिवार की मुख्य धुरी होते हैं, यानि समूचा परिवार उन्ही के ऊपर निर्भर होता है। जिसका स्याह पक्ष यह होता है कि ऐसा होने पर संबंधित परिवार आर्थिक चुनौतियों के जाल में उलझ कर रह जाता है, तो वहीं दूसरी ओर एक उत्पादक व्यक्ति के न रहने से देश और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को कहीं न कहीं नुकसान उठाना पड़ता है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता है कि बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं के तमाम कारण होते हैं-जैसे यातायात नियमों का उल्लघंन, आपातकालीन चिकित्सा सुविधों का पर्याप्त न होना, कानून प्रवर्तन की समस्या, ट्रैफिक इंजीनियरिंग, निगरानी के लिए बुनियादी ढाचे का आभाव व इसके अतिरिक्त ड्राइविंग स्कूलों की कमी। आंकड़ों के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली 80 प्रतिशत से अधिक मौतों के लिए चालक सीधे तौर पर जिम्मेदार होते हैं। यह उपरोक्त आंकड़ा इस बात की तस्दीक करता है कि देश में अच्छे और पेशेवर स्कूलों की कमी बड़ी कमी है।

बहरहाल, इन्हीं सब आंकड़ों, हादसों और उससे जुड़ी चिंताओं के बीच उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों में कमी लाने के लिए अपनी ओर से एक सरहानीय पहल की है। खबरों के मुताबिक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के यातायात विभाग को जागरुकता अभियान चलने के साथ ही यातायात नियमों का पालन न करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्त कार्रवाही करने के निर्देश दिए है। यही कारण है कि मुख्यमंत्री से मिले निर्देशां के बाद प्रदेश के यातायात विभाग ने इस मामले में सख्ती करने की दिशा में अपनी शुरुआत कर दी है। जिसके बाद प्रदेश के यातायात विभाग ने इससे संबिंधत एक विस्तृत कार्ययोजना को अंतिम रुप देकर सभी पुलिस कमिश्नरों से लेकर जिलों के वरिश्ठ पुलिस अधीक्षकों को भेज दिया है। जिसके तहत अब इसी महीने से सीटबेल्ट और हेलमेट न पहने वाले वाहन चालकों का चालान किया जाएगा। वहीं इसके अतिरिक्त शराब पीकर व तेज गति तेज गति से वाहन चलाने वाले और नाबालिग वाहन चालकों के खिलाफ भी कार्रवाही की जाएगी। तो वहीं दूसरी ओर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वाहनों द्वारा की जा रही ओवर लोडिंग पर अपनी नाराजगी का इजहार करते हुए कहा है कि इसे किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ओवर लोडिंग करने वाले भारी वाहनों को जिलों की सीमा पर ही रोके और एक्सप्रेस वे पर ओवर लोडिंग वाले जो वाहन खड़े रहते हैं उन्हेंं क्रेन से हटवाएं। मालूम हो कि ओवर लोडिंग वाले वाहन चाहे वे सड़क पर गमन कर रहे हो या एक्सप्रेस वे पर कहीं किनारे खड़े हो आमतौर पर सड़क हादसों का बड़ा कारण बनते है। उम्मीद की जाती है कि सड़क हादसे रोकने के संबंध में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जो सख्ती दिखाई है, तो उसके परिणाम बेहतर देखने को मिलेंगे, लेकिन वहीं इसके लिए जरुरी यह भी है कि इस मामले मे आम जनता भी जागरुक होकर सड़क नियमों का पालन कर अपने एक जिम्मेदार नागरिक होने का परिचय दे।

अंजू सिंह

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

सनातन आस्था का प्रतीक है

प्रयाग कुम्भ

कृष्ण कुमार यादव

भारत के ऐतिहासिक मानचित्र पर प्रयागराज एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है, जिसकी रोशनी कभी भी धूमिल नहीं हो सकती। इस नगर ने युगों की करवट देखी है, बदलते हुये इतिहास के उत्थान-पतन को देखा है, राष्ट्र की सामाजिक व सांस्कृतिक गरिमा का यह गवाह रहा है तो राजनैतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र भी। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस नगर का नाम 'प्रयाग' है। ऐसी मान्यता है कि चार वेदों की प्राप्ति पश्चात ब्रह्म ने यहीं पर यज्ञ किया था, सो सृष्टि की प्रथम यज्ञ स्थली होने के कारण इसे प्रयाग कहा गया। प्रयाग माने प्रथम यज्ञ। कालांतर में मुगल सम्राट अकबर इस नगर की धार्मिक और सांस्कृतिक ऐतिहासिकता से काफी प्रभावित हुआ। उसने भी इस नगरी को ईश्वर या अल्लाह का स्थान कहा और इसका नामकरण 'इलहवास' किया अर्थात जहाँ पर अल्लाह का वास है। परन्तु इस सम्बन्ध में एक मान्यता और भी है कि इला नामक एक धार्मिक सम्राट, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर (अब झूंसी) थी के वास के कारण इस जगह का नाम 'इलावास' पड़ा। कालान्तर में अंग्रेजों ने इसका उच्चारण 'इलाहाबाद' कर दिया। फ़िलहाल, अतीत की गौरवशाली परंपरानुसार इस नगरी का नाम पुनः प्रयागराज हो गया है।

प्रयागराज एक अत्यन्त पवित्र नगर है, जिसकी पवित्रता गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम के कारण है। वेद से लेकर पुराण तक और संस्कृत कवियों से लेकर लोकसाहित्य के रचनाकारों तक ने इस संगम की महिमा का गान किया है। प्रयागराज को संगमनगरी, कुम्भनगरी और तीर्थराज भी कहा गया है। प्रयागशताध्यायी के अनुसार काशी, मथुरा, अयोध्या इत्यादि सप्तपुरियाँ तीर्थराज प्रयाग की पटरानियाँ हैं, जिनमें काशी को प्रधान पटरानी का दर्जा प्राप्त है। तीर्थराज प्रयाग की विशालता व पवित्रता के सम्बन्ध में सनातन धर्म में मान्यता है कि एक बार देवताओं ने सप्तद्वीप, सप्तसमुद्र, सप्तकुलपर्वत, सप्तपुरियाँ, सभी तीर्थ और समस्त नदियाँ तराजू के एक पलड़े पर रखीं, दूसरी ओर मात्र तीर्थराज प्रयाग को रखा, फिर भी प्रयागराज ही भारी रहे। वस्तुतः गोमुख से प्रयागराज तक जहाँ कहीं भी कोई नदी गंगा से मिली है उस स्थान को प्रयाग कहा गया है, जैसे-देवप्रयाग, कर्ण प्रयाग, रुद्रप्रयाग आदि। केवल उस स्थान पर जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है प्रयागराज कहा गया। प्रयागराज के बारे में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-"को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ, कलुष-पुंज कुंजर मृगराऊ। सकल काम प्रद तीरथराऊ, बेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ।।" इसी प्रयाग की धरा पर हर बारह वर्ष पर कुंभ पर्व का भव्य आयोजन होता है।

कुम्भ पर्व सनातन आस्था का प्रतीक है। कुंभ-पर्व का वेदों में

उल्लेख मिलने से इसकी प्राचीनता का पता चलता है। ऋग्वेद (10-89-7), शुक्लयजुर्वेद (19-87), अथर्ववेद (4-34-7, 16-6-8 एवं 19-53-3) की ऋचाएं कुंभ पर्व पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं। कुम्भ पर्व हरिद्वार (गंगा तट), उज्जैन (क्षिप्रा तट) तथा नासिक (गोदावरी तट) में भी लगता है परन्तु प्रयाग कुम्भ की महत्ता इसलिए भी बढ़ जाती है कि लोगों को यहाँ तीन पवित्र नदियों के संगम में स्नान करने का सुअवसर प्राप्त होता है। प्रयाग में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर प्रत्येक बारह वर्ष के अन्तराल पर यह विश्व प्रसिद्ध पर्व मकर संक्राति से लेकर महाशिवरात्रि तक चलता है, जिसमें देश-विदेश से करोड़ों नर-नारी असीम श्रद्धा के साथ पतित-पावनी त्रिवेणी में स्नान कर न केवल अपने पापों एवं कष्टों को धोते हैं, बल्कि ऐसी मान्यता है कि इसके साथ ही विद्वानों के मुखार बिन्दु से अविरल बह रही गंगा में गोता लगाकर अपने जन्म-जन्मान्तर के पापों को भी नष्ट करते हैं। बीतरागियों, साधु-महात्माओं, संन्यासियों, मठाधीशों और शंकराचार्यों की मौजूदगी मेले को गरिमा देती है। महामंडलेश्वरों, संत-महात्माओं के अतिरिक्त अनेक कथावाचकों, मनीषियों के शिवरों में कथा, कीर्तन, प्रवचन आदि के कार्यक्रम होते हैं, कई शिविरों में रामलीलाएं भी होती हैं। कुंभ की भव्यता और मनमोहकता से आकृष्ट हो हजारों विदेशी पर्यटक इस अवसर पर विशेष रुप से आते हैं और कई तो सदा-सदा के लिए यहाँ की आध्यात्मिक रजकणों से अभिभूत हो अपनी भौतिक सम्पन्नता को त्याग कर भक्ति में लीन हो जाते हैं।

सामान्यतः कुम्भ का अर्थ 'घड़े' से होता है परन्तु इसका तात्विक अर्थ कुछ और ही है। कुंभ हमारी संस्कृतियों का संगम है। कुंभ एक आध्यात्मिक चेतना, मानवता का प्रवाह एवं शाश्वत जीवन धारा है। भारतीय दर्शन में नदियाँ जल का प्रवाह मात्र नहीं हैं वरन् ये महा चैतन्य रुपी परमात्मा का शाश्वत प्रवाह है। उनका स्वरुप लोक माताओं के रूप में पूज्यनीय माना गया है। भारतीय संस्कृति में गंगा नदी का प्रमुख स्थान है, जिसके तट पर प्रयाग में कुंभ का आयोजन होता है। वस्तुतः गंगा एक जीवन धारा है। ज्ञान वैराग्य और भक्ति का अमृत संगम में छिपा है जिसमें डुबकी लगाने से इंसान को जीते जी मोक्ष की प्राप्ति होती है। तभी तो कहा गया है-"गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः।"

शास्त्रों में कुंभ पर्व की महिमा का गुण-गान करते हुए इसके स्नान को समस्त पापों का नाशक एवं अनंत पुण्यदायक बताया गया है। स्कंद पुराण में वर्णित है-

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुंभस्नानेन तत्फलम्।।

अर्थात एक हजार बार कार्तिक मास में गंगा में स्नान करने से, सौ बार माघ में संगम-स्नान करने से, वैशाख में एक करोड़ बार नर्मदा-स्नान करने से जो पुण्यफल अर्जित होता है, वह कुंभ में केवल एक बार स्नान करने से प्राप्त होता है। विष्णु पुराण में भी कुंभ-स्नान की प्रशंसा में कहा गया है-

अश्वमेधसहस्त्राणि वाजयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुंभस्नानेन तत्फलम।।

अर्थात् हजार बार अश्वमेध-यज्ञ करने से, सौ बार वाजपेय-यज्ञ करने से

और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जितनी पुण्यराशि संचित होती है, उतनी कुंभ में एक बार स्नान करने से प्राप्त होती है।

कुम्भ का यदि हम ऐतिहासिक दृष्टि से विश्लेषण करें तो हमें सनातन काल से मिलता है। सनातन आदि और अनादि है। इसी में समष्टि का बोध निहित है। इसी में हिन्दू संस्कृति, इसी में विश्व की संस्कृति एवं सभ्यताओं का संगम निहित है। यही कारण है कि विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में भी कुम्भ का उल्लेख एवं आकार हमें प्राप्त होता है। इतना विशाल पर्व एक दिन में तो होने नहीं लगता, शनैः-शनैः वह महान स्वरूप लेता है। कुछ ऐसा ही कुम्भ पर्व के बारे में हुआ होगा। 644 ईसवी में सम्राट हर्षवर्धन के कार्य काल में प्रयाग का यह महापर्व सर्वाधिक प्रकाश में आया, ऐसी मान्यता है। चीनी यात्री व्हेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत का जिस प्रकार से उल्लेख किया है, उससे स्पष्ट है कि उस समय कुम्भ अथवा अर्द्धकुम्भ का ही समय रहा होगा। हर्षवर्धन द्वारा गंगा स्नान करके अपना सर्वस्व दान कर बहन राजश्री से वस्त्र मांग कर पहनने आदि जैसे वृतांत प्रयाग के कुम्भ अथवा अर्द्धकुम्भ की ओर संकेत करते हैं। नवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा दसनामी अखाड़ों का गठन करने, कुम्भ, अर्द्धकुम्भ पर्वों की नींव डालने की बात भी उभर कर सामने आती है। आज भी अखाड़ों की मौजूदगी कुंभ को विशिष्टता प्रदान करती है। अखाड़े कुंभ मेले के सिरमौर माने जाते हैं। मेले में विभिन्न अखाड़ों के साधु, संत, महंत रेती पर धूनी रमाते हैं और वसंत पंचमी के शाही स्नानपर्व के बाद अखाड़ां के साथ ही श्रद्धालु भी विदा लेते हैं।

प्रयाग में संगम की रेती पर लगने वाला कुंभ मेला अनेक मायनों में अद्भुत और अतुलनीय है। इस पर बसने वाली तंबुओं की नगरी में देश और दुनिया से अनेक मत-मतांतर, भाषा-भाषी, रीति-रिवाज, संस्कार प्रथा-परंपरा के श्रद्धालु पुण्य और मोक्ष की कामना से जुटते और संगम में डुबकी लगाते हैं। कुम्भ पर्व अमृत स्नान और अमृतपान की कामना की बेला है। इस समय गंगा की धारा में अमृत का सतत् प्रवाह होता है। कुम्भ पर्व की मूल चेतना पुराणों में वर्णित है। यह पर्व क्षीरसागर के मंथनोपरांत प्राप्त हुए अमृत कुंभ के लिए हुए देवासुर संग्राम से जुड़ा है। समुद्र मंथन से प्राप्त 14 रत्नों में सबसे अन्त में आयुवर्धिनी शक्ति वाले अमृत कुंभ को लेकर, आयुर्वेद के अधिष्ठाता भगवान धनवंतरि स्वयं प्रकट हुए। अमृतकुम्भ पाने की होड़ ने देव-दानव युद्ध का रूप ले लिया। देवताओं ने दैत्यों से छिपाने के लिए देवराज इन्द्र के पुत्र जंयत को अमृत

कुंभ की रक्षा का दायित्व सांपा। इस दायित्व को पूरा करने में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनि भी सहायोगी बने। दैत्यों ने अमृत कुंभ को पाने के लिए तीनों लोकों में जयंत का पीछा किया। यह युद्ध 12 दिनों तक चला। देवताओं का एक दिन मानवों के एक वर्ष के बराबर माना जाता है। इस दौरान 'अमृत कुंभ' की रक्षा के क्रम में विश्राम के दौरान अमृत की बूंदें बारह स्थानों पर गिरीं । इन बारह स्थलों में से आठ पवित्र स्थान देवलोक में हैं और चार (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पृथ्वी पर हैं। ये चार स्थान ही अमृत की बूंदों के कारण कुंभ क्षेत्र बने। चूँकि इस अमृत कलश की रक्षा में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनि सहयोगी की भूमिका में थे, अतः कुंभ पर्व के दौरान उन्हीं स्थानों पर इनका दुर्लभ संयोग पड़ने पर कुम्भ पर्व मनाया जाता है। विष्णु याग के अनुसार -

माघे मेषगते जीवे, मकरे चन्द्रीभास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भख्यस्तीर्थ नायके।।

अर्थात् माघ में वृहस्पति के मेष में होने तथा सूर्य और चन्द्रमा के मकर में होने पर अमावस्या को प्रयाग में कुंभ पर्व होता है।

मकर संक्रान्ति से लेकर वैशाख पूर्णिमा तक चलने वाले प्रयाग कुंभ पर्व में कुछ खास स्नान पर्व होते हैं और तीन शाही स्नान पर्व होते हैं- मकर संक्राति (प्रथम शाही स्नान), पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या (द्वितीय शाही स्नान), वसंत पंचमी (तृतीय शाही स्नान), माघ पूर्णिमा, महाशिवरात्रि। विभिन्न अखाड़ों के साधु-संत कुम्भ स्थल में एकत्र होते हैं और प्रमुख स्नान पर्व पर वे एक शानदार शोभा यात्रा निकालते हुए पारम्परिक अनुशासन में बँधकर स्नान हेतु स्नान स्थल पर जाते हैं। इन अखाड़ों के प्रमुख महंतों की सवारी सोने-चाँदी तथा अन्य सजावट से सजे हाथी, भव्य रथों और पालकियों पर निकलती है, जिनके आगे-पीछे आकर्षक सज्जा से आच्छादित ऊँट, घोड़े, हाथी और बैंड भी होते हैं। इन्हें देखकर पुराने जमाने के राजा-महाराजाओं के काफिले का अक्स उभरकर सामने आता है।

कुंभ प्रयाग ही नहीं बल्कि संगम की रेती पर लगने वाला विश्व का सबसे बड़ा स्वतः स्फूर्त आयोजन है। कुंभ सिर्फ मानवीय आयोजन नहीं बल्कि एक दैवीय और आध्यात्मिक महोत्सव है। वाकई, मीलों लंबे चौड़े क्षेत्र में कुंभ पर्व के दौरान जो वातावरण व्याप्त रहता है, वह महीनों और वर्षों में ढले स्वभाव को भी सहज ही बदलने में समर्थ है। यह भी इस अवसर को महत्वपूर्ण बनाता है। कुंभ ऐसा पर्व है जहाँ मानव का देव से सीधे साक्षात्कार होता है, शारीरिक-मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिलती है। ग्रह-नक्षत्रों के सहयोग तथा गंगा और संतां पर उमड़ने वाली आस्था कुंभ रुपी सृष्टि जीवनदायी अमृत का बोध कराती है। न कोई दिखावा न आडंबर। अलग भाषा, अलग संस्कृति और अलग पहनावे के बावजूद कुंभ के समागम में सिमटती भावनाएं एक सी दिखती हैं। अनेकता में एकता का उदाहरण लिए प्रयाग कुंभ वाकई 'लघु भारत' का एहसास कराता है। ●●●

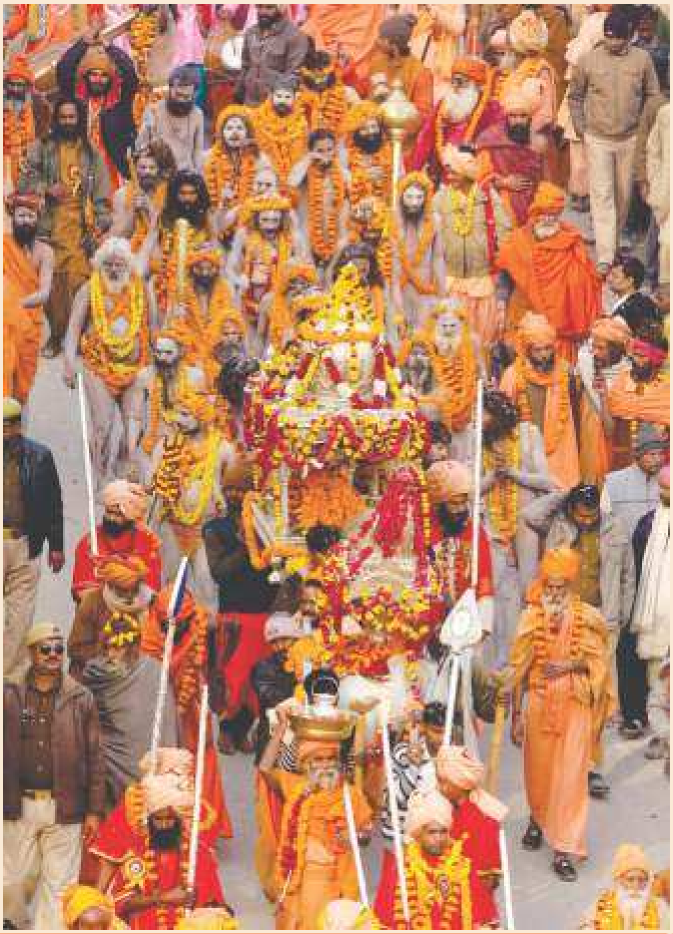

तीर्थनामुत्तमं तीर्थं प्रयागाख्यमनुत्तमम्

डा0 आकांक्षा दीक्षित

भारतीय मनीषियों ने पुरुषार्थ चतुष्टय के माध्यम से यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम का सम्यक पालन कर मोक्ष की ओर प्रवृत्त हो सके। इसके लिये विभिन्न साधनों का प्रणयन किया गया, जिससे सामान्य जीवन जी रहा मनुष्य भी सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त कर सके। ऐसा विश्वास है कि सात्विक विचार, कार्य, व्यवहार, संस्कार और वृत्तियों वाले व्यक्ति को ही आत्म साक्षात्कार हो सकता है। आत्म साक्षात्कार हो जाने पर सिद्धियों और निधियों की प्राप्ति सहज हो जाती है और तभी मोक्ष का द्वार भी प्रशस्त होता है। प्रत्येक वर्ष माघ मास में प्रयाग में संगम तट पर एक अद्भुत दृश्य सजीव हो उठता है। भीषण शीत में तीर्थराज प्रयाग में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के तट पर कल्पवास नामक साधना की परंपरा आदिकाल से अविच्छिन्न रुप से चली आ रही है।

ऐसी मान्यता है कि प्रयाग में सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने के साथ शुरु होने वाले, एक मास के कल्पवास से एक कल्प अर्थात ब्रह्मा के एक दिन का पुण्य मिलता है। पौष पूर्णिमा के स्नान के साथ कल्पवास का आरंभ हो जाता है। कल्पवास के प्रारंभ के प्रथम दिन तुलसी और शालिग्राम की स्थापना और पूजन होती है।कल्पवासी अपने टेंट के बाहर जौ का बीज रोपित करता है। कल्पवास की समाप्ति पर इस पौधे को कल्पवासी अपने साथ ले जाते है और तुलसी जी को गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है। कल्पवासी न्यूनतम साधनों में तम्बू में रहकर एक समय का भोजन करते हैं, भूमि पर शयन करते हैं तथा भगवत भजन करते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि बहुत से विदेशी भी भारतीय संस्कृति की आत्मनियंत्रण की इस साधना में अपने भारतीय गुरुजनों के सानिध्य में कल्पवास करते हैं। हमें भी अनेक बार यह सुयोग प्राप्त हुआ है। सांसारिक और पदीय दायित्वों के निर्वहन के साथ पूरे माह का नहीं पर मात्र दो दिन के कल्पवास का अनुभव ऊर्जस्वित करने वाला होता है। गंगा की रेती में स्वनिर्मित चूल्हे पर पकी खिचड़ी भी छप्पन भोग सा आनंद देती है।

यह वस्तुतः आध्यात्मिक प्रगति, स्वनियंत्रण और आत्मशुद्धि की एक साधना है जो प्रतिरोधक क्षमता का विकास भी करती है। तीर्थ राज प्रयाग का अपना विशिष्ट महत्व है। रामचरितमानस में गोस्वामी जी कहते हैं

'कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ।।
अस तीरथपति देखि सुहावा।
सुख सागर रघुबर सुखु पावा।।'

अर्थात प्रयागराज की महिमा कौन कह सकता है भला ? यदि पाप रुपी मदमस्त हाथियों का समूह, सब कुछ नष्ट करने पर तुला हो, तो सिंह रुपी तीर्थराज प्रयाग उनका वध कर सकता है। ऐसे तीर्थराज का दर्शन कर स्वयं प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ने भी सुख पाया। प्रयागराज के पुण्यक्षेत्र में आदिकाल से व्यवहृत इस परंपरा के महत्व की चर्चा वेदों से लेकर महाभारत और रामचरितमानस में भिन्न-भिन्न रूपों में मिलती है। समय के साथ कल्पवास में कुछ परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं, परन्तु श्रद्धालुओं का उत्साह और आनंद किंचित मात्र भी कम नहीं हुआ है। एक सुखद

परिवर्तन यह भी हुआ है कि बुजुर्गों के साथ कल्पवास में मदद करते-करते कई युवा खुद भी कल्पवास करने लगे हैं। कल्पवास की अवधि एक दिन से लेकर आजीवन हो सकती है। अनेक लोग इसे बारह वर्षों तक करने का संकल्प भी करते हैं। कल्पवास के लिए वैसे तो आयु की कोई बाध्यता नहीं है, परंतु माना जाता है कि सांसारिक मोह-माया से मुक्त और दायित्वों को पूर्ण कर चुके व्यक्ति को ही कल्पवास करना चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि दायित्वों से बंधे व्यक्ति के लिए आत्मनियंत्रण कठिन माना जाता है। कल्पवास के साथ धार्मिक दृष्टि से माघ मास का बहुत अधिक महत्व है। इस मास में शीतल जल के भीतर डुबकी लगाने वाले मनुष्य पापमुक्त हो स्वर्गलोक में जाते हैं,

'माघे निमग्नाः सलिले सुशीते विमुक्तपापास्त्रिदिवं प्रयान्ति।'
ऐसी मान्यता है कि भगवान विष्णु की आराधना के साथ जग को आलोकित करने वाले भगवान भुवन भास्कर को यह मंत्र उच्चारित करते हुये अर्घ्य अवश्य प्रदान करना चाहिए,

'भास्कराय विद्महे । महद्द्युतिकराय धीमहि ।
तन्नो आदित्य प्रचोदयात ॥'

तात्पर्य यह है कि तेज के भंडार सूर्य को हम जानते हैं। अत्यंत तेजस्वी और सभी को प्रकाशमान करनेवाले सूर्य का हम ध्यान करते हैं। वह आदित्य हमारी बुद्धि को सत्प्रेरणा दे। प्राकृतिक शक्तियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना हमें विनीत और सरल बनाता है। यही संदेश इन मान्यताओं में निहितार्थ है। माघ मास में दान देने का अत्यधिक महत्त्व है। साधन सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा निर्धनों को जीवनोपयोगी वस्तुओं का दान का उद्देश्य सामाजिक समरसता को बढ़ाना ही है। दान को ईश्वर को अर्पित करते हुये 'माधवः प्रीयताम्' कहकर अर्थात भगवान विष्णु की प्रीति और कृपा हेतु दान करता हूं।' ऐसे संकल्प के साथ दान करना चाहिये। प्रयागराज को छोड़कर दुनिया में ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहां प्रत्येक वर्ष सांस्कृतिक और आध्यात्मिक माघ मेला बसाया जाता हो। कुंभ और अर्द्ध कुंभ तो हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में लगता है, लेकिन माघ मेले का आयोजन वहां नहीं होता।आदिकाल से पुराणों एवं शास्त्रों के अनेक विवरणों में प्रयाग की महिमा किसी न किसी रूप में उपस्थित रही है। प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक गौरव गाथा में प्रयाग विभिन्न ऋषि-मुनियों, देवी-देवताओं, महात्माओं के केन्द्र में रहा है। मनुस्मृति, महर्षि वाल्मीकि कृत रमायण, वेदव्यास कृत महाभारत, पद्म पुराण, कूर्म पुराण, अग्नि पुराण, गरुण पुराण, मत्स्य पुराण, शताध्यायी के अतिरिक्त अनेक प्राचीन ग्रन्थों में इसकी उत्कृष्टता को वर्णित किया गया है।

भारतीय दर्शन अद्भुत है। वाणी के द्वारा या बोलने से भी ऊर्जा का क्षय होता है। अपनी आध्यात्मिक उन्नति, आत्मिक शान्ति और मानसिक शक्ति के परिवर्धन हेतु प्राचीन काल से ही भारत में मौन साधना को अत्यधिक महत्व दिया गया है। हमारे मनीषियों ने प्रत्येक साधना को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि ये हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग बन गये। माघ मास को अत्यंत पवित्र माना जाता है। इस माह बहुत से पर्व मनाये जाते हैं, इसलिये इसका अत्यधिक धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। इसी माह में पौष माह में रुके हुये मांगलिक कार्य पुनः आरंभ होते हैं। संकष्टी चतुर्थी के रूप में विघ्नायक का आह्वान किया जाता है। षटतिला एकादशी को दान आदि का विशेष महत्व है। इसी माह की अमावस्या मौनी अमावस्या के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन मौन रहकर स्नान करने का विशेष महात्म्य है। मौन साधना व्यक्ति को आंतरिक रूप से दृढ़संकल्पित करने में भी सहायक है। श्रीकृष्ण जी श्रीमद्भगवद्गीता में कहते है कि

'मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।। '

अर्थात मन की प्रसन्नता, सौम्य भाव, मनन शीलता, मन का निग्रह और भावोंकी शुद्धि -- इस तरह यह मन-सम्बन्धी तप कहा जाता है। वस्तुतः मौन रहने का अर्थ है स्वयं से साक्षात्कार करना। विश्व के सभी तत्वज्ञानी मौन के साधक रहे हैं। आचार्य विनोबा भावे का कहना था कि 'मौन और एकांत आत्मा के सर्वोपरि मित्र हैं।'
सामान्यतः साधारण व्यक्ति के लिये मौन का पालन करना व्यवहारिक रुप से संभव नहीं हो पाता, संभवतः इसीलिये मौनी अमावस्या जैसे पर्व की संकल्पना की गयी। पवित्र माघ मास के एक दिन सामान्य जन भी मौन साधना का अनुभव कर सके। उस समय में जीवन के झंझावातों से मुक्त हो स्वयं से मिल सके। प्रयास यह करना चाहिये कि यथासंभव चित्त को शान्त रखें। मौन

रहने से हमारी वाणी की शक्ति का संचय होता है। मौन हमारे जीवन के अनुत्तरित प्रश्नों का उत्तर देता है।

बडीं प्रसिद्ध कथा है कि जब महर्षि वेदव्यास ने सिद्धिविनायक गणेशजी से 'महाभारत' जैसे ग्रन्थ के लेखक का कार्य करने को कहा तो उन्होनें यहीं शर्त रखी कि वे मौन रहकर ही यह कार्य करेंगे और व्यास जी जैसे ही मौन होंगे वे लेखन बंद कर देंगे। तब व्यास जी ने भी अनुरोध पूर्वक एक उपबंध रखा कि गणपति जी बिना समझे किसी श्लोक को नहीं लिखेंगे। कार्य सम्पन्न होने के पश्चात गणेश जी ने कहा, 'यदि मैं मौन ना रहता तो आप अपना ध्यान केन्द्रित ना कर पाते।' सत्य भी है सार्थक कार्य करने के लिये ध्यान का एक दिशा में केन्द्रित होना परमावश्यक है और मौन इसमें सहायक है। साधारणतया मौन का अर्थ होठों के ना चलने से लगाया जाता है किन्तु यह अत्यंत सीमित अर्थ है। कबीरदास जी इसी को इंगित कर कहते है कि

'कबीरा यह गत अटपटी, चटपट लखि न जाए।
जब मन की खटपट मिटे, अधर भया ठहराय।'

तात्पर्य यह है कि मौन तभी सफल है जब मन में भी शान्ति हो। मन मे भावनाओं का हाहाकार मचा हो तो मौन साधना हो ही नहीं सकती। यह मन को साधने की एक छोटी सी युक्ति है जो सभी सरलता से कर सकते हैं। कविवर रामधारी सिंह दिनकर जी ने एक पंक्ति में सार कह दिया है कि 'वाणी का वर्चस्व रजत है किन्तु मौन कंचन है।'

मौन साधना से क्रोध पर नियंत्रण दमन, वाणी पर संयम के साथ संकल्प बल एवं आत्मबल में वृद्धि, मानसिक शांति मिलती है जिससे आंतरिक शक्तियों का विकास होता है। मौन से वाणी शुद्ध और नियंत्रित होती है व यह हमारे मनन की शक्ति को विकसित करता है, इसलिए हमारे शास्त्रों में मौन का विधान बताया गया है। ऋषि-मुनि और चिंतक मौन रहकर अपनी मानसिक शक्तियों को केन्द्रित करते हैं, तो पूजा-अनुष्ठानों में मौन रहकर कार्य किया जाता है। मनोविज्ञानी भी एकाग्रता,स्मरण शक्ति बढ़ाने,मन को मजबूत बनाने एवं सकारात्मक सोच के लिए मौन रखने का परामर्श देते हैं। माघ मास में यह अवसर सभी के पास होता है कि वो अपने जीवन की आपाधापी से कुछ क्षण अपने लिये लेकर अपनी कायिक, मानसिक और आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करें। इसीलिये मौनी अमावस्या के पवित्र दिन मौन धारण करने, गंगा जी जैसी पवित्र नदियों तथा त्रिवेणी पर स्नान करने तथा साधु-महात्माओं को ऊनी वस्त्र, तिल, आंवला आदि का दान करने का विशेष महत्व है। वर्तमान युग में हम सबको अपनी धार्मिक मान्यताओं के पीछे के महत्व को समझकर अपनी उन्नति के लिये उनका प्रयोग करना ही चाहिये ।

इस बार प्रयाग में महाकुंभ का अवसर भी है। जिसकी प्राचीनता पौराणिक कालीन है। कुंभ मेले को 2017 में यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया गया था। पृथ्वी पर सबसे बड़ा शांतिपूर्ण मानव समागम माने जाने वाले कुंभ में तीर्थयात्री, जन्म और मृत्यु के अनंत चक्र से मुक्ति मिलने के विश्वास के साथ पवित्र नदियों- गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम में स्नान करते हैं। कुंभ मेला परंपरा का विश्व भर में रहने वाले करोड़ों हिंदुओं के जीवन में आध्यात्मिक, सामाजिक और

सांस्कृतिक महत्व है। पौराणिक मान्यतानुसार अमृत प्राप्ति हेतु देवों और असुरों द्वारा किए गए समुद्र मंथन से अंतिम रत्न के रुप में अमृत की प्राप्ति हुई थी। इसे सुरक्षित रखने और असुरों से दूर रखने के लिए भगवान विष्णु अमृत का कुंभ (घड़ा) ले जा रहे थे तभी उसको लेने और छीनने के प्रयास में अमृत की चार बूंदें गिर गईं। अमृत की ये बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन के चार तीर्थों पर धरती पर गिरीं। इन्हीं स्थानों पर विशेष ग्रहस्थिति में कुंभ का आयोजन किया जाता है। गोस्वामी जी ने रामचरित मानस में लिखा है

"भरद्वाज मुनि बसहि प्रयागा, तिनहिं रामपद अति अनुरागा।
तापस समदम दयानिधाना परमारथ पथ परम सुजाना।
माघ मकरगति रवि जब होई, तीरथपतिहिं आव सब कोई।
देव दनुज किन्नर नर श्रेनी, सादर मज्जहि सकल त्रिवेनी।"

इस प्रकार से वृष के गुरु में प्रयागराज, कुंभ के गुरु में हरिद्वार, तुला के गुरु में उज्जैन और कर्क के गुरु में नासिक का कुंभ होता है। सूर्य की स्थिति के अनुसार कुंभ पर्व की तिथियां निश्चित होती हैं। मगर शुरु में प्रयागराज, मेष के सूर्य में हरिद्वार, तुला के सूर्य में उज्जैन और कर्क के सूर्य में नासिक का कुंभ पर्व पड़ता है। अथर्व वेद के अनुसार मनुष्य को सर्व सुख देने वाला पर्व कुंभ है। कुंभ में स्नान पर्व का भी अपना महत्व होता है। संक्रांति के पूर्व और बाद की 16 घड़ियों में पुण्यकाल माना गया है। मुहूर्त तिथि आधी रात से पहले हो तो पहले दिन तीसरे पहर में पुण्यकाल बताया गया है और यदि मुहूर्त तिथि आधी रात के बाद हो तो पुण्यकाल प्रातः काल माना जाता है। प्रयागराज में कुल छह कुंभ स्नान पर्व होते हैं। मकर संक्रांति, पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या, माघी पूर्णिमा, बसंत पंचमी, महाशिवरात्रि प्रयागराज कुंभ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्व है।

ऐतिहासिक तथ्य है कि इस कुम्भ मेले को वर्तमान स्वरुप महाराज हर्षवर्धन के समय में मिला। 606 ई0 में सिंहासनारुढ़ हुए उत्तरापथ के सम्राट हर्षवर्धन ने प्रयागराज में अनेक दान किए थे। वह पहले भगवान सूर्य, शिव और बुध की पूजा करते थे, उसके बाद ब्राह्मण, आचार्य, दीन, बौद्ध भिक्षु को दान देते थे। इस दान के क्रम में वह लाए हुए अपने खजाने की सारी चीजें दान कर देते थे। वह अपने राजसी वस्त्र भी दान कर देते थे, फिर वह अपनी बहन राजश्री से कपड़े मांग कर पहनते थे। ईसा के बाद की छठीं सदी में भारत के दौरे पर आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपने संस्मरणों में प्रयागराज और कुंभ का वर्णन किया है। ह्वेनसांग ने भी अपने वर्णन में सम्राट हर्षवर्धन का जिक्र किया और उनके 75 दिन तक के दान के बारे में बताया।बताया जाता है कि हर्षवर्धन तबतक दान करते थे जबतक कि उनके पास से सबकुछ खत्म न हो जाए. यहां तक कि वह अपने राजसी वस्त्र भी दान कर देते थे।

भारतीय पंचांग में ग्यारहवें मास के रुप में आने वाले माघ मास का महत्व संकष्टी चतुर्थी, षटतिला एकादशी, जया एकादशी, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, भीमाष्टमी के साथ माघी पूर्णिमा के पवित्र स्नान के कारण भी हैं। इस दिन को रविदास जयन्ती भी मनायी जाती है। भारतीय पर्वों के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनका आध्यात्मिक और वैज्ञानिक महत्व तो है ही, साथ ही इन कि उद्देश्य मानवकल्याण के साथ जनसामान्य को भी साधना के माध्यम से आत्मनियंत्रण की ओर प्रवृत्त करना है।●●●

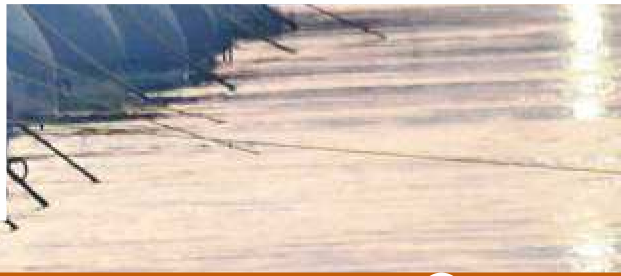

CM YUVA

योजना के तहत प्रदेश के युवाओं के सपनों को पंख दे रहा UPICON

योगी सरकार की मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास योजना (CM YUVA) के माध्यम से राज्य के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और आर्थिक विकास को नई ऊंचाई देने की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। इस पहल में उत्तर प्रदेश इंडस्ट्रियल कंसल्टेंट्स लिमिटेड (UPICON) महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह योजना न केवल युवाओं को उनके व्यवसायिक सपनों को साकार करने में मदद कर रहा है, बल्कि राज्य के छोटे व्यवसायों और उद्यमशीलता को भी बढ़ावा दे रहा है।

CM YUVA योजना के तहत, UPICON ने उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए कई अहम कदम उठाए हैं। इसके तहत मंडल स्तर पर 17 अनुभवी चार्टर्ड अकाउंटेंट और वित्तीय विशेषज्ञों को नियुक्त किया जा रहा है जिसमें से 15 मंडल में ये विशेषज्ञ उद्यमियों को उनके व्यवसाय के हर चरण में मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। ये विशेषज्ञ न केवल व्यवहार्यता अध्ययन और बाजार विश्लेषण करते हैं, बल्कि विस्तृत परियोजना रिपोर्ट भी तैयार करते हैं, जो उद्यमियों के लिए सफलता का स्पष्ट खाका प्रदान करती है।

उद्यमियों को मिल रही वित्तीय मदद और मार्गदर्शन

योजना के तहत, UPICON प्रमुख बैंकों के साथ समन्वय

- उत्तर प्रदेश में उद्यमिता का सुनहरा भविष्य तैयार कर रही योगी सरकार
- डिजिटल ट्रांसजेक्शन करने पर उद्यमियों को मिल रहा है लाभ
- प्रदेश में उद्यमियों को मिल रही वित्तीय मदद और मार्गदर्शन
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मिल रहा एक समान लाभ

स्थापित कर लाभार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। इसके तहत प्रदेश के प्रत्येक जिले में रिटायर्ड बैंकर्स की तैनाती की जा रही है, जो वित्तीय सहायता के लिए लाभार्थी और बैंक के बीच समन्वय स्थापित कर नए उद्यमियों की सहायता करेंगे। अभी तक 50 जिलों में बैंकर्स की तैनाती कर दी गई है। छोटे व्यवसायों और स्टार्टअप्स के लिए यह योजना एक मजबूत आधारशिला की तरह काम कर रही है। युवा उद्यमियों को उनकी परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता के साथ-साथ व्यवहारिक और तकनीकी मदद भी दी जा रही है।

इसके लिए इन बैंकर्स के पास 300 से अधिक प्रोजेक्ट की प्रोफाइल तैयार है, आगे इसे बढ़ाकर 1000 प्रोजेक्ट प्रोफाइल तैयार करना है।

प्रदेश के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) प्रोत्साहन विभाग के प्रमुख सचिव एवं UPICON के चेयरमैन आलोक कुमार ने योजना के तहत ई-कॉमर्स, हरित प्रौद्योगिकी, और डिजिटल सेवाओं जैसे नए और उभरते क्षेत्रों में नए युग के लघु व्यवसाय के लिए प्रोजेक्ट प्रोफाइल तैयार करने पर जोर दिया है। इन नवाचार आधारित परियोजनाओं का उद्देश्य युवाओं को तेजी से बढ़ते उद्योगों में अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार करना है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मिल रहा एक समान लाभ

CM YUVA योजना न केवल शहरी क्षेत्रों, बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी युवाओं के लिए उम्मीद की किरण बनकर उभरी है। छोटे व्यवसायों को प्रोत्साहन देकर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं। इससे राज्य के युवाओं में आत्मनिर्भरता की भावना को प्रबल किया जा रहा है। UPICON के प्रयासों ने उद्यमिता को एक नई दिशा दी है। यह संस्था खुद को एक उत्प्रेरक के रूप में स्थापित कर रही है, जो युवाओं को नवाचार और सशक्तिकरण के साथ उनके व्यवसाय को विकसित करने में मदद करती है। मुख्यमंत्री युवा उद्यमिता विकास योजना के माध्यम से राज्य में रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी हो रही है। यही नहीं इसमें डिजिटल ट्रांजेक्शन करने वालों को भी लाभ मिल रहा है। नए व युवा उद्यमी https://msme.up.gov.in पर विजिट कर इसका लाभ उठा सकते हैं।

उत्तर प्रदेश में उद्यमिता का सुनहरा भविष्य तैयार कर रही योगी सरकार

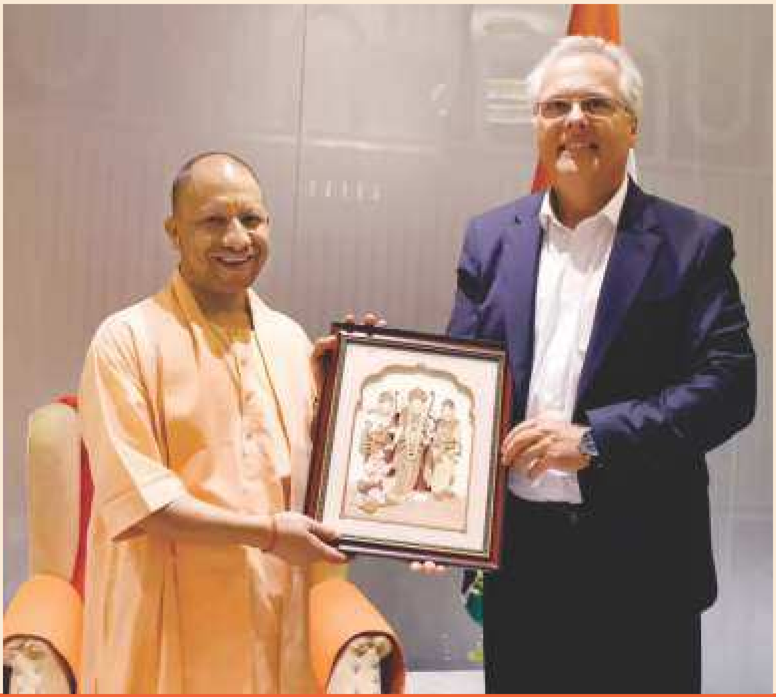

UPICON की यह पहल उत्तर प्रदेश को एक उद्यमशीलता केंद्र के रूप में विकसित करने की ओर अग्रसर है। वित्तीय और तकनीकी सहायता से लेकर विस्तृत परियोजना रूपरेखा तैयार करने तक, यह योजना उद्यमियों को उनकी व्यावसायिक यात्रा में हर संभव सहायता प्रदान कर रही है। CM YUVA योजना और UPICON की यह सहभागिता न केवल प्रदेश के युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान कर रही है, बल्कि राज्य के समग्र आर्थिक विकास को भी गति दे रही है। इससे स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश जल्द ही उद्यमशीलता और नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में अपनी पहचान बनाएगा। ●●●

दिल्ली विधानसभा चुनाव

त्रिकोणीय मुकाबले में उलझे केजरीवाल

प्रवीण पाठक

नए साल 2025 का आगाज हो गया है। चुनावी मोर्चे पर साल 2025 में काफी गहमा-गहमी रहने वाली है। नए साल की शुरुआत दिल्ली विधानसभा के चुनाव से होगी। इसी साल बिहार का विधानसभा चुनाव भी होना है। इन दो राज्यों के विधानसभा चुनाव के अलावा इस साल एक लोकसभा और छह विधानसभा सीटों पर उपचुनाव भी कराया जा सकता है। जहां तक दिल्ली विधानसभा चुनाव की बात है तो .इस केंद्र शासित राज्य में इस साल फरवरी तक विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसलिए इन दिनों दिल्ली में राजनीतिक सरगर्मियां जोर-शोर से चल रही हैं। वादों और दावों का दौर चल रहा है। बयानों से माहौल को गरमाया जा रहा है। कार्यकर्ताओं में जोश भरा जा रहा है। दिल्ली में पिछले तीन बार से आम आदमी पार्टी की सरकार है। विपक्षी भाजपा और कांग्रेस आप की सरकार को सत्ता से हटाने के लिए दिन-रात एक किए हुए हैं। वहीं अपनी सरकार को बनाए रखने के लिए आप के नेता और कार्यकर्ता जमकर पसीना बहा रहे हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव में एक बार फिर त्रिकोणीय मुकाबले की संभावना है। आम आदमी पार्टी, कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी की तरफ से पूरी ताकत लगायी जा रही है। दिल्ली विधानसभा का कार्यकाल 15 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है।

विदित हो कि साल 1991 में, भारतीय संसद ने 69वां संविधान संशोधन अधिनियम पारित कर दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का दर्जा मिला और दिल्ली में सीमित शक्ति वाली विधान सभा बनायी गयी। राज्य में पहला विधानसभा चुनाव साल 1993 में हुआ। जैसा कि उल्लेखनीय 2025 की शुरुआत में एक बार फिर विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। दिल्ली में विधानसभा की 70 सीटें हैं। इस विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल एक बार फिर चुनावी मैदान में हैं। अरविंद केजरीवाल को टक्कर देने के लिए कांग्रेस की तरफ से शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित को मैदान में उतारा है। वहीं विपक्ष के नेता राहुल गांधी के करीबी कहे जाने वाले कांग्रेस के राष्ट्रीय कोशाध्यक्ष अजय माकन भी को भी कांग्रेस नेतृत्व ने सक्रिय किया है। आम आदमी पार्टी की तरफ से सबसे पहले अपने सभी 70 उम्मीदवारों के नामों को ऐलान किया जा चुका है और साथ में इस बात का भी कि इस चुनाव के बाद एक बार फिर अरविंद केजरीवाल ही मुख्यमंत्री बनेंगे। आप ने भले ही सबसे पहले अपने उम्मीदवारों के नामों का ऐलान कर दिया हो लेकिन कहा जा रहा है कि आम आदमी पार्टी को भी एंटी इनकंबेंसी का डर सता रहा है। यही वजह है कि उसने अपने 16 विधायकों के टिकट काट दिए हैं तो चार विधायकों के विधानसभा क्षेत्र बदल दिए हैं। जिनकी सीटें बदली गई हैं, उनके आप के दूसरे नंबर के नेता माने जाने वाले मनीष सिसोदिया भी शामिल हैं। साल 2015 और 2020 के चुनाव में जीतने में आप को कोई परेशानी नहीं हुई थी। लेकिन 2025 के चुनाव में ऐसा नहीं है। आप भ्रष्टाचार के आरोपों से परेशान है। पहले ये आरोप भाजपा लगा रही थी और अब कांग्रेस भी उसके खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप ही लेकर आई है। इस लड़ाई में फायदा किसे होगा, इसका पता तब चल पाएगा, जब चुनाव परिणाम आएंगे। वहीं दूसरी ओर चुनावों के मद्देनजर सबसे पहले अपने उम्मीदवारों के नामों का ऐलान करने वाली भाजपा की आरे षुरुआती दौर में अपने उम्मीदवारों के ऐलान में देर करते हुए इसलिए दिखी क्योंकि यह कहा गया कि भाजपा में अपने उम्मीदवारों के लिए काफी गहन मंथन किया गया। अगर कांग्रेस की बात की जाए तो कांग्रेस चुनावों में सबसे बाद मे अपने उम्मीदवारो के नामों का ऐलान करने के लिए जानी जाती है, लेकिन वहीं इसके विपरीत कांग्रेस दिल्ली के विधानसभा चुनावों में अपने उम्मीदवारों के नामों का ऐलान करने में आप से थोड़ पीछे लेकिन भाजपा से आगे रही।

दिल्ली विधानसभा चुनाव सत्तारुढ आप, प्रमुख विपक्षी दल भाजपा और दिल्ली की राजनीति मे षून्य पर खड़ी कांग्रेस के लिए काफी अहम है। वहीं दिल्ली विधानसभा चुनाव ने इंडिया गठबंधन की गांठे खोल कर रख दी है। विदित हो कि कांग्रेस और आप लोकसभा चुनाव तक एक साथ इंडिया गठबंधन का हिस्सा थे। हरियाणा विधानसभा चुनावों के दौरान इनमे अलगाव की षुरुआत हुई और जो दिल्ली विधानसभा चुनाव आते-आते पूर्व की नजदीकियां दूरियों में बदल गई। केजरीवाल ने

पहले ही कह दिया था कि वे दिल्ली में कांग्रेस के साथ चुनावी गठबंधन नहीं करेंगे। वह षायद इस लिए क्योंकि दिल्ली में आप ने अपने पैर कांग्रेस की ही राजनीतिक जमीन पर मजबूत किए हैं। वहीं 2024 का लोकसभा चुनाव साथ लड़ने को कांग्रेस नेता अपनी भूल मान रहे हैं। इसलिए दिल्ली के स्थानीय नेता केंद्रीय नेताओं के दबाव के बाद भी आप से समझौते के लिए तैयार नहीं हुए और भूल सुधारने में लगे हुए हैं। दिल्ली में अपना खोया हुआ जनाधार वापस लाने और दिल्ली की राजनीति में कांग्रेस को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए उसके नेता आप और केजरीवाल को निशाना बना रहे हैं। इसके लिए पार्टी के बड़े नेताओं को विधानसभा चुनाव में उतारा जा रहा है। आप के पुराने और बागी नेताओं को टिकट दिया जा रहा है। कांग्रेस नेताओं और आम आदमी पार्टी के नेताओं के बीच यह बयानबाजी दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर हो रही है। पहले यह चर्चा थी कि दोनों दल लोकसभा की ही तरह विधानसभा का चुनाव भी मिलकर लड़ेंगे। लेकिन अंत में यह समझौता नहीं हो पाया। दरअसल दोनों दलों का राष्ट्रीय नेतृत्व तो इस समझौते के पक्ष में था, लेकिन स्थानीय नेतृत्व इसके समर्थन में नहीं था। यही वजह है कि कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने अरविंद केजरीवाल पर बहुत पहले से हमलावर हैं। आठ नवंबर से शुरू हुई न्याय यात्रा में उन्होंने दिल्ली की शराब नीति में कथित भ्रष्टाचार को लेकर उन्होंने अरविंद केजरीवाल को भ्रष्ट ठहराया। दिल्ली कांग्रेस के नेता बहुत पहले से ही अरविंद केजरीवाल पर हमलावर हैं। दिल्ली की शराब नीति में कथित भ्रष्टाचार उजागर होने के समय से ही वो अरविंद केजरीवाल पर हमलावर रहे हैं। अब विधानसभा चुनाव से पहले उन्होंने बयानबाजी तेज कर दी है। दरअसल दिल्ली में कांग्रेस की हालत बहुत पतली हो चुकी है। पिछले दो चुनाव में उसे एक भी सीट न तो लोकसभा चुनाव में मिली है न ही विधानसभा चुनाव में।

जहां तक भाजपा का सवाल है तो पिछले लोकसभा चुनावों में उम्मीदों के अनुरुप प्रदर्शन न करने वाली भाजपा ने लोकसभा चुनावों के बाद हुए हरियाणा और महाराश्ट्र के विधानसभा चुनाव विपरीत राजनीतिक परिस्थितियों पर एक तरफ रूप से जीत कर यह साबित कर दिया कि एक कमजोर प्रदर्शन से उसकी उलटी गिनती षुरु होने की चर्चा करना बेमानी है। सच तो यह है कि भाजपा अपनी हार से सबक सीखते हुए वापसी करना जानती है। वह उसने हरियाणा और महाराश्ट्र के विधानसभा चुनाव जीत कर साबित भी किया। अब ऐसे में दिल्ली के विधानसभा चुनाव जीतने के लिए भाजपा के पर सबकी नजरें लग गई हैं। जहां वह पिछले दो विधानसभा चुनावों में दहाई के अंक तक सीटें नहीं जीत पाई थी। कांग्रेस दिल्ली की लड़ाई को त्रिकोणीय बनाने की कोशिश कर रही है। जबकि राजनीति के जानकारों का मानना है कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी का मुख्य मुकाबला भाजपा से है। भाजपा पिछले करीब तीन दशक से दिल्ली की सत्ता से दूर है। एक बार फिर दिल्ली की सत्ता के लिए पुरजोर कोशिशें कर रही है। भाजपा आप को भ्रष्टाचार के आरोपों पर ही घेर रही है। वह सीधे अरविंद केजरीवाल को निशाना बना रही है। साल खत्म होते-होते दिल्ली की राजनीति में धर्म की भी इंट्री हो गई। पुजारियों, इमामों और ग्रंथियों को मिलने वाली सम्मान राशि पर भाजपा और आप आमने-सामने हैं। यहां यह बताते चले कि दिल्ली का पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था। इस चुनाव में आम आदमी पार्टी ने विधानसभा की 70 में से 62 सीटों पर जीत दर्ज की थी। भाजपा को आठ सीटों से संतोष करना पड़ा था। कांग्रेस को कोई सफलता नहीं मिली थी।

अगर दिल्ली पिछले विधानसभा चुनावों मे तीनों राजनीतिक दलों आप, भाजपा और को मिले मत प्रतिशत की बात करें तो दिल्ली में पिछले 2 विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी ने 67 और 62 सीटों पर जीत दर्ज कर शानदार प्रदर्शन किया है। 2013 के विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को 29.5 प्रतिशत वोट मिले थे लेकिन वहीं 2015 में हुए विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी का वोट शेयर 54.3 प्रतिशत तक पहुंच गया वहीं 2020 के चुनाव में वोट में हल्की गिरावट हुई लेकिन फिर भी आप ने 53.6 प्रतिशत वोट शेयर प्राप्त कर रिकॉर्ड जीत दर्ज की। वोट शेयर को देखने के बाद साफ पता चलता है कि आम आदमी पार्टी के वोट शेयर में बढ़ोतरी कांग्रेस के वोट बैंक के ट्रांसफर होने के कारण हुई है। भारतीय जनता पार्टी के वोट शेयर में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं देखने को मिला है। पिछले 4 विधानसभा चुनावों में बीजेपी का वोट शेयर 32 से 38 प्रतिशत के बीच रहा है। 2015 में सबसे कम 32.2 प्रतिशत और 2020 में सबसे अधिक 38.5 प्रतिशत वोट भाजपा को मिले थे।

वहीं कांग्रेस के वोट बैंक तेजी से गिरावट देखने को मिली है। 2008 के चुनाव में 40.3 प्रतिशत वोट प्राप्त करने वाली कांग्रेस पार्टी 2020 के चुनाव में महज 4.3 प्रतिशत के वोट शेयर पर रह गयी। कांग्रेस पार्टी को 2013 में 24.6 प्रतिशत, 2015 में 9.7 प्रतिशत और 2020 के चुनाव में 4.3 प्रतिशत वोट मिले थे।

दिल्ली में हुए पिछले तीन लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी का जलवा रहा है। 2014,2019 और 2024 के तीनों ही लोकसभा चुनावों में भाजपा ने सभी 7 सीटों पर जीत दर्ज की थी। आम आदमी पार्टी और कांग्रेस का दिल्ली में खाता भी नहीं खुला है। बात अगर वोट शेयर की करें तो वोट शेयर के मामले में भी आम आदमी पार्टी भाजपा से काफी पीछे रही है। भाजपा को साल 2014 में जहां 46.4 प्रतिशत वोट मिले थे वहीं 2019 में भाजपा का वोट शेयर बढ़कर 56.6 प्रतिशत तक पहुंच गया वहीं 2024 के चुनाव में हल्की गिरावट के बाद भी भाजपाका वोट शेयर 54.7 प्रतिशत रहा। 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को दिल्ली में 15.2 प्रतिशत वोट मिले थे. वहीं 2019 में कांग्रेस का वोट शेयर 22.5 था वहीं 2024 में कांग्रेस को 19 प्रतिशत वोट मिले थे। 2024 के लोससभा चुनाव में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने मिलकर चुनाव लड़ा था। हालांकि दोनों दलों को इसका अधिक लाभ नहीं मिला। ●●●

बांग्लादेश, पाकिस्तान और चीन का बनता त्रिकोण

नई दिल्ली को सतर्क रहने की ज़रूरत

फरीद वारसी

इतिहास गवाह है कि अगर भारत ने दिसंबर 1971 में अपनी कृपादृश्टि ने की होती तो संभवता दुनिया के नक्शे मे एक नए देश बांग्लादेश का उदय कभी न होता। अब वहीं एहसान फरामोश बांग्लादेश भारत के एहसानों को भुलते हुए न सिर्फ भारत विरोध की राह पर बहुत आगे तक चला गया है, बल्कि भारत और कभी अपने धुर विरोधी रहे पाकिस्तान के करीब जा पहुंचा है। कहा जा रहा है कि इस दौरान भारत विरोध की होड़ में शामिल बांग्लादेश यह भी भूल गया कि किस तरह पाकिस्तान के तत्कालीन सैन्य नेतृत्व ने पूर्वी पाकिस्तान जो अब बांग्लादेश है, उस पर जुल्म और सितम की इंतेहा कर दी थी। चिंता की बात यह है कि भारत का एक और पड़ोसी मुल्क चीन जो पिछले दिनों भारत के साथ अपने सीमा विवाद को सुलझाने के प्रति संवदेनशील दिख रहा था, बल्कि इस क्षेत्र मे कुछ हद तक प्रगति भी हुई थी, अब वही चीन भारत विरोध के लिए एक दूसरे के करीब आए बांग्लादेश और पाकिस्तान के समूह में शामिल हो कर नए त्रिकोण का रूप दे रहा है। ऐसे में नई दिल्ली को सतर्क रहने की जरूरत है। साथ ही यहां भारत की विदेश नीति से लेकर उसकी कूटनीतिक की भी अग्निपरीक्षा हो, इससे इंकार नहीं किया जा सकता है। हालांकि जब तक बांग्लादेश में शेख हसीना की सत्ता रही, बांग्लादेश भारत का अभिन्न मित्र रहा। लेकिन जैसे ही वहां शेख हसीना की सरकार का तख्ता पलट हुआ और वहां की अंतरिम सरकार की बागडोर नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. मोहम्मद युनूस के हाथों में आई, तो बांग्लादेश की कार्यवाहक सत्ता अपने देश की अशांति और अराजकता को खत्म करने के बजाए भारत विरोध के रास्ते पर चल निकला। अपने देश के अल्पसंख्यकों पर हमले और उस पर मौन रहना भारत विरोध की राजनीति का पहला अध्याय था।

अब ऐसे में कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि अब जैसे-जैसे बांग्लादेश की नई तस्वीर उभर रही है तो पिछले साल का वह घटनाक्रम यानि 5 अगस्त, 2024 का दिन पड़ोसी देश बांग्लादेश ही नहीं भारत के लिए भी काफ़ी अहम और चिंता भरा दिन रहा। उसी दिन बांग्लादेश में शेख हसीना का तख्ता पलटा, वो भागकर भारत आईं जहां उन्हें शरण मिली। उसी दिन भारत ने बीते 53 साल से अपने क़रीबी मित्र रहे बांग्लादेश को गंवाना शुरु कर दिया। बांग्लादेश जिस राह पर निकल पड़ा है वो भारत के लिए

एक पड़ोसी देश के तौर पर राजनीतिक और सामरिक चिंता की वजह बन गया है। काहिरा में हाल में आठ मुस्लिम बहुल देशों के संगठन क्-8 की बैठक हुई। इस बैठक के दौरान बांग्लादेश के अंतरिम प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ़ की दोस्ताना मुलाक़ात की तस्वीर काफ़ी चर्चा में है। मुलाक़ात में मोहम्मद यूनुस ने शहबाज़ शरीफ़ से कहा कि पुराने गिले शिकवे भुला दिए जाएं और 1971 के मुद्दों को दरकिनार कर नए रिश्ते बनाए जाएं। उन्होंने दोनों देशों के रिश्तों की बेहतरी पर ज़ोर दिया। मोहम्मद यूनुस जानते हैं कि ये वही पाकिस्तान है जिससे आज़ाद होने के लिए 1971 में उन्होंने अमेरिका में एक नागरिक कमेटी बनाई थी और बांग्लादेश इन्फॉर्मेशन सेंटर चलाया था। ये भी वो भूले नहीं होंगे कि जिस पाकिस्तान के साथ वो दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे हैं, उसके ही ज़ुल्मो सितम से तंग आकर बांग्लादेश में मुक्ति का लंबा संग्राम चला और 1971 को पूर्वी पाकिस्तान अलग होकर बांग्लादेश बन गया। लेकिन अब वो पाकिस्तान और बांग्लादेश के रिश्तों को रिसेट करना चाहते हैं। एक नई शुरुआत करने की बात कर रहे हैं।

ऐसे में सवाल यह पैदा हो रहा है कि बांग्लादेश की आज़ादी में सबसे बड़ी भूमिका निभाने वाले भारत को भुला कर वो क्यों पाकिस्तान की राह पर चल पड़े हैं। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार पाकिस्तान को एक के बाद एक रियायत दे रही है। पाकिस्तानी नागरिकों के लिए वीज़ा आसान कर दिया गया है जैसा शेख हसीना के दौर में नहीं था। बांग्लादेश में पाकिस्तान का हाई कमीशन काफ़ी सक्रिय है। सवाल ये है कि भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देता रहा पाकिस्तान बांग्लादेश को क्या देने जा रहा है। क्या पाकिस्तान से क़रीबी बांग्लादेश को भी कट्टरपंथ की ओर तेज़ी से नहीं धकेल देगी। वैसे भी जब अंतरिम प्रधानमंत्री के तौर पर मोहम्मद यूनुस ने बांग्लादेश की कमान संभाली और उनकी ही नाक के नीचे लंबे अर्से तक अल्पसंख्यकों ख़ासतौर पर हिंदुओं के ख़िलाफ़ हिंसा का दौर शुरु हो गया। ऐसी हिंसा का विरोध कर रहे पुजारी चिन्मॉय कृष्ण दास समेत कई लोगों को गिरफ़्तार कर लिया गया। भारत ने इन तमाम घटनाओं पर सख़्त प्रतिक्रिया जताई। मोहम्मद यूनुस को याद दिलाया कि अल्पसंख्यकों के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियां क्या हैं।

जहां तक मोहम्मद यूनुस का सवाल है तो वे एक तरफ़ अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के मुद्दे पर ज़ुबानी जमाखर्च करते रहे और उधर अपने देश में कट्टरपंथियों को खुली छूट दे दी। बंग बंधु शेख मुज़ीबुर्रहमान की विचारधारा पर यकीन रखने वाले लोग बांग्लादेश में हाशिए पर हैं, कट्टरपंथियों के निशाने पर हैं। बांग्लादेश में जो माहौल बदला उसका असर वहां के तमाम संस्थानों पर दिख रहा है। बांग्लादेश के सेंट्रल बैंक ने वहां कि मुद्रा पर मुज़ीबुर्रहमान की तस्वीरों को हटाने का फ़ैसला किया है। वहां की अदालत ने कहा है कि जॉय बांग्ला अब वहां का राष्ट्रीय नारा नहीं रहेगा। ये नारा बांग्लादेश के मुक्ति आंदोलन के दौरान बना था और अब जो बांग्लादेश में हो रहा है उससे ये साफ़ लग रहा है कि मुक्ति के उस दौर की विरासत, तमाम चिन्हों, संकेतों को मिटाने की कोशिश तेज़ हो गई है। गौर करने वाली बात यह है कि विचारधारा में उदारता से मुंह मोड़ लिया गया है। विदेश मंत्रालय ने संसद में जानकारी दी कि बांग्लादेश में हिंदुओं समेत अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ घटनाओं में 628 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। यानी छह गुना से ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। साल 2024 में 8 दिसंबर तक 2200 घटनाएं हिंदू और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ हुई हैं। जबकि साल 2023 में 302 घटनाएं सामने आई थी। विदेश मंत्रालय के मुताबिक बांग्लादेश ही नहीं पाकिस्तान में भी हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ हिंसा बढ़ी है। साल 2024 में वहां ऐसी 112 घटनाएं हुईं जबकि साल 2023 में 103 घटनाएं हुई थीं। अल्पसंख्यकों ख़ासकर हिंदुओं के प्रति संवेदनहीन रवैया रखने वाले इन दोनों देशों का क़रीब आना क्या बताता है। क्या भारत को अब एक और मोर्चे पर लगातार सतर्क रहना होगा। ख़ासकर आतंकियों की गतिविधियों को लेकर।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने मुस्लिम कट्टरपंथी संगठन जमात-ए-इस्लामी पर लगी पाबंदी हटा दी है। मोहम्मद यूनुस

को अब जमात-ए-इस्लामी की कठपुतली के तौर पर देखा जाने लगा है। तख्ता पलट के फौरन बाद ही बांग्लादेश की जेलों से कई कट्टरपंथी आतंकी रिहा कर दिए गए। ऐसे कम से कम 70 खूंखार आतंकवादी हैं जो अब आज़ाद घूम रहे हैं और इस्लामी कट्टरपंथ को तेज़ करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। आतंकी संगठन अंसारुल्लाह बांग्ला और हिज़्बुत ताहिर पर कई देशों में पाबंदी है। शेख हसीना के दौर में इन संगठनों से जुड़े आतंकियों को जेलों में डाल दिया गया था लेकिन अब वो आज़ाद है। जानकारों का मानना है कि भारत के लिए एक और मोर्चे पर इस्लामी कट्टरपंथी ताक़तों से निपटने की चुनौती ही नहीं है। सामरिक, रणनीतिक चुनौती भी बढ़ गई है। बांग्लादेश और पाकिस्तान के क़रीब आने से भारत की सामरिक और रणनीतिक चिंताएं इसलिए भी बढ़ रही हैं कि चीन के साथ मिलकर ये तीनों देश जो त्रिकोण बनाएंगे वो भारत को घेरने की कोई कोशिश नहीं छोड़ेगा। चीन पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों के ही साथ अपने रक्षा संबंध और मज़बूत कर रहा है। एक त्रिकोणीय चुनौती भारत के इर्द गिर्द बुनी जा रही है। जो बांग्लादेश अभी तक भू सामरिक रणनीति में भारत और चीन के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश करता था, उसने अब वो कोशिश छोड़ दी है। बांग्लादेश मामलों के जानकर और जेएनयू प्रो. संजय भारद्वाज ने कहा कि जो भी देश भारत विरोधी होगा, चीन उसके साथ जाएगा। दक्षिण एशिया में ये बदलता शक्ति संतुलन अमेरिका के लिए भी चिंता की वजह है जो पहले ही एशिया प्रशांत क्षेत्र के पूर्व में ताइवान के आसपास चीन के वर्चस्व को चुनौती देने में जुटा है। अब बांग्लादेश में चीन, पाकिस्तान के बढ़ते दखल से बदलती भूसामरिक परिस्थितियां अमेरिका और भारत के लिए नई चुनौती बन गई हैं।

तो वहीं दूसरी ओर चीन पाकिस्तान के बाद दूसरे स्थान पर सबसे ज्यादा हथियारों की सप्लाई बांग्लादेश को करता रहा है। चीन ने बांग्लादेश को लड़ाकू विमान, ट्रेनर एयरक्राफ्ट, टैंक, समुद्री जहाज़ और मिसाइल तक बांग्लादेश को सप्लाई किए हैं और अब वो बांग्लादेश एयरफोर्स को आधुनिक बनाने में भी भूमिका निभा सकता है। खबर है कि बांग्लादेश के एयरचीफ़ मार्शल ने

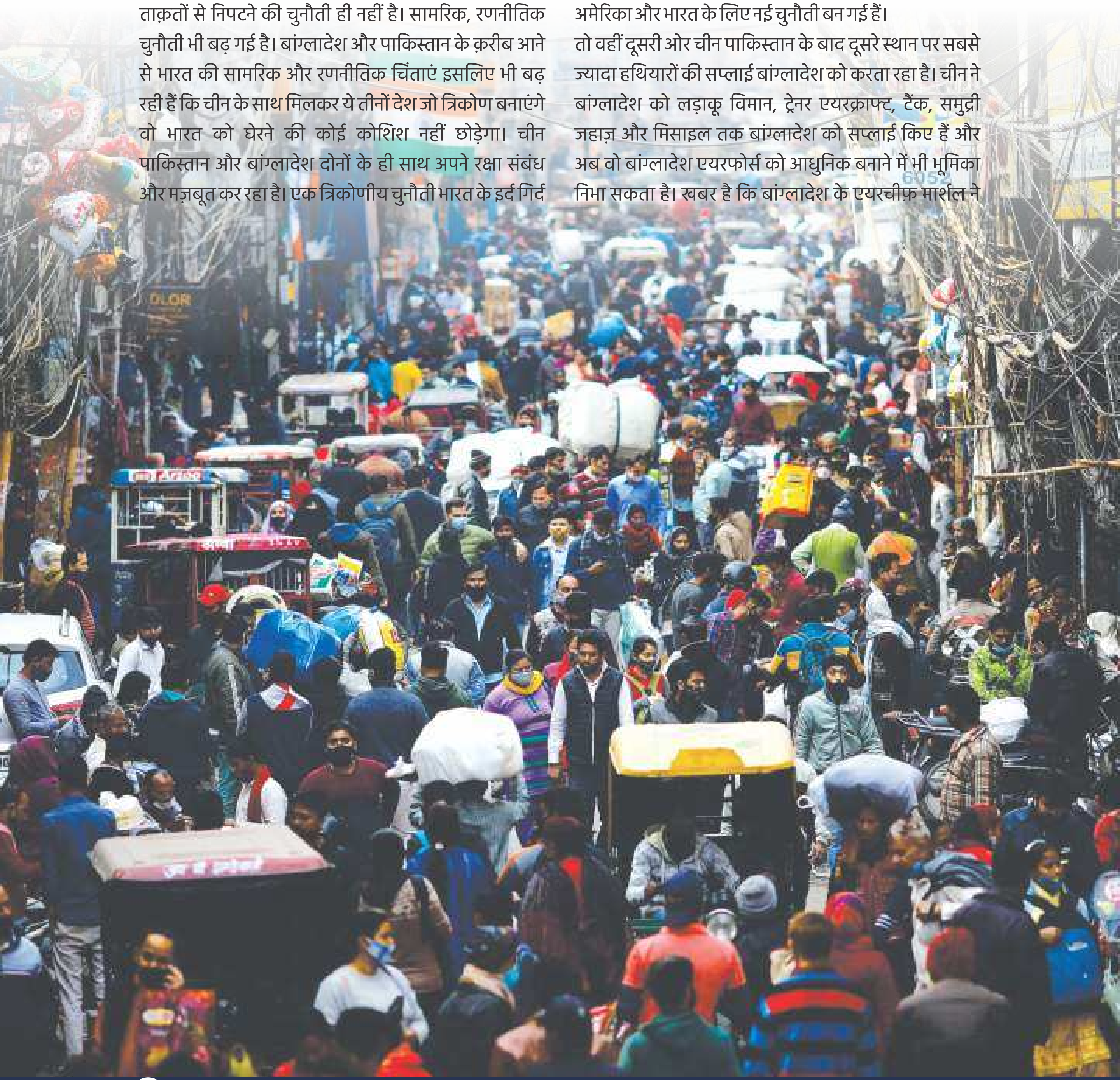

हाल ही में चीन का दौरा किया ताकि मल्टीरोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट और अटैक हेलीकॉप्टर्स की ख़रीद से अपनी वायुसेना को आधुनिक बना सकें। रिपोर्ट्स के मुताबिक बांग्लादेश चीन से 16 श्र-10ब्म् लड़ाकू विमान ख़रीदने पर विचार कर रहा है जो चीन के अपने विमान का एक्सपोर्ट वेरिएंट है। 4.5 जनरेशन का लड़ाकू विमान भारत के लिए भी एक चुनौती बन सकता है। इसकी तुलना अमेरिका के थ्16 लड़ाकू विमान से की जाती है। उधर पाकिस्तान ने भी एलान किया है कि वो जनवरी में चीन के थ्ब्-31 स्टेल्थ फाइटर जेट्स को ख़रीदने जा रहा है। ये फिफ्थ जनरेशन का फाइटर है जो स्टेल्थ तकनीक समेत कई खूबियों से भरा है और अमेरिका के थ्35 से उसकी तुलना की जाती है। कट्टरपंथी ताक़तों के हाथ में खेल रहा पड़ोसी देश बांग्लादेश अब अंतरिम प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में पाकिस्तान के साथ रिश्तों को नए सिरे से तय करने की कोशिश कर रहा है। वो रिश्ते जो 1971 में पाकिस्तान के कब्ज़े से पूर्वी पाकिस्तान यानी बांग्लादेश की आज़ादी के साथ लगभग ख़त्म हो चुके थे। लेकिन क्या पाकिस्तान के साथ बांग्लादेश अपने इन रिश्तों को भारत की कीमत पर बनाने जा रहा है। अगर ऐसा है तो बांग्लादेश 1971 और उससे पहले पाकिस्तान के तत्कालीन हुक्मरानों और सेना के हाथों लाखों अपने लोगों के क़त्ले आम और भेदभाव को भूल रहा है तब पाकिस्तान भारत के पूर्वी और पश्चिमी दो छोर पर स्थित था। जनसंख्या में कम होने के बावजूद सत्ता पर लगातार पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिक तानाशाहों का कब्ज़ा था। जो बंगाली मुसलमानों को हेय दृष्टि से देखते थे। उनकी भाषा, परंपरा, नस्ल सबको अपने से कमतर समझते थे। उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान के साथ हर लिहाज से अन्याय किया। उर्दू को राष्ट्रीय भाषा बनाने की कोशिश कीं। जबकि पूर्वी पाकिस्तान की 10 प्रतिशत से भी कम आबादी उर्दू बोलती थी। भेदभाव का आलम ये था कि नवंबर 1970 में आए भयानक चक्रवाती तूफ़ान में पूर्वी पाकिस्तान में क़रीब तीन लाख लोग मारे गए। पश्चिमी पाकिस्तान ने कारोबार में भी भेदभाव किया।

1947 से 1970 तक पूर्वी पाकिस्तान को कुल औद्योगिक निवेश का महज़ 25 प्रतिशत दिया। आयात में भी सिर्फ़ 30 प्रतिशत हिस्सा दिया गया। जबकि तब पूरे पाकिस्तान के निर्यात में पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा 59 फीसदी होता था। चुनावों में भी पूर्वी पाकिस्तान का हक़ मार दिया गया। 1970 में हुए पहले आम चुनावों में पश्चिमी पाकिस्तान के पास 138 सीटें थी और ज्यादा जनसंख्या वाले पूर्वी पाकिस्तान के पास 162 सीटें। पश्चिमी पाकिस्तान की सीटें कई पार्टियों में बंटी। जबकि पूर्वी पाकिस्तान में बहुमत शेख मुजीबुर्रहमान की अवामी लीग को मिला। मुजीबुर्रहमान हमेशा बंगाली स्वायत्तता के हिमायती थे। नतीजों से हैरान पाकिस्तान के तत्कालीन तानाशाह जनरल याहया ख़ान ने मार्शल लॉ लगा दिया। पूर्वी पाकिस्तान में हड़ताल और दंगे होने लगे। 7 मार्च, 1971 को मुजीबुर्रहमान ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन का एलान किया। लेकिन 25 मार्च की रात को उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और साठ से अस्सी हज़ार पाकिस्तानी सैनिक जो कई महीनों से पूर्वी पाकिस्तान में आ रहे थे। उन्होंने आम बंगाली नागरिकों का कत्लेआम शुरु कर दिया। इसे ऑपरेशन सर्चलाइट के नाम से जाना जाता है। कितने लोग मारे गए इसके अलग अलग अनुमान लगाए जाते हैं। पांच लाख से लेकर 30 लाख तक. मई 1971 में क़रीब 15 लाख शरणार्थियों ने भारत में शरण मांगी जो नवंबर तक बढ़कर एक करोड़ तक पहुंच गए। भारत के लिए भी ये बड़ी चिंता की बात थी। वहां की लाखों महिलाओं को बलात्कार का शिकार बनाया गया। पाकिस्तान के ज़ुल्मो सितम से लड़ने और आज़ादी के लिए शेख मुजीबुर्रहमान के आह्वान में बनी मुक्तिवाहिनी ने हथियारबंद विद्रोह तेज़ किया। इसी बीच 3 दिसंबर, 1971 को पाकिस्तान ने भारत के ख़िलाफ युद्ध का एलान कर दिया लेकिन भारत के क़रारे जवाब से पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी। 16 दिसंबर तक पाकिस्तान के 93 हज़ार सैनिकों के आत्मसर्मपण के साथ बांग्लादेश पर पाकिस्तान के ज़ुल्म की कहानी का अंत हुआ। पाकिस्तान युद्ध हार गया, भारत के 3900 सैनिक जवानों ने भी बांग्लादेश की आज़ादी की लड़ाई में शहादत दी। अब बड़ा सवाल ये है कि क्या बांग्लादेश के अंतरिम प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस भारत की क़ीमत पर पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारेंगे या फिर किसी तरह का संतुलन रखेंगे ये आने वाले दिनों में साफ़ होगा। ●●●

गोबिंद की दुलहिन

कुमकुम श्रीवास्तव
लखनऊ

कानपुर देहात के छोटे से गांव में आज रमाशंकर पांड़े की बड़की बिटिया गुलाबो का गुदउना है। बाहर ढोलताशे बजने शुरू हो गये थे। सभी ख़ास नातेदार आ चुके थे। बस उसके ससुराल वालों का बेसब्री से इंतज़ार था। यही एक ऐसा टिहुला है जिसमें औरतें लड़कियां भी आतीं हैं। उसकी ससुराल से ही गोदना (गोदना बनाने वाला) आयेगा। वह उसके बायें हाथ पर पति का नाम गोद देगा।गुलबिया तैयार बैठी थी। तेरह साल की पूरी हो चुकी थी। अजिया कहतीं थीं कि उसकी उमर बहुत हो गई है। जब उनकी शादी हुई थी तो वह दस साल की भी पूरी नहीं थीं। वह थोड़ी डरी हुई थी कि गोदने से पीड़ा होती है। तब तक बैठक से ख़बर आई कि सब लोग आ चुके हैं। गुलाबो को बाहर बुलाया जा रहा था। वह भी सबके साथ सहमी, सकुचाई सी बाहर आ गई। उसका पूरा मुंह लम्बे घूंघट से ढका था। वह किसी को भी देख नहीं पायी और ना उसको कोई। उसकी होने वाली सास ने गुलबिया का नखशिख श्रंगार कर दिया। सभी महिलाओं ने उसकी गोद में फल मिष्ठान्न डाल दिये। अब बारी थी गोदना की। वह पहले से ही तैयार बैठा था। अजिया गाली गाने लगीं-

'ये गोदना सासू केरा यार..।' सभी लोग खुश हो रहे थे। निछाउर कर रहे थे। तभी उसको बायां हाथ आगे करने के लिए कहा गया। उसने डरते डरते अपना हाथ बाहर निकाला। गुदौने ने उसके हाथ में "गोबिंद की दुलहिन" और उसके आगे पीछे दो सुंदर से सतिया भी बना दिये थे। उसकी आंखों से लगातार आंसू दर्द से बह रहे थे। उसको आदेश दिया गया कि सभी बड़ों के पैर छू कर प्रणाम करे। सास ने उसका पल्लू और नीचे तक खींच दिया। सबका आशिर्वाद लेकर उसको अंदर भेज दिया गया। दो दिन बाद का ब्याह था।

इतनी शानदार बारात बहराइच के गांव से आई थी कि लोगों ने दांतों तले उंगली दबा ली थी। एक से एक दुर्लभ आतिशबाजी, बैंड बाजा सब था। बाभन टोले के मुखिया पं परमेसर दुबे के

लड़के का ब्याह था। जिनका शुमार धनिकों में किया जाता था। उनके गोबिंद पर पूरे टोले की नज़र थी। अबकी अगहन की पूनो को अट्ठारह बरस का होने वाला था। जयमाल की रसम का रिवाज़ पंडितों में अभी नहीं पनपा था। सबकी आंखें ऊपर छज्जे पर लगीं थीं कि लड़की अभी वहां से चावल फेंकेगी। दुल्हन आई और चावल दूल्हे पर डाल कर चली भी गई, किसी को पता भी नहीं चला।

गुलाबो पियरी पहने गीले बालों में बैठी इंतज़ार कर रही थी कि कब अम्मा उसे बुलाने आयेंगी। बार बार उसकी निगाह हाथ के गोदने पर चली जा रही थी। जिसे वह अपने दूसरे हाथ से छू लेती थी। ऐसा करने भर से उसके गाल टमाटर की तरह लाल हो जाते थे, और वह लजा के आंखें झुका लेती थी। उसी समय अम्मा उसको मंडप में ले जाने के लिए आ गईं। उसका चेहरा लम्बे घूंघट से ढक दिया। शादी की रस्में शुरु हो चुकी थीं। गोबिंद की निगाह दुल्हन के बायें हाथ पर टिकी थी। वह देखना चाहता था कि उसका नाम गुलाबो के हाथ पर कैसा दिखता है। कन्यादान के समय जब गुलाबो के हाथ में हल्दी लग रही थी तभी उसने अपना नाम उसके हाथ में गुदा हुआ देखा। मारे खुशी के उसको रोमांच हो आया। दोनों तरफ़ के पंडित अपनी योग्यता सिद्ध करने पर लगे हुए थे। इधर मीठी मीठी गालियां भी अपने चरम पर थीं। वर पक्ष के लोग मन्द मन्द मुस्कान ओढ़े भाव विभोर हुये जा रहे थे। विवाह सम्पन्न हुआ।

अब बिदाई की बेला थी। सारा माहौल ग़मगीन था। गुलाबो धाड़े मार मार के रोये चली जा रही थी। बड़ी मुश्किल से उसको बस में दूल्हे के साथ बैठाया गया। रास्ते में खाने के लिए झाबे भर भर के पूड़ी पकवान दिये गये थे। पांड़े जी ने अपनी सामर्थ्य से ऊपर दान दहेज दिया था। हालांकि दुबे जी हाथ जोड़कर कर लेने से मना कर रहे थे। बस के पहिये के नीचे नारियल फोड़कर बारात वापसी के लिए रवाना हुई। ईश्वर कृपा से सब हंसी खुशी सम्पन्न हो गया था। गोबिंद अपनी दुल्हन की एक झलक देखने के लिए मरा जा रहा था। लेकिन उसकी दुल्हन इतनी गरमी में भी घूंघट और चादर से पूरी तरह से ढंकी हुई थी। बारातियों में कुछ बच्चे भी थे जो बार बार गुलाबो से कुछ खाने पीने के लिए पूछ रहे थे। वह सिर झुकाये नहीं में सिर हिला देती थी। अजगैन में बस रोकी गई और सब ने छक कर पेट पूजा की।

बारात फिर हरि का नाम लेकर आगे बढ़ी। सुर्ज देवता अपनी तपिश बढ़ाने पर आमादा थे। तय ये हुआ कि घाघरा पार होने के बाद चाय पी जायेगी। बोलते बतियाते पंचायती करते घाघरा एकदम पास आ गई। तभी किसी बुज़ुर्ग ने कहा कि उनको कुछ जलने की बू आ रही है। इस बात की इत्तिला ड्राइवर को दी गई। उसने कहा,

'नदी पार होने वाली है, इसके बाद देखते हैं।' लेकिन ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। पुल अभी आधा ही पार हुआ था कि बस भीषण आग की चपेट में आकर चालक के नियंत्रण से बाहर हो गई। देखते ही देखते सेकेंडों में बस आग का गोला बनते हुये रेलिंग से टकरा कर, लहराते हुए घाघरा मइया की गोद में समा गई। क्षण भर में पूरा परिवार काल कवलित हो गया। भाग्य की विडंबना कहिये या विधि का विधान, गोबिंद और उसका एक दोस्त मरणासन्न स्थिति में मिले। पुलिस की मदद से कुछ लोग बरामद किए गये लेकिन वह अपनी सांसें ख़त्म कर चुके थे। गुलाबो और बाकी लोगों का नामोनिशान तक नहीं मिला। महीनों तलाश जारी रही। एक दो लोगों को छोड़कर कुछ भी हाथ नहीं लगा। सरकार थोड़ा बहुत मुआवजा देकर शांत हो गई। परिवार वाले भी रो धो कर चुप हो गये।

गोंडा जिले की एक अल्लसुबह। आसपास के धोबी नियमित कपड़े धोने घाघरा नदी के किनारे जाते थे। वहीं पास में उनकी झुग्गी झोपड़ियां थीं। उस दिन महतो धोबी की पत्नी ने नदी में कुछ देख कर अपने पति को बताया। दूर एक चमकीला लाल रंग का कुछ लहर में बार बार उछल रहा था। उसने लोगों को आवाज दी कि 'देखो वहां क्या है।' किसी ने कहा 'लगता है, ये किसी के ब्याह की चादर है।' कहते हैं ना कि 'जाको राखे साइयां मार सके ना कोय।' नदी किनारे पत्थरों से दबी हुई बेहोश गुलाबो पड़ी थी। एक हाथ उसका बुरी तरह जला हुआ था। पूरे शरीर में घाव ही घाव थे। चेहरे पर भी काफ़ी जल जन्तुओं के काटने के निशान थे। गले में लाल धागे में एक ताबीज पड़ा था। उसके गहने पानी में बह गये थे। जो हाथ जला था उसकी सब चूड़ियां टूट चुकी थीं। हाथ पर केवल स्वास्तिक का आधा निशान ही बाकी था। सबकी सलाह से महतो ने पुलिस को खबर कर दी। पुलिस ने उसकी फ़ोटो अख़बारों में भी छपवा दी लेकिन कोई पुरसाहाल नहीं हुआ। महतो की पत्नी चंपा ने पुलिस की इज़ाजत से गुलाबो को अपने पास रख लिया।

दिन, महीने, साल गुज़रने लगे। चंपा पूछ पूछ कर थक गई कि उसका घर कहां है? उसके मां बाप का क्या नाम है? कहां की है वह? मां बाप के नाम के साथ बताती थी कि कानपुर में उसका घर है, और ससुराल बाभन टोला में है। पति का नाम गोबिंद बताती थी। इतने बड़े कानपुर में कहां ढूंढा जाये? बाभन टोला कहां है? कुछ पता नहीं। कभी वह घर से बाहर ही नहीं निकली थी। महतो ने अपने बच्चों के साथ उसका एक सरकारी स्कूल में एडमिशन करा दिया। स्कूल का मुंह उसने कभी देखा ही नहीं था। दोनों पति-पत्नी उसको अपने बच्चों जैसा प्यार करते थे। रोज़ाना वह स्कूल जाने लगी। उसने अपना नाम गुंजन ही लिखवाया था। घर के राशनकार्ड पर यही नाम लिखा था।

समय का पहिया लगभग बारह साल आगे बढ़ गया था। महतो अब इस दुनिया में नहीं थे। चंपा घर की सारी देखभाल करती थी। उसके सभी बच्चे पार लग चुके थे। गुंजन ही बाकी थी। लेकिन उसने साफ मना कर दिया था ब्याह के लिए। वह जानती थी कि

उसका सुहाग घाघरा की गोद में है। वह सेंदुर टिकुली कुछ नहीं लगाती थी। इस समय वह अर्थशास्त्र में शोध कर रही थी। उसकी पढ़ाई का सारा खर्चा विश्व विद्यालय उठा रहा था। साथ में वह पार्ट टाइम नौकरी करके चंपा की आर्थिक सहायता भी करती रहती थी। अम्मा की बहुत याद आती थी। कहां होंगे सब? कोई भूला तो नहीं होगा ना? कभी कभी वह बेचैन हो जाती थी। कैसे पता लगाये?

आये दिन वह कोई ना कोई इंटरव्यू दिया करती थी। इसी सिलसिले में एक दिन वह बहराइच की 'जीडी एण्ड कम्पनी' में साक्षात्कार के लिए गई थी। वहां जो शख़्स उससे बात कर रहा था कुछ ज़्यादा ही उससे मुतास्सिर था। उसका रिकार्ड प्रभावित करने वाला था और इंटरव्यू भी काफ़ी अच्छा गया था। फ़ोन द्वारा सूचना देने की बात कह कर उसको वापस भेज दिया गया। गुंजन को पता चला कि जो युवक उससे बातें कर रहा था ये कम्पनी उसी की थी। वहां के लोग उसको जीडी सर बुलाते हैं। गुलाबो के जाने के बाद जीडी ने अपने डायरेक्टरों से बात कर के नियुक्ति पत्र गुंजन को पोस्ट करने का निर्देश दे दिया।

पता नहीं क्यों आज जीडी को नींद नहीं आ रही थी। इस लड़की में उसे गज़ब की क़शिश लग रही थी। उसने अभी तक दूसरा ब्याह नहीं किया था। घर में तो उस बस हादसे के बाद कोई बचा ही नहीं था। अम्मा और बहनें थीं, बहनों की शादी हो चुकी थी। उसको कभी किसी लड़की में इतनी दिलचस्पी नहीं हुई थी जितनी गुंजन के लिए हो रही थी। बेचैनी जब हद से ऊपर हो गई तो उसने अलमारी से एक फोटो निकाल ली जो उसके ब्याह के गोदना के समय ली गई थी। चित्र में उसके मां, पिताजी, गुलाबो के अम्मा बाबू थे, बीच में घूंघट काढ़े गुलाबो बैठी थी। उसने फोटो वहीं मेज पर रख दी और फाइल खोल कर काम करने लगा।

उधर गुंजन भी जीडी के आकर्षण से बच नहीं पाई। उसको भी एक रुहानी एहसास हो रहा था। दो दिन बाद उसको नियुक्ति पत्र मिल गया था। गोंडा से बहराइच रोज आना जाना सम्भव नहीं था। इसलिए कम्पनी की तरफ़ से मिले हुए घर में वह और चंपा शिफ्ट हो गये थे। आर्थिक समस्याओं का समाधान हो गया था। एक दिन काम के दौरान जीडी ने उसके जले हुये हाथ और आधा सतिया देख कर उसके बारे में पूछ लिया। लेकिन गुंजन ने कुछ भी नहीं बताया। उसकी कार्यशैली से सब बहुत प्रभावित थे।

एक दिन ख़बर आई कि जीडी सर की मां को दिल का दौरा पड़ा है, वह अस्पताल में थीं। घर में कोई ना होने की गरज से ऑफ़िस का स्टाफ़ वहां पहुंच गया। सबने मुस्तैदी से सब संभाल लिया। गुंजन ने अपनी मां की तरह ही उनकी देखभाल की। लेकिन वह अभी हॉस्पिटल में ही थीं। कुछ दिनों बाद एक सेमिनार होने वाला था। उसकी फ़ाइल घर में थी, जो कि बहुत अर्जेंट थी। जीडी मां को छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने ड्राइवर के साथ गुंजन को घर भेज दिया कि फ़ाइल और संबंधित डाक्यूमेंट्स उसके कमरे में घर पर रखे हैं। वह लेती आये।

गुंजन सीधे उनके कमरे में चली गई। मेज पर बहुत काग़ज़ पत्तर फैले थे। उसने फ़ाइल के साथ एक एक काग़ज़ संभाल कर उठाया। अचानक से उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं। सामने एक फोटोग्राफ पड़ा था। वह जड़वत खड़ी रह गई। जल्दी जल्दी उसने पूरी फ़ाइल देखनी शुरू की, कि शायद कुछ और सुराग हाथ लग जाये। एक जगह किसी दस्तावेज के नीचे लिखा था, गोबिंद दुबे, पुत्र स्व परमेसर दुबे। अब शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। ये घर उसकी मंजिल था। कांपते हाथों उसने सब उठाया और गाड़ी में आकर बैठ गई।

अस्पताल पहुंच कर उसने जीडी को पूरी फ़ाइल पकड़ा दी। उस समय वह अकेले थे। मौका देख कर उसने पूछ ही लिया, 'सर, आप बाभन टोले के मुखिया पं परमेसर दुबे के बेटे हैं? जिनकी बारात घाघरा में समा गई थी, सब हताहत हो गये थे? अब चौंकने की बारी जीडी की थी। 'कौन हो तुम? कैसे जानती हो ये सब?'

उसने अपना जला हुआ हाथ आगे कर दिया। बताया कि उसका घर का नाम गुलाबो है लेकिन न्योते पर गुंजन छपा था। उसने शायद देखा नहीं होगा। गुलाबो ने अपने गले में पड़ा हुआ ताबीज उसकी हथेली में रख दिया। इसे जीडी की बड़ी मां ने गोदने के समय पहनाया था। गोबिंद की आंखों से लगातार आंसू बहे जा रहे थे। उसने जल्दी से ताबीज़ खोल दिया उसमें दोनों तरफ़ एक दूसरे की तस्वीरें लगी थीं। दुख के बादल छंट चुके थे। आज गुलाबो को अपनी अम्मा की कही बात याद आ रही थी कि, 'बिटिया हमरी एक बात गांठि बांधि लेओ, के धीरज की डार मा मेवा फरत है।' आज उनकी बात सच साबित हो गई। उसका नियंता निर्दयी नहीं था। ●●●

द मून फेरी

वर्षा पटेल,
ब्रुकलिन स्कूल देहरादून

एक समय की बात है। इटली के एक शहर में एलिना नाम की एक बुद्धिमान युवती रहती थी। वह बहुत उदार, दयालु और चतुर थी लेकिन दुर्भाग्य से गरीब थी, लेकिन वह हमेशा दूसरों की मदद करने की कोशिश करती थी और कहती थी कि उन्हें इसकी उससे ज्यादा जरूरत है। एक दिन उसकी मुलाकात एक पारी से हुई जो उसके अच्छे स्वभाव की वजह से वहां आई थी पारी ने अलीना से कहा " मैं तुम्हारे अच्छे स्वभाव से परिचित हूं और मुझे यह भी पता है कि तुम बहुत गरीब हो पर मैं तुम्हें एक सुनहरा घड़ा दूंगी जिससे तुम्हारी हर एक मनोकामना पूरी होगी परंतु उसे पाने के लिए तुम्हें पाताल में रहने वाली दुष्ट चुड़ैल का सामना करना होगा।" यह सुनकर अलीना बहुत खुश हुई और चुड़ैल का सामना करने के लिए तैयार होती है। अगले दिन वह परी फिर से उसके पास आई और कहा "क्या तुम दुष्ट चुड़ैल का सामना करने के लिए तैयार हो ?" एलिना ने उत्सुकता से कहा "हां बिल्कुल।"

परी उसे पाताल लोक पहुंचा देती है अचानक ही अलीना चुड़ैल के महल में प्रवेश करती है जहां पर वह देखी है कि चुड़ैल सो रही है। उसके बगल में एक बकरी रो रही थी। जब वह बकरी से पूछती है कि "वह क्यों रो रही है?" बकरी जवाब देती है कि "आज यह चुड़ैल मुझे खा जाएगी।" अलीना बकरी को उठती है और बाहर जाकर उसे आजाद कर देती है आगे चलकर कुछ लोगों से पूछताछ करने पर उसे पता चलता है कि उसे एक जादूगरनी से श्राप मिला था इसलिए वह चुड़ैल बन चुकी है और उसके हार् को तोड़ने से वह श्राप तोड़ा जा सकता है। यह सुनते ही अलीना उसके महल की तरफ भागती है और देखते हैं कि वह चुड़ैल अपनी नींद से जाग चुकी है वह जाकर उसके हर को अपने धनुष से तोड़ देती है। तभी वह चुड़ैल एक राजकुमारी में बदल जाती है और अलीना का धन्यवाद करती है। तभी वहां पर वही परी आती है और कहती है " बहुत अच्छे अलीना।" वह कहते हुए परी उसे वापस इटली पहुंचा देती है और उसे वह जादुई घड़ा देती है और अपने जादुई छड़ी से वह उसे चांद की परी बना देती है और कहती है कि "तुम रात के समय सब की देखभाल करोगी।" उसे दिन के बाद से वह हजार सालों के लिए रात को धरती पर राज करती है। ●●●

नया साल सिर्फ़ जश्न नहीं आत्म-परीक्षण और सुधार का अवसर भी।

प्रियंका सौरभ

31 दिसम्बर की आधी रात को हम 2024 को अलविदा कह देंगे और कैलेंडर 1 जनवरी यानी 2025 के नए साल के दिन के लिए अपना नया पन्ना खोलेगा। उतार-चढ़ाव, मजेदार पल और कुछ ख़ास नहीं-यह सब अब अतीत की बात हो जायेंगे। हम एक नए साल के मुहाने पर खड़े हैं, जो हमारे सामने आने वाली हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है। हवा में उत्साह और चिंतन की गूंज है, जैसे पुरानी यादों और उम्मीदों का एक बेहतरीन मिश्रण। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि जीवन विरामों के बीच में ज़िया जाता है-जैसे कि सांस छोड़ने के ठीक बाद और सांस लेने से पहले। हर अंत बस एक और शुरुआत है। वास्तव में इसे महसूस करने के लिए साल के पहले दिन से बेहतर कोई समय नहीं है।

एक नया साल एक नई शुरुआत है। यह एक नए जन्म की तरह है। नया साल शुरु होते ही हमें लगता है कि हमें अपने जीवन में बदलाव करने, नईराह पर चलने, नए काम करने और पुरानी आदतों, समस्याओं और कठिनाइयों को अलविदा कहने की ज़रूरत है। अक्सर हम नई योजनाएँ और नए संकल्प बनाने लगते हैं। हम उत्साहित, प्रेरित और आशावान महसूस कर सकते हैं, लेकिन कभी-कभी आशंकित भी होते हैं। कवियों और दार्शनिकों ने अक्सर दोहराया है कि भविष्य में जो कुछ भी करना है, उसमें जीवन ने जो सबक हमें सिखाया है, उसे लागू करना ज़रूरी है। लेकिन यह कहना जितना आसान है, करना उतना ही मुश्किल है। लोग एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हैं। संदेश, ग्रीटिंग कार्ड और उपहारों का आदान-प्रदान नए साल के जश्न का अभिन्न अंग है। मीडिया कई नए साल के कार्यक्रमों को कवर करता है, जिन्हें दिन के अधिकांश समय प्राइम चैनलों पर दिखाया जाता है। जो लोग घर के अंदर रहने का फ़ैसला करते हैं, वे मनोरंजन और मौज-मस्ती के लिए इन नए साल के शो का सहारा लेते हैं।

नया साल सिर्फ़ जश्न मनाने का समय नहीं है, बल्कि आत्म-परीक्षण और सुधार का अवसर भी है। अतीत की गलतियों से सीखते हुए हमें अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का

प्रयास करना चाहिए। आइए हम अपने लक्ष्यों को स्पष्ट करें और उन्हें प्राप्त करने की योजना बनाएँ। आइए हम नकारात्मकता को पीछे छोड़ें और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएँ। आइए हम ज़रुरतमंदों की मदद करके समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँ। आइए हम आत्म-विकास के लिए प्रयास करते रहें और नई चीज़ें सीखते रहें। लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं और मौज-मस्ती से भरी गतिविधियाँ करते हैं जैसे गाना, खेलना, नाचना और पार्टियों में जाना। नाइट क्लब, मूवी थिएटर, रिसॉर्ट, रेस्टोरेंट और मनोरंजन पार्क हर उम्र के लोगों से भरे हुए हैं। आने वाले साल के लिए नए संकल्पों की योजना बनाने की सदियों पुरानी परंपरा आम है। कुछ सबसे लोकप्रिय संकल्पों में वज़न कम करना, अच्छी आदतें विकसित करना और कड़ी मेहनत करना शामिल है। आज के समय में, जब पर्यावरण के मुद्दे एक गंभीर चिंता का विषय हैं, तो पर्यावरण के प्रति संवेदनशील तरीकों से नए साल का जश्न मनाना हमारी जिम्मेदारी बन जाती है। पटाखों का उपयोग कम करना, पेड़ लगाना और जल संरक्षण इस दिशा में सकारात्मक क़दम हो सकते हैं।

नया साल हमें अतीत की कड़वाहट को भूलकर नए रिश्ते शुरु करना सिखाता है। आइए हम एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सद्भावना व्यक्त करें। आइए हम उन लोगों को सही रास्ते पर लाने का प्रयास करें जो अपना रास्ता भूल गए हैं। भगवद गीता में भगवान कृष्ण की शिक्षाएँ हमें याद दिलाती हैं कि हमें अपना काम करना चाहिए और परिणाम भगवान पर छोड़ देना चाहिए। नया साल सिर्फ़ कैलेंडर बदलने के बारे में नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन को एक नई दिशा देने का अवसर है। यह नई ऊर्जा, उत्साह और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने का समय है। आइए हम सब मिलकर इस नए साल को अपने और समाज के लिए बदलाव का साल बनाएँ। अब, सभी चमक-दमक के बीच, नए साल का दिन कुछ गंभीर सोच-विचार का भी समय है। हाँ, हम आत्मनिरीक्षण के बारे में बात कर रहे हैं-पिछले साल को पीछे देखते हुए और यह पता लगाते हुए कि हमने क्या सीखा है। क्या हमने आखिरकार मकड़ियों के डर पर विजय प्राप्त की? क्या हमने उन लोगों के साथ पर्याप्त समय बिताया जो सबसे ज़्यादा मायने रखते हैं? यह कुछ हद तक हमारे जीवन की मुख्य घटनाओं को स्क्रॉल करने और यह सोचने जैसा है, "वाह, क्या मैंने वाकई ऐसा किया?" एक पेड़ लगाएँ, अपने भविष्य के लिए एक पत्र लिखें, या बोर्ड गेम का लुत्फ़ उठाएँ। इसे अपने लिए अनोखा बनाएँ और हर साल इसका इंतज़ार करें।

अब, इस तरह से आप एक परंपरा की शुरुआत कर सकते हैं! नए साल के दिन सोच-समझकर उपहार देकर प्यार फैलाएँ। यह क़ीमत के बारे में नहीं बल्कि इशारे के पीछे की भावना के बारे में है। एक हस्तलिखित नोट, एक व्यक्तिगत ट्रिंकेट, या एक हार्दिक संदेश दुनिया भर में अंतर ला सकता है जब आप उन लोगों के लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हैं जो सबसे ज़्यादा मायने रखते हैं। अक्सर, हम या तो इसे महसूस नहीं करते या इसे स्वीकार करने से इनकार करते हैं और एक ऐसी कहानी लिखने की कोशिश करते हैं जो पहले ही ख़त्म हो चुकी है। ऐसे समय में हमें याद रखना चाहिए कि कभी-कभी क़लम को नीचे रखना ठीक होता है। बंद दरवाज़े से जूझना ठीक नहीं है। इससे चिपके रहने से आप दूसरी तरफ़ की खिड़की को देख नहीं पाते। जैसा कि माइंडफुलनेस प्रैक्टिशनर कहते हैं, सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि नए सिरे से शुरुआत करने के लिए आपके पास मौजूद पल से बेहतर कोई समय नहीं है। नए साल की सुबह, सबसे अच्छी स्थिति में, केवल सही सेटिंग ही बना सकती है; बाकी, जैसा कि वे कहते हैं, सब आपके भीतर है। हालाँकि, आप नए साल के दिन 2025 को धूम मचाने का फ़ैसला करते हैं, इसे यादगार बनाते हैं। ऐसे नाचें जैसे कोई देख नहीं रहा हो, ऐसे हँसें जैसे यह अब तक का सबसे अच्छा मज़ाक हो और अपने दोस्तों को ऐसे गले लगाएँ जैसे आपने उन्हें एक दशक से नहीं देखा हो। क्योंकि अंदाज़ा लगाइए क्या? 2025 आपका चमकने का साल है। तो, आइए इसे यादगार बनाएँ, इसे यादगार बनाएँ और इसे ख़ास बनाएँ! नई शुरुआत के जादू के लिए चीयर्स! ●●●

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में टीम इंडिया का शर्मनाक प्रदर्शन

गंभीर के नाम जुड़ी नाकामी की एक और दांस्ता

कुशाग्र सिंह

राहुल द्रविड की जगह पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर को जब टीम इंडिया का कोच इस सोच के साथ बनाया गया था कि वे टीम इंडिया को और भी बुलंदी पर पहुंचाने का काम करेंगे। हालांकि गंभीर को टीम का मुख्य कोच नियुक्त करने में बीसीसीआई के सभी लोग सहमत नहीं थे, लेकिन केकेआर को आईपीएल का खिताब जीताने वाले गंभीर उस वक्त राहुल द्रविड के विकल्प के रुप मे उभरे थे। और यही कारण रहा कि बीसीसीआई के तत्कालीन सचिव जयशाह ने उनके पक्ष में थे। और इस तरह गौतम टीम के मुख्य कोच बने, लेकिन उनकी कोचिंग में वह गंभीरता नहीं दिखी, जिसकी उम्मीद की जा रही थी। जानकार मानते है कि आस्ट्रेलिया दौरे पर टीम इंडिया की हार के मुख्य कारण अगर रोहित और कोहली रहे तो मुख्य कोच गौतम गंभीर भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। जैसा कि उल्लेखनीय है कि गौतम गंभीर टीम इंडिया के कोच तो बन गए, लेकिन लगातार टीम इंडिया के साथ मिल रही है नाकामी, टीम इंडिया और उनकी कहानी बन कर रह गई। कोच गौतम गंभीर तेवर से कई बार ज़रुर तीखे नज़र आते हैं। कड़े फैसले लेने की बात भी करते हैं। लेकिन उनके नाम नाकामियों की फेहरिस्त लंबी हो गई है। 27 साल बाद श्रीलंका के खिलाफ वनडे सीरीज़ में हार, 36 साल बाद न्यूज़ीलैंड से घरेलू सीरीज़ में हार, 12 साल बाद घरेलू टेस्ट सीरीज़ में हार, 10 साल बाद बॉर्डर गावस्कर सीरीज़ में हार और वर्ल्ड टेस्ट सीरीज़ के फाइनल में पहुंचने में नाकामी। ऐसे में यही कारण रहा कि पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने चैपियंस सीरीज के बाद कोचिंग स्टाफ को लेकर भी सवाल पूछे जाने की ज़रुरत है। गवास्कर ने तो यहां तक कह दिया कि जब टीम इंडिया के बल्लेबाज लगातर खराब प्रदर्शन कर रहे थे, तो तब मुख्य कोच गंभीर के नेतृत्व में टीम का कोचिंग स्टाफ आखिरकार क्या कर रहा था?

मालूम हो कि ऑस्ट्रेलियाई टीम ने बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के तहत खेली गई 5 मैचों की घरेलू टेस्ट सीरीज में भारतीय टीम को 3-1 से करारी शिकस्त दी है। सीरीज का पांचवां यानी आखिरी टेस्ट सिडनी में खेला गया, जिसके तीसरे दिन (5 जनवरी) ही ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट से जीत दर्ज कर सीरीज अपने नाम कर ली। इस पूरी सीरीज में खेल के साथ-साथ विवाद भी काफी चर्चाओं में रहे हैं। चाहे वो मोहम्मद सिराज और ट्रेविस हेड का आपस में भिड़ना हो, या फिर 19 साल के कंगारु बल्लेबाज सैम कोंस्टास का विराट कोहली से पंगा लेना हो। इन सबके बीच भारतीय सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल का भी कैच आउट काफी विवादास्पद रहा है। इस दौरान तो डीआरएस (डिसीजन रिव्यू सिस्टम) और तीसरे अंपायर तक को आलोचनाओं का आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा। और तो और टीम इंडिया खासतौर से उसके ड्रेसिंगरुम में सबकुछ ठीक न होना। मुख्यकोच गंभीर और कप्तान रोहित के बीच तनातनी ने टीम इंडिया की आस्ट्रेलिया में हार की पटकथा लिखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विदित हो कि सिडनी टेस्ट में 6 विकेट से हार लंबे समय तक याद रहेगी। कई मायने में भारतीय क्रिकेट का दर्द बढ़ाती रहेगी। ये टीस देर तक भारतीय फैंस महसूस करते रहेंगे। भारत को 3-1 से सीरीज़ में हार का सामना करना पड़ा। बॉर्डर- गावस्कर ट्रॉफी हाथ से गई। लगातार तीसरी बार वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल खेलने से चूके। सबसे बड़ी बात ये भी हुई कि जीत के कई मौके मिले, लेकिन नए साल में टीम इंडिया हार के साथ लौटी। कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि आस्ट्रेलिया में खेली गई बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के दौरान टीम इंडिया का प्रदर्शन बहुत ही निराश करने वाला रहा। जिस पर डालते हैं एक नजरः-

कहा जा रहा है कि टीम इंडिया के धाकड़ बल्लेबाजों के फ्लॉप प्रदर्शन के कारण टीम इंडिया को शर्मनाक हार का सामना करना। विदित हो कि 10 पारी में 3 भारतीय शतक, बॉर्डर-गावस्कर सीरीज के पहले टेस्ट मैंच में यशस्वी जायसवाल और विराट कोहली ने शतकीय पारी खेली और भारत ने पर्थ में ऑस्ट्रेलिया को 295 रन से हराकर धमाकेदार शुरुआत की। इनमें

एक शतक निचले क्रम की ओर से नीतीश रेड्डी ने भी लगाया जो बोनस की तरह ही आया। लेकिन इसके बाद विराट कोहली, रोहित शर्मा और सभी टॉप और मिडिल ऑर्डर में फ्लॉप रहे। कप्तान रोहित के साथ-साथ पूर्व कप्तान विराट कोहली ने किया सबको निराश। विराट कोहली ने पर्थ में शतक लगाया लेकिन उसके बाद 8 पारियों में उनके नाम 90 रन रहे। विराट ने ऑस्ट्रेलिया में 100, 5, 7,11, 3, 36, 5, 17, 6 रन बनाये। ऐसे में पूर्व टेस्ट क्रिकेटर इरफान पठान विराट कोहली के निराशा जनक प्रदर्शन पर सवाल उठाते हुए कहा कि मैंने भी दस साल टेस्ट खेली है। कई बड़े खिलाड़ियों को आउट किया और कई बार मार भी खायी। मैंने किसी खिलाड़ी को इस तरह आउट होते नहीं देखा। उन्होंने ये भी सवाल उठाया कि आपने विराट कोहली को आखिरी बार कब रणजी मैच खेलते देखा गया है। पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा कि 23 जनवरी से रणजी ट्रॉफी शुरु होने वाली है। मैं देखना चाहूंगा कि कौन से खिलाड़ी रणजी में जाकर प्रैक्टिस करते हैं। यहां तक कि कोच गौतम गंभीर ने भी कहा, घरेलू क्रिकेट में जाकर रेड बॉल क्रिकेट खेलना सबके लिए ज़रुरी होना चाहिए। इन सबने सीधे और परोक्ष रूप से विराट को भी रणजी खेलने पर ज़ोर दिया है। अगर टीम के कप्तान रोहित की बात की जाए तो रोहित कभी नीचे, कभी ऊपर, कभी बाहर रहे। कप्तान रोहित शर्मा पर्थ टेस्ट के लिए निजी वजहों से नहीं पहुंचे। एडिलेड में रोहित पांचवें नंबर पर गए। केएल राहुल ने पर्थ, ब्रिसबेन और एडिलेड में यशस्वी के साथ ओपनिंग की। लेकिन मेलबर्न में रोहित शर्मा वापस ओपनिंग के लिए आए और केएल राहुल को तीसरे नंबर पर आना पड़ा। भारतीय बैटिंग का ऑर्डर का लय बिगड़ा और खेल बिगड़ता गया। रोहित ने सिडनी टेस्ट से पहले खुद को ड्रॉप कर इतिहास बनाया। रोहित शर्मा ने बांग्लादेश, न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 16 पारियों में 2024-25 में सिर्फ एक अर्द्धशतक लगाया। बाक़ी 15 पारियों में उनका स्कोर 25 से भी कम रहा है। बांग्लादेश के खिलाफ रोहित ने बनाए 6,5, 23 और 8 रन। न्यूज़ीलैंड के खिलाफ बनाए 2, 52, 0, 8, 18, 11 रन। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में तो सिर्फ एक बार उनके बल्ले ने दहाई का अंक देखा, जहां उनके रन रहे 3,6,10,3 और 9 रन। उन्होंने खुद को सिडनी में ड्रॉप कर मिसाल तो रखी. लेकिन आगे उनका क्रिकेट कितना लंबा होगा, ये सवाल बरकरार है।

मेल्बर्न में आखिरी सत्र में गिरे 7 विकेट, मेलबर्न टेस्ट की दूसरी पारी में ऑस्ट्रेलिया को 234 पर समेट कर गेंदबाज़ों ने भारतीय टीम के लिए जीत का एक मौका बनाया। भारत को आखिरी दिन जीत के लिए लक्ष्य मिला 340 का। यशस्वी जायसवाल के 84 के अलावा ऋषभ पंत के बल्ले से 30 रन आए। बाकी 9 खिलाड़ियों ने 10 से भी कम बनाए। रोहित शर्मा 9, केएल राहुल 0, विराट कोहली 5, रविंद्र जडेजा ने 2 और नीतीश रेड्डी 1 रन बना सके. ऐसे में जीत कैसे मुमकिन हो सकती थी?

अगर टीम इंडिया की गेंदबाजी की बात की जाए तो मोहम्मद शमी की कमी खूब खली। बुमराह ने सीरीज में 13 के औसत से 32 विकेट निकाले। वे ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को डराते रहे, पैवेलियन भेजते रहे। लेकिन मोहम्मद शमी की कमी ने उन्हें अकेला कर दिया। प्रसिद्ध कृष्णा का इस्तेमाल किया भी तो देर हो गई। इसके अलावा मोहम्मद सिराज की गेंदबाजी में जोर धार व तेजी है, उसके बाद भी वे नाकाम रहे और टीम के लिए एक बोझ साबित हुए। वहीं पूरी सीरीज में टीम का चयन सही नहीं रहा। वाशिंगटन सुंदर, प्रसिद्ध कृष्णा, शुभमन गिल और नीतीश की भूमिका कभी तय ही नहीं रही। पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर कहते हैं, तीसरे नंबर पर शुभमन गिल नहीं चले, तो बैटिंग मजबूत करनी थी। टीम में बॉलिंग ऑलराउंडर से उम्मीद करते रहे, जबकि बैटिंग को मजबूत करने की ज़रूरत थी। टीम मैनेजमेंट से बड़ी चूक होती रही, भारत मैच हारता रहा। तीन मैच की पांच पारियों में टॉप ऑर्डर में तीसरे नंबर पर खेलते हुए शुभमन गिल ने बनाए 93 रन। 18.6 का औसत और एक भी अर्द्धशतक नहीं। शुभमन लगातार फ्लॉप होते रहे। टीम मैनेजमेंट इसका तोड़ नहीं निकाल सकी। गावस्कर कहते हैं, कोचिंग स्टाफ से भी पूछना चाहिए उन्होंने क्या किया?

सिडनी टेस्ट से पहले टीम इंडिया की दुविधा साफ तौर से दिखी। कप्तान रोहित टीम बाहर से बाहर थे लेकिन विपक्षी टीम आस्ट्रेलिया को ठोस संदेश नहीं था। सिडनी टेस्ट से पहले कोच गौतम गंभीर प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए तो आए। लेकिन उनके पास विपक्ष के लिए जवाब और तेवर से कहीं अधिक अपनी टीम के लिए सवाल थे। ऑस्ट्रेलिया की टीम मैच से पहले माइंड गेम्स जीतती नज़र आई। बाकी की टीम इंडिया की मुश्किलें सिडनी में भी हल होती नहीं नज़र आईं। ●●●

इन लखनवी व्यंजनों के आगे फीके है फास्ट फूड

विकास शुक्ला

उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा सूबा है। और इस सूबे की राजधानी है लखनऊ, जो अपने देश सहित सारी दुनिया में नवाबों के शहर, अपनी नजाकत, नवासत और गंगा जमुनी तहजीब के लिए मशहूर है। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि लखनऊ शहर अपने लज़ीज़ खानों और उसके जायके के लिए भी मशहूर है। आमधारणा है कि तरह-तरह के खानों का शौक रखने वालों के लिए लखनऊ उनका प्रिय शहर माना जाता है। यही वजह है कि सुबह से शाम ही नहीं, बल्कि देर रात तक लखनऊ की रौनक उन जगहां पर देखने ही बन पड़ती है, जहां होटल, रेस्टोंरेट व दूसरे अन्य खाने-पीने की दुकानें, स्टॉल या स्ट्रीट फूड्स की कतारें इत्यादि होती है। लखनवी खानों और उसके शौकिनों भारी-भरकम भीड़ पर एक कहावत मशहूर है कि जिसके तहत यह कहा जाता है कि क्या यहां की औरतें खाना नहीं बनाती है। जबकि खानों की शौकिनों में औरते और युवा लड़कियां भी किसी से पीछे नहीं हैं। यहां पर एक बात और रेखांकित करनी जरुरी है वह यह कि चूंकि प्राचीन शहर लखनऊ की पहचान नवाबों के शहर के रुप में हासिल है तो ऐसे में लखनऊ में अकेले नावेज ही नहीं, बल्कि वेज खानों और उसके जायकों के लिए मशहूर होटल और दुकानें है, जहां खाने के शौकिन बरबस ही खींचे चले जाते हैं। हालांकि डाइटिंग और अपनी सेहत के प्रति फ्रिकमंद रहने वाली एक बड़ी जमात ज्यादा तेल मसाला, चटपटा और तीखा खाने से परहेज करती है। अब यह बात अलग है कि लखनऊ के वेज और नावेज खानों का स्वाद ही कुछ ऐसा है कि उपरोक्त वर्ग भी अपनी जबान का जायका बदलने से परहेज नहीं करता है। और हां! यहां यह भी बताना जरुरी है कि लखनऊ में जिस तेजी से आबादी बढ़ी है तो उसी रफ्तार से खानों के

अमीनाबाद स्थित प्रकाष कुल्फी।

चौक चौराहे पर बिकता मक्खन

चौक स्थित राजा ठंडाई

होटल और रेस्टोरेंट भी खुले हैं।

हम अपने इस आलेख में राजधानी लखनऊ में मिलने वाले वेज और नावेज खानों पर कुछ प्रकाश डालते हैं। सुबह के नाश्ते की अगर बात करे तो लखनऊ का सबसे मशहूर नाश्ता है- पूड़ी, सब्जी और दही जलेबी। जो शायद ही लखनऊ की कोई ऐसी सड़क या छोटी से छोटी गली न हो जहां पूड़ी, सब्जी और दही जलेबी की दुकानें न हो। ऐसी ही एक बहुत ही मशहूर और बहुत पुरानी दुकान है अमीनाबाद थाने के सामने नेतराम की। जिसका बहुत पुराना इतिहास है। कहा जाता है कि लाला नेतराम ने अपनी दुकान की शुरुआत इलाबाद से की थी। बाद में लखनऊ में उन्होंने 1854 में अपनी दुकान शुरु की। जिसको अब करीब 170 हो गए हैं। और नेतराम की छठी पीढ़ी इस दुकान का संचालन कर रही है। जहां सुबह साढे सात बजे से रात साढ़े नौ बजे तक शुद्ध देसी घी से निर्मित पूड़ी कई तरह की सब्जी, रायता और आम या फिर इमली का गलके के साथ ताल पूरी शुद्धता के साथ परोसा जाता है। और इसी के साथ दही जलेबी और इमरती भी नेतराम की दुकान का एक अलग ही स्वाद प्रदान करती है। बहुत से लोग इमरती को मलाई या फिर रबड़ी के साथ खाना पसंद करते है। नेतराम की दुकान से गुजरने से लेकर दूर तक शुद्ध देसी घी की महक राहगीरों को एक नया ही एहसास करती है। इस दुकान मे प्याज और लहुसन का प्रयोग नहीं किया जाता है। इस दुकान में नाना प्रकार की मिठाई भी आपको मिलेगी। लोग बहुत चाव से इसी दुकान में बैठ कर मिठाइ्यों का आनंद लेते हैं। नेतराम की दुकान में गाय के शुद्ध देसी घी छेने की मिठाई बनती है। जिसका एक अलग ही स्वाद होता है। जबकि अधिकांश लोग भैस के दूध की मिठाई बनाते हैं। मैं अपने पाठकों को यह बताता दूं कि नेतराम की यह वह मशहूर दुकान है जहां के खाने व स्वाद के प्रशंसक पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई जैसे दिग्गज रहे हैं। व देश के वर्तमान रक्षामंत्री राजनाथ भी इसी सूची में शामिल है। जो अक्सर यहां आते रहते हैं। संभवता यह बात बहुत कम लोगां को मालूम होगी कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री और लखनऊ से लंबे यानि 1991 से लेकर 2024 तक सांसद रहने वाले अटल बिहारी वाजपेई ने एक अच्छा-खासा समय लखनऊ में उस वक्त गुजारा है, जब वे अमीनाबाद के गड़बड़झाला बाजार के पास एक बहुत पुराने मकान में रहते थे। अटल जी खाने के बहुत शौकिन थे। फिर चाहे वह नेतराम की

पुराने लखनऊ राजाबाजार स्थित
अच्छे भाई के कुल्चे-नहारी का होटल

दुकान के व्यंजन हो या फिर लखनऊ की मशहूर चाट, चौक स्थित राजा की ठंडाई या फिर राजाबाजार की मशहूर त्रिवेदी मिश्ठान भंडार की दूध की बर्फी। अटल जी इन उपरोक्त चीजों को बहुत ही चाव खाते थे। कहा जाता है कि जब वे देश के प्रधानमंत्री बन गए तो वे तब भी त्रिवेदी मिष्ठान भंडार की दूध की बर्फी मांगवाते थे। और जिसे ले जाने का यह काम प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ नेता लालजी टंडन और लखनऊ के तत्तकालीन मेयर रहे डॉ. दिनेश शर्मा करते थे।

अब बात लखनऊ के हीवेट रोड स्थित रत्तीलाल खस्ते की दुकान की। जिसकी स्थापना 1937 में लाला रत्तीलाल ने की थी और वर्तमान में उनके परिवार की चौथी पीढ़ी इस दुकान का संचालन कर रही है। जहां की गरम-गरम पूड़ी, बरे और खस्ते दूर-दूर तक मशहूर हैं और साथ में दही जलेबी भी। जो कि सुबह साढे पांच बजे से शाम साढे पांच बजे तक मिलती है और जहां खाने के शौकिन लोगों का तांता लगा रहता है। इस दुकान में भी प्याज और लहुसन का प्रयोग नहीं किया जाता है। पूड़ी सब्जी, खस्ते, बरे या फिर दही जलेबी देखने वाली बात यह है कि रत्तीलाल की दुकान में बहुत ही परंपारिक अंदाज में दोने और पतल में परोसी जाती है। जिसमें खाने का एक अलग ही मजा है। इसी तरह चौक स्थित कचौडी कार्नर भी खाने के शौकिनों को अपनी ओर खींचने में पीछे नहीं है। वहीं कहा जाता है कि अमीनाबाद जाकर जिसने प्रकाश की कुल्फी नहीं खाई, उसका अमीनाबाद जाना अधूरा रहा। अमीबादबाद के चौराहे के पास स्थित प्रकाश कुल्फी की दुकान की स्थापना 1956 में प्रकाश चंद्र अरोड़ा ने की थी। आज इस परिवार की दूसरी और तीसरी पीढ़ी इसको आगे बढ़ाने का काम कर रही है। प्रकाश की कुल्फी की अमीनाबाद के अतिरिक्त तीन और ब्रांच है जो कि चौक, आलमबाग और गोमतीनगर में स्थित है। प्रकाश की कुल्फी का स्वाद कुछ ऐसा है कि शादी ब्याह से लेकर दूसरी अन्य पार्टियों में इन्हें आर्डर दिया जाता है। वहीं वेज खाने के लिए लालबाग स्थित दुर्गामा होटल काफी मशहूर है।

अगर नानवेज खानों की बात करे तो अमीनाबाद से लेकर पुराने लखनऊ के विभिन्न क्षेत्र जैसे मौलवीगंज, नख्सास, चौक और राजाबाजार नानवेज खानों और उसके जायकों के लिए काफी मशहूर है। लखनऊ की चिकन और मटन बिरयानी, कुल्चे-नहारी और कवाब पराठे से लेकर चिकन की अलग किस्में शाममी कवाब, गलावटी कवाब, बोटी कवाब व सींक के कवाब खासतौर से काकोरी सीक के कवाब नाम लेने भर से खानों के शौकिनो के मुंह में पानी लाने का काम करती है। देखने वाली बात यह है कि उपरोक्त नानवेज खाने लखनऊ के बड़े से बड़े होटलों से लेकर सड़क व गलियों में लगे

स्टॉलों पर भी मिलते है, जहां खाने वालों का एक हुजूम देखने को मिलता है। नावेज खाने के शौकिनो के लिए सुबह के नाश्ते में कुल्चे नहारी खासातौर से जाड़े के मौसम में उनकी पहली पसंद होती है। वैसे कुल्चे नहारी सुबह से लेकर देर रात तक बिकती है। जिसके लिए राजाबजार स्थित अच्छे भाई व अकबरी गेट स्थित मोबिन और रहीम का होटल विदेशों तक में मशहूर है और लोग दूर-दूर से खाने के लिए आते हैं। आम दिनों से लेकर रमजान के मौके पर इन होटलों में तिल रखने की जगह नहीं होती है। और इन होटलों की ऑन लाइन सेवा है सो अलग। उसके बाद भी जरा सी देर हो जाए तो लोगों को मायूस होना पड़ता है। राजाबाजार का अच्छे भाई का होटल काफी पुराना है जिसकी स्थापना आज से 70 साल पहले उनके दादा चुन्ने खां ने की थी, जो उनके वालिद मोहम्मद अहमद से होते हुए अब अच्छे भाई के नाम से जानी जाती है, जिनका की वास्तविक नाम गुफरान खान है। इस होटल की खासियत कुल्चे नहारी के साथ गर्म-गर्म गिरदे चर्चा दूर दराज तक होती है। जो बहुत ही खासकिस्म से दूध, मलाई और मैदे से तैयार किया जाता है। दूसरे अन्य मुगलई खाने में अमीनाबाद का आलमगीर होटल और यहीं नजीराबाद में वाहीद चिकन बिरयानी का स्वाद बस पूंछो नहीं। कवाब पराठे के लिए मौलवीगंज स्थित करीम कवाब पराठे का बहुत ही पुराना और मशहूर होटल है। जहां के बंद कवाब काफी प्रचलित हैं। वहीं कवाब पराठे का नाम लेते ही बस एक ही नाम दिल और दिमाग में गूंजता है वह है टुंडे कवाबी। टुंडे के कवाब और पराठे की शुरूआत 1905 में चौक से हाजी मुराद अली ने की। जिनकी अब चौथी पीढी के मोहमद

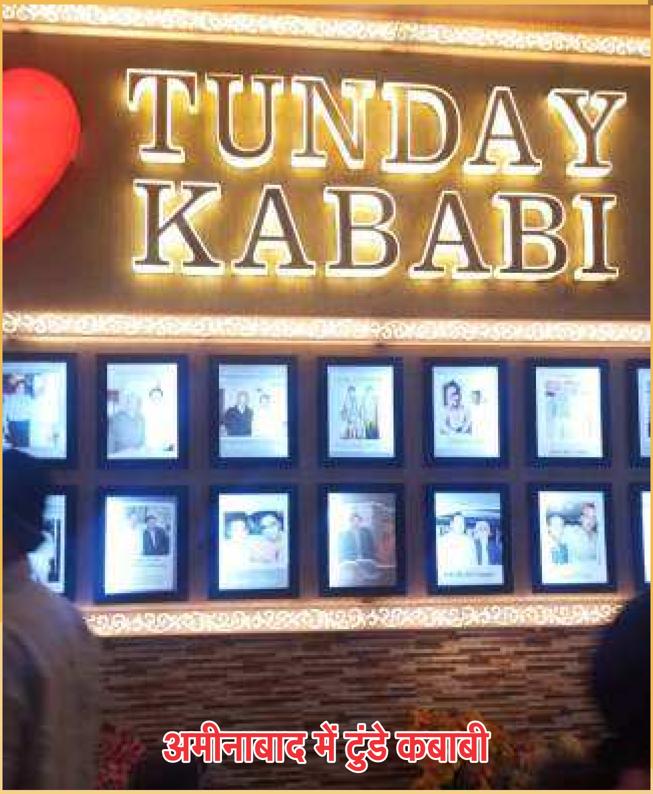

अमीनाबाद में टुंडे कबाबी

उस्मान का अमीनाबाद में बहुत बड़ा होटल है। जहां कवाब पराठों के शौकिन लोगों की भीड़ सुबह से लेकर देर रात तक देखने को मिलती है। जहां न सिर्फ देश से बल्कि विदेशों से लोग जब लखनऊ आते हैं तो एक बार इस होटल के कवाब पराठे खाने जरूर जाते हैं। ऑनलाइन सेवा यहां भी है। यहां कवाब पराठों के अलावा दूसरे अन्य नावेज खाने मटन और चिकन के भी उपलब्ध रहते हैं। जिन्हें बहूत चाव से लोगबाग खाते हैं और लखनवी खाने और उसके जायके को लंबे समय तक याद करते हुए आपस में उसकी चर्चा करने से नहीं चूंकते हैं। अमीनाबाद की टुंडे कवाब की दुकान तो इतनी मशहूर है कि बॉलीवुड के दिग्गज कलाकार जैसे शाहरुख खान, सलमान खान, आमिर खान, सैफ अली खान, अनुपम खेर, जावेद अख्तर से लेकर तमाम दूसरे लोग यहां आ चुके है और कवाब परठां व अन्य खानों का लुत्फ उठा चुके है, और इसमें भारतीय क्रिकेट के पूर्व कप्तान कपिल देव भी शामिल हैं। और अंत में यह बताते चलें कि जाड़े के इस मौसम में लखनऊ में दूध का मक्खन और उसके निकला जो चौक के गोल दरवाजे से लेकर सारे लखनऊ में फेरी वालों के द्वारा जो बेचा जाता है तो ऐसे में क्या बच्चे, क्या बूढ़े और क्या जवान यहां तक कि महिलाओं को यह बहुत ही भाता है। ●●●

चौक स्थित कचौड़ी कार्नर।

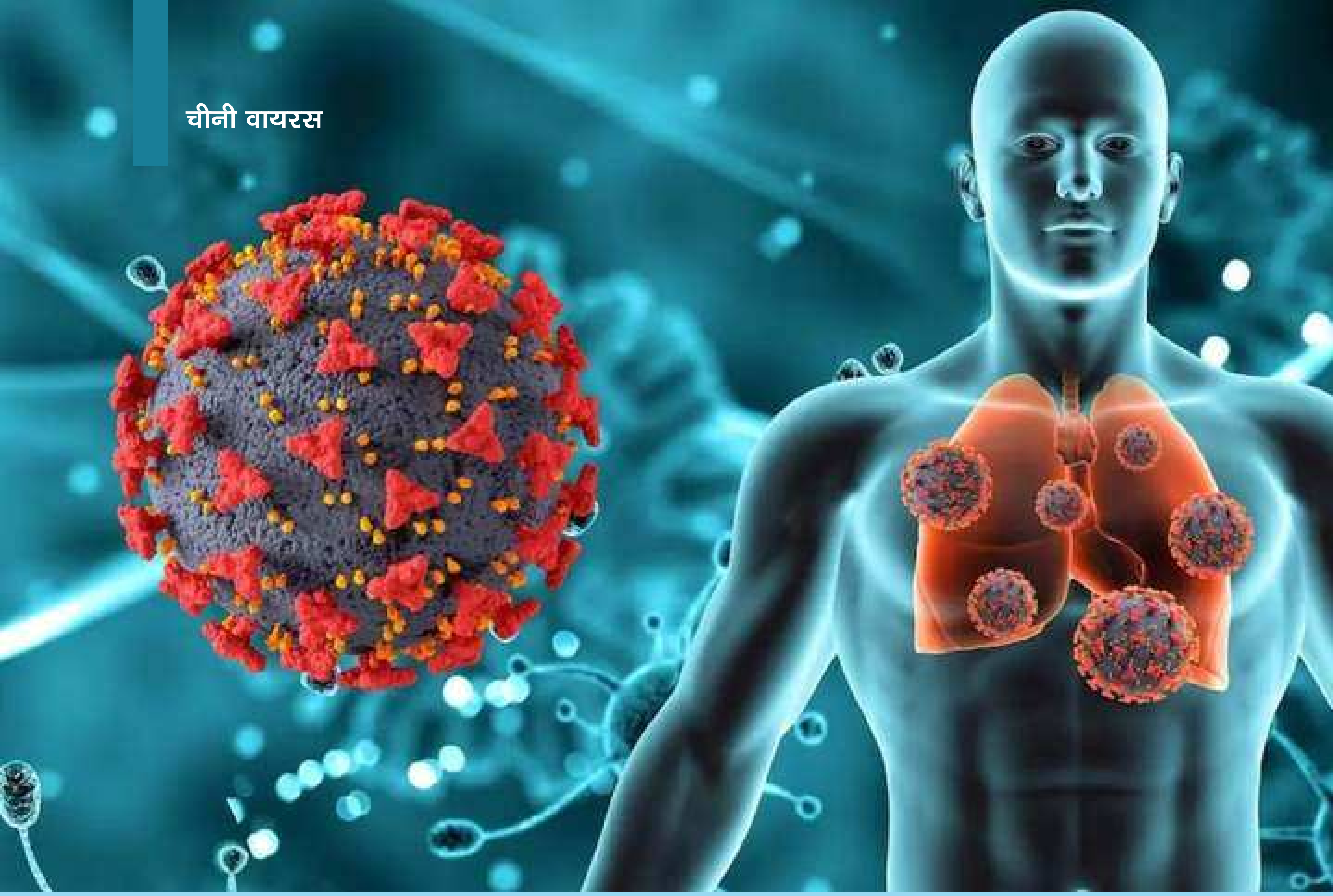

ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस फिर से चिंता में डूबी दुनिया

प्रियंका सौरभ

ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस, न्यूमोविरिडे परिवार का हिस्सा है, यह एक श्वसन वायरस है जो हल्की सर्दी से लेकर निमोनिया और ब्रोंकियोलाइटिस जैसे गंभीर फेफड़ों के संक्रमण तक की बीमारियों का कारण बनता है। हालाँकि फ्लू या रेस्पिरेटरी सिन्सिटियल वायरस की तुलना में कम पहचाना जाने वाला, ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस दुनिया भर में श्वसन सम्बंधी बीमारियों का एक महत्त्वपूर्ण कारण है, खासकर सर्दियों और वसंत के दौरान। यह वायरस विशेष रूप से कमज़ोर आबादी जैसे कि छोटे बच्चों, बुज़ुर्गों, गर्भवती महिलाओं और कमज़ोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों के लिए एक बड़ा जोखिम पैदा करता है। यह वायरस उनके लिए बड़ी मुश्किलें पैदा कर सकता है, इसलिए जागरुकता बढ़ाना और निवारक क़दम उठाना महत्त्वपूर्ण है। शिशु और छोटे बच्चे विशेष रुप से ब्रोंकियोलाइटिस और निमोनिया जैसी गंभीर श्वसन स्थितियों के प्रति संवेदनशील होते हैं।

बड़े वयस्क 65 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्ति, साथ ही अस्थमा या सीओपीडी जैसी पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों में जटिलताएँ होने की संभावना अधिक होती है। गर्भावस्था के दौरान एचएमपीवी के कारण श्वसन सम्बंधी समस्याएँ हो सकती हैं, जो माँ और बच्चे दोनों के स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती हैं। जिन लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली कमज़ोर होती है, चाहे वे किसी चिकित्सा स्थिति या कीमोथेरेपी जैसे उपचार के

कारण हों, उनमें गंभीर लक्षण होने का जोखिम अधिक होता है। चीन में एचएमपीवी के हाल ही में हुए प्रकोप ने इस वायरस की संभावित गंभीरता को उजागर किया है, खासकर कमज़ोर समूहों में। ज़्यादातर संक्रमण 14 साल से कम उम्र के बच्चों में हुआ, जिनमें से कई मामलों में उनकी गंभीरता के कारण अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता पड़ी। लक्षणों में लगातार खांसी और बुखार से लेकर ब्रोंकियोलाइटिस और निमोनिया जैसी अधिक गंभीर स्थितियाँ शामिल हैं। अन्य श्वसन सम्बंधी बीमारियों से इसकी समानता निदान और उपचार को जटिल बनाती है।

इसके प्रसार को रोकने के लिए, चीन में स्वास्थ्य अधिकारियों ने हाथ धोने, मास्क पहनने और समय पर जाँच जैसे निवारक उपायों पर ज़ोर दिया हैं। वयस्कों में एचएमपीवी के लक्षण अक्सर सामान्य सर्दी या फ्लू जैसे होते हैं। इनमें, लगातार खांसी, अक्सर बलगम उत्पादन शामिल हैं। नाक बंद होना या नाक बहना, बुखार, आमतौर पर हल्का से मध्यम थकान और शरीर में सामान्य दर्द, गले में खराश, गंभीर मामलों में सांस लेने में तकलीफ शामिल हैं। बच्चों में गंभीर लक्षण होने की संभावना अधिक होती है. ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस अत्यधिक संक्रामक है और विभिन्न माध्यमों से फैलता है। वायरस तब फैल सकता है जब कोई संक्रमित व्यक्ति खांसता, छींकता या बात करता है, जिससे श्वसन की बूंदें हवा में फैलती हैं। वायरस संक्रमित व्यक्ति के साथ शारीरिक संपर्क के माध्यम से फैल सकता है, खासकर अगर कोई उनके चेहरे, आंखों या मुंह को छूता है। वायरस सतहों पर बना रह सकता है और दूषित वस्तुओं जैसे कि दरवाजे की कुंडी या मोबाइल डिवाइस को छूने से संक्रमण का ख़तरा बढ़ जाता है। छोटे श्वसन कण हवा में निलंबित रह सकते हैं, खासकर भीड़भाड़ वाली या खराब हवादार जगहों पर।

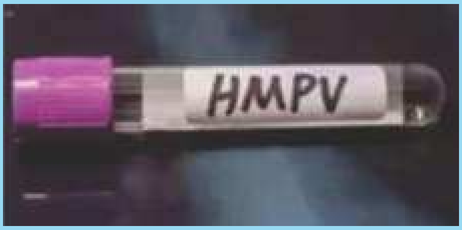

ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस के लक्षण अन्य श्वसन संक्रमणों से मिलते-जुलते हैं, जिससे सटीक निदान विशिष्ट प्रयोगशाला परीक्षणों पर निर्भर करता है। यह आणविक परीक्षण उच्च सटीकता के साथ वायरस की आनुवंशिक सामग्री का पता लगाता है और इसे ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस के निदान के लिए स्वर्ण मानक माना जाता है। रैपिड एंटीजन टेस्ट जल्दी परिणाम देते हैं लेकिन पीसीआर टेस्ट की तुलना में कम संवेदनशील होते हैं। अधिकांश लोग बिना किसी जटिलता के लगभग 7 से 10 दिनों में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस से ठीक हो जाते हैं। हालाँकि, कुछ समूहों को गंभीर जटिलताओं का अधिक जोखिम होता है। ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस वायरल निमोनिया का कारण बन सकता है, जिसके गंभीर मामलों में अस्पताल में भर्ती होने और गहन देखभाल की आवश्यकता होती है। शिशुओं और छोटे बच्चों को अक्सर वायुमार्ग में सूजन और रुकावट का अनुभव होता है, जिससे सांस लेने में कठिनाई और घरघराहट होती है। ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस अस्थमा या क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज जैसी मौजूदा श्वसन स्थितियों को खराब कर सकता है। ये संक्रमण, जैसे कि बैक्टीरियल निमोनिया, कमज़ोर प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण जटिलताओं के रूप में विकसित हो सकते हैं। गर्भावस्था के दौरान ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस के कारण होने वाली श्वसन सम्बंधी समस्याएँ मातृ और भ्रूण के स्वास्थ्य को जोखिम में डाल सकती हैं।

ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस में कोई विशिष्ट एंटीवायरल दवा नहीं है। उपचार का मुख्य उद्देश्य लक्षणों का प्रबंधन करना और जटिलताओं को रोकना है। ठीक होने और ताकत बनाए रखने के लिए आवश्यक है। एसिटामिनोफेन या इबुप्रोफेन जैसी दवाएँ बुखार और शरीर के दर्द को नियंत्रित कर सकती हैं। गंभीर मामलों में, पूरक ऑक्सीजन या मैकेनिकल वेंटिलेशन की आवश्यकता हो सकती है। निमोनिया जैसी जटिलताओं वाले रोगियों को अस्पताल में बारीकी से निगरानी की आवश्यकता हो सकती है। एचएमपीवी को रोकने के लिए, निवारक उपायों पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान में कोई टीका उपलब्ध नहीं है। संक्रमण के जोखिम को कम करने के लिए, इन उपायों का पालन करें। अपने हाथों को कम से कम 20 सेकंड तक साबुन और पानी से धोएँ। जब साबुन और पानी उपलब्ध न हो तो अल्कोहल-आधारित हैंड सैनिटाइज़र का उपयोग करें। ऐसे व्यक्तियों से दूर रहें जिनमें श्वसन सम्बंधी बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं। प्रकोप के दौरान भीड़-भाड़ वाले इलाकों से बचें। नियमित रुप से उन सतहों को साफ़ करना सुनिश्चित करें जिन्हें अक्सर छुआ जाता है, जैसे कि दरवाज़े के हैंडल, फ़ोन और काउंटरटॉप। प्रकोप या फ़्लू के मौसम के दौरान मास्क पहनने से श्वसन बूंदों के संपर्क को कम करने में मदद मिल सकती है। यदि आपको कोई लक्षण है, तो वायरस के प्रसार को रोकने के लिए घर पर रहना महत्त्वपूर्ण है। ह्यूमन मेटान्यूमोवायरसऔर इसके संभावित प्रभाव के बारे में जागरुक होना शुरुआती पहचान और रोकथाम के लिए महत्त्वपूर्ण है। ●●●

कच्छ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा

रंग बिखेरता कच्छ का रण उत्सव

आकांक्षा यादव
कॉलेज में प्रवक्ता, साहित्य, लेखन और ब्लॉगर

भारत के पश्चिमी भाग में बसा समृद्धशाली राज्य गुजरात अपने त्योहारों और सांस्कृतिक उत्सवों के लिये विश्व प्रसिद्ध है। कच्छ, सौराष्ट्र, काठियावाड, हालार, पांचाल, गोहिलवाड, झालावाड और गुजरात इसके प्रादेशिक सांस्कृतिक अंग हैं। जन-समाज के ऐसे वैविध्य के कारण इस प्रदेश को भाँति-भाँति की लोक संस्कृतियों का लाभ मिला है। गुजरात में अरब सागर से 100 किलोमीटर दूर बंजर रेगिस्तान में बर्फ़ की तरह सफ़ेद नमक का विस्तृत मैदान है, जो उत्तर में पाकिस्तान के साथ लगती सीमा तक फैला हुआ है।

गुजरात का कच्छ जिला अपनी अनोखी सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। कच्छ का रण, सफेद नमक के रेगिस्तान, जीवंत संस्कृति और अद्भुत सूर्यास्तों के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में हर साल एक विशेष उत्सव आयोजित किया जाता है, जिसे 'रण उत्सव' के नाम से जाना जाता है। वर्ष 2001 में गुजरात में आए भयंकर भूकंप के चलते यहाँ जान और माल का काफी नुकसान हुआ। इनमें भी गुजरात का कच्छ क्षेत्र बुरी तरह से भूकंप से प्रभावित हुआ था। ऐसे में एक तरफ गुजरात सरकार ने आपदा का निवारण कर लोगों का पुनर्वास किया, वहीं वर्ष 2005 में कच्छ के रण में एक उत्सव आयोजन करने का निर्णय लिया।

'रण उत्सव' अपने अनोखे प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। कच्छ के रण में आयोजित होने वाला यह उत्सव हर साल सर्दियों में पूर्णिमा की रात को शुरु होता है। इस साल रण उत्सव 11 नवंबर 2024 से शुरु होकर 15 मार्च 2025 तक चलेगा। रण उत्सव के दौरान कच्छ की हर जगह पर इसकी अनोखी महक महसूस होती है। कला, संस्कृति और यहां तक कि भोजन में भी कच्छ की आत्मा झलकती है। गुजरात में कच्छ का रण अपनी सफेद नमकीन रेगिस्तानी रेत के लिए प्रसिद्ध है और इसे दुनिया का सबसे बड़ा नमक रेगिस्तान माना जाता है।

रन का अर्थ है रेगिस्तान और कच्छ का अर्थ है कछुवा। ऐसा प्रतीत होता है कि कच्छ के रण का नक्शा एक उल्टा कछुवा जैसे दिखता है। इसीलिए इसका नाम कच्छ का रन पड़ा। कछुए के आकार का यह इलाक़ा दो हिस्सों में बंटा है- महान या बड़ा रण 18,000 वर्ग किलोमीटर में फैला है तो दूसरा हिस्सा छोटा रण कहलाता है जो 5,000 वर्ग किलोमीटर में फैला है। इन दोनों को मिला दें तो नमक और ऊंची घास का विस्तृत मैदान बनता है जो दुनिया के सबसे बड़े नमक के रेगिस्तानों में से एक है। यहीं से भारत को 75 फ़ीसदी नमक मिलता है। हर साल गर्मियों के महीने में मॉनसून की बारिश होने पर रण में बाढ़ आ जाती है। सफ़ेद नमक के सूखे मैदान बिल्कुल ग़ायब हो जाते हैं और उनकी जगह झिलमिलाता समुद्र बन जाता है। पानी घटने पर प्रवासी किसान

चौकोर खेत बनाकर नमक की खेती शुरू करते हैं। सर्दियों से लेकर अगले जून तक वे जितना ज़्यादा नमक निकाल सकते हैं, उतना नमक निकालते हैं।

प्रकृति के इस अद्भुत पारिस्थितिकी में वर्ष 2005 में शुरू किया गया तीन दिवसीय रण उत्सव आज अपनी लोकप्रियता के चलते कच्छ के रण के पास धोरडो गाँव में 100 दिवसीय उत्सव में तब्दील हो चुका है। गत वर्ष 2023 में संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने धोरडो की जीवंतता और कई आकर्षणों को मान्यता दी, और इसे “सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव 2023” के प्रतिष्ठित खिताब से सम्मानित किया। गुजरात का यह गांव अब दुनिया के 54 गाँवों में शामिल हो गया है, जो दुनिया के श्रेष्ठ पर्यटन गांव की श्रेणी में आते हैं। वर्तमान में धोरडो गांव देश समेत पूरी दुनिया के सामने ग्रामीण पर्यटन और ग्रामीण विकास का एक मॉडल बना हुआ है।

इतिहास के गर्त में झांकें तो कच्छ के रण की भूगर्भीय उत्पत्ति क़रीब 20 करोड़ साल पहले पूर्व-जुरासिक और जुरासिक काल में शुरू हुई थी। कई सदी पहले तक यहां समुद्री मार्ग था। कच्छ की खाड़ी और सिंधु नदी में ऊपर की ओर जाने वाले जहाज़ इस रास्ते का प्रयोग करते थे। दुनिया की पहली सबसे बड़ी सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी सभ्यता के लोग ईसा पूर्व 3300 से लेकर ईसा पूर्व 1300 साल तक यहां फले-फूले थे। क़रीब 200 साल पहले एक के बाद एक आए कई भीषण भूकंपों ने यहां की भौगोलिक आकृति को बदल दिया। भूकंप के झटकों ने यहां की ज़मीन को ऊपर उठा दिया। यहां समुद्री पानी से भरी खाड़ियों की श्रृंखला बन गई जो साथ मिलकर 90 किलोमीटर लंबे और 3 मीटर गहरे रिज का निर्माण करती थी। अरब सागर से इसका संपर्क कट गया। भूकंपों ने यहां के रेगिस्तान में खारे पानी को फंसा दिया जिससे रण की विशिष्ट भू-स्थलाकृति तैयार हुई।

रण उत्सव न केवल एक पर्यटन स्थल है बल्कि यह कच्छ की आत्मा का उत्सव भी है। प्रकृति, संस्कृति, कला, परम्परा और विरासत के इस उत्सव ने न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति दी है बल्कि इसे वैश्विक सांस्कृतिक मंच में बदल दिया है। रण उत्सव के दौरान पर्यटक गुजरात के पारंपरिक लोक नृत्य और संगीत का आनंद ले सकते हैं। गरबा, घूमर, और ढोल की धुनें इस पर्व को और भी खास बना देती हैं। इन लोक नृत्यों में लोग रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजकर उत्सव में शामिल होते हैं। रण उत्सव में गुजराती व्यंजनों का स्वाद लेना भी एक अलग अनुभव होता है। ढोकला, थेपला, खांडवी जैसे पारंपरिक व्यंजन यहां के लोगों के मेहमाननवाजी की झलक देते हैं। रण उत्सव के दौरान पर्यटकों को आलीशान टेंटों में रहने का मौका मिलता है। ये टेंट यात्रियों को रेगिस्तान के बीच में एक अद्भुत कैंपिंग अनुभव प्रदान करते हैं, जहां वे रेगिस्तान की सुंदरता का पूरा आनंद ले सकते हैं। सफेद रेगिस्तान में ऊंट की सवारी यहां का मुख्य आकर्षण है। ऊंट की सवारी करते समय दूर रेगिस्तान का दृश्य और भी अद्भुत लगता है।

रण उत्सव न केवल एक पर्यटन स्थल है बल्कि यह कच्छ की आत्मा का उत्सव भी है। यह उत्सव स्थानीय कलाकारों, शिल्पकारों और सेवा प्रदाताओं के लिए आजीविका का एक बड़ा स्रोत बन गया है। कच्छ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा, यह कहावत रण उत्सव पर पूरी तरह सटीक बैठती है। हर साल होने वाला रण उत्सव कच्छ के सांस्कृतिक रंगों को बिखेरता है। यहां संस्कृति, कला, संगीत और स्थानीय हस्तशिल्प का एक अनोखा संगम देखने को मिलता है। यह उत्सव कच्छ की परंपराओं को जीवंत करता है और भारत के विभिन्न हिस्सों से आए पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनता है। कच्छ अपनी बंधेज, एम्ब्रॉयडरी, और मिट्टी की कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है। स्थानीय हस्तशिल्प का आनंद यहाँ बखूबी लिया जा सकता है। यहां के बाजारों में पर्यटकों को विभिन्न हस्तशिल्प की चीजें देखने और खरीदने को मिलती हैं। कच्छ के कलाकार अपने अनोखे कला-कौशल से कपड़ों, आभूषणों, और सजावटी वस्तुओं को जीवंत बना देते हैं।

कच्छ में रण उत्सव के साथ-साथ अगल-बगल विभिन्न पर्यटन स्थल भी हैं, जहाँ का नज़ारा अद्भुत दिखता है। कच्छ के रण में बनने वाले घर वास्तुकला के अनूठे नमूने होते हैं। उनको बुंगा घर के नाम से जाना जाता है। इन घरों की छतें शंकु आकार की होती हैं। गुजरात की सबसे ऊँची पहाड़ी काला डूंगर कच्छ क्षेत्र में ही स्थित है। काला डूंगर के रास्ते पर ही चुंबकीय क्षेत्र पड़ता है। यहाँ आप अपनी गाड़ी बंद करके खड़ी कर देंगे, तो चुंबकीय प्रभाव के चलते गाड़ी अपने आप पीछे की और खिंची चली जाएगी। इस उत्सव के दौरान कच्छ में स्थित स्वर्ग का मार्ग पर जाने के अवसर भी पर्यटकों को मिलता है। यह मार्ग प्राचीन सिंधु सभ्यता के धोलावीरा नगर तक जाता है। इस मार्ग का प्राचीन इतिहास देखते हुए इसका नाम स्वर्ग का मार्ग है। कुछ मीटर चौड़े मार्ग के दोनों तरफ सफेद कच्छ का रण दिखाई देता है। इस रास्ते पर एक झील भी है। 30 किलोमीटर लंबा यह मार्ग गुजरात के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गिना जाता है। कच्छ का रण जंगली गधा अभयारण्य और कई दुर्लभ पक्षियों का प्राकृतिक आवास है। इस क्षेत्र में पक्षी प्रेमी और वन्यजीवन के प्रेमी अद्भुत प्रजातियों के दर्शन कर सकते हैं। रण उत्सव की छटा, सफेद रेत और पारंपरिक परिधानों में सजे हुए लोग इसे फोटोग्राफरों के लिए भी एक स्वर्ग बना देते हैं।

रण उत्सव आज एक वैश्विक उत्सव बन गया है। सफेद रेत पर तंबुओं का शहर अपनी रोमांचकता के चलते देश- दुनिया के पर्यटकों को आकर्षित करता है। सफेद रेगिस्तान में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय का दृश्य अत्यंत सुंदर होता है। जब सूरज की किरणें सफेद रेत पर पड़ती हैं, तो एक अनोखी चमक उत्पन्न होती है, जो देखने वालों को हमेशा के लिए याद रह जाती है। इस महोत्सव ने यह भी दिखाया है कि कैसे पर्यटन से स्थानीय समुदायों को पहचान और आर्थिक रूप से सशक्त व स्वावलम्बी किया जा सकता है। ●●●

आनंदी गोपालराव जोशी

डा0 आकांक्षा दीक्षित

वातावरण की नीरवता अवांछित के घटित होने की सूचना पूरी तीव्रता से संप्रेषित कर रही थी। संतान का जन्म एक परिवार के लिए एक बड़ा अवसर होता है और वही संतान काल के क्रूर हाथों से छिन जाए तो उस परिवार विशेषकर जन्मदात्री की स्थिति का अनुमान लगा पाना सहज नहीं है। इसी दारुण दुख ने आनंदी के लिए एक संकल्प की सिद्धि का मार्ग प्रशस्त किया। पति गोपालराव जोशी की मंशा आनंदी सम्भवतः अब आत्मसात कर पायी थी। वे अपने पति की इच्छानुसार विद्यार्जन तो कर रही थी किंतु जीवन का उद्देश्य अब उनके समक्ष स्पष्ट था। आनंदी ने संकल्प लिया कि वे चिकित्सक बनेगी जिससे किसी और माँ की गोद ना सूनी हो।

आनंदीबाई जोशी का जन्म 31 मार्च 1865 को पुणे के एक जमींदार परिवार में हुआ था। मायके में उनका नाम यमुना था। विवाहोपरांत ससुराल में उनका नाम प्रचलित रीति के अनुसार आनंदी रखा गया। इसप्रकार यमुना का नाम बदलकर अब आनंदी गोपालराव जोशी हो गया था। ब्रिटिश शासकों ने महाराष्ट्र में जब जमींदारी प्रथा पूरी तरह खत्म कर दी, जिसके बाद आनंदी के परिवार की स्थिति बिगड़ती चली गई। उनके परिवार का न केवल गुजर-बसर करना कठिन हो गया था बल्कि इस दौरान पूरे परिवार को वित्तीय संकट का भी सामना करना पड़ा। अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए परिवार ने नौ वर्षीय आनंदी का विवाह अपने से 16 साल बड़े कुलीन ब्राह्मण गोपालराव के साथ करा दिया। गोपालराव की आयु उस समय 25 साल थी। उनकी पहली पत्नी की मौत हो चुकी थी। आनंदी उनकी दूसरी पत्नी थी। वर्तमान समय में स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा मे बहुत सुधार आया है। सैकड़ो वर्षो की पराधीनता ने आम भारतीय का जीवन हर स्तर पर प्रभावित किया , स्त्रियों की स्थिति भी इससे अप्रभावित ना रही। गार्गी ,मैत्रेयी के देश की बेटियां कारणों से शिक्षा से वंचित कर दी गई। उनके अनेक अधिकार बाधित हो गए। किंतु इसी समय में गोपालराव

जोशी ने प्रबल सामाजिक दबाव को अस्वीकार करते हुए अपनी पत्नी को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया। आनंदी की योग्यता को पहचानकर गोपाल राव ने उनकी शिक्षा का प्रबंध किया और पूरा साथ दिया। प्रत्येक सफल महिला के पीछे कोई ना कोई समझदार पुरुष अवश्य होता है और यदि उस समय की परिस्थिति को ध्यान में रखा जाए तो यह पुरुष यदि पति हो तो बात सच में विशिष्ट हो जाती है। एक भी ऐसा उदाहरण हजारों के लिए मिसाल बनता है। जीवन गतिमान है। समय के साथ आनंदी ने एक पुत्र को जन्म दिया।मां बनने के 14 दिनों बाद ही उनकी खुशियां दुख में बदल गई। आनंदी का पुत्र एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था, जिसके कारण से वह कालकलवित हो गया। बच्चे की मौत का न केवल आनंदी को गहरा सदमा पहुंचा बल्कि उन्होंने ठाना वह किसी को भी असमय मरने नहीं देंगी। बच्चे को खोने के दर्द ने आनंदी को दुखी करने के साथ एक नया लक्ष्य भी दे दिया। उन्होंने इस दौरान निश्चय किया कि वह एक दिन डॉक्टर बनकर ही रहेंगी। अपनी इस इच्छा के बारे में उन्होंने अपने पति को बताया। उनके इस संकल्प को पूरा करने में उनके पति ने भी उनकी पूरी मदद की, जो बताता है कि अगर साथी अच्छा हो तो, किसी भी लक्ष्य को आसानी से हासिल किया जा सकता है।देश की पहली महिला डॉक्टर बनने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए घर से निकलीं आनंदी ने न केवल उस समय समाज की तमाम आलोचनाओं को सहा बल्कि उनके परिवार वालों ने भी उनका साथ देना बंद कर दिया था। हालांकि, इसके बाद भी आनंदी आगे बढ़ती ही चली गईं। सबसे पहले उनके पति गोपालराव ने उन्हें मिशनरी स्कूल में दाखिला दिलाकर आगे की पढ़ाई कराई, जिसके बाद वह कलकत्ता पहुंचीं, जहां उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी पढ़ना और बोलना सीखना शुरू किया।अपनी पत्नी की रुचि को देखते हुए गोपालराव ने 1880 में प्रसिद्ध अमेरिकी मिशनरी, रॉयल वाइल्डर को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में चिकित्सा का अध्ययन करने की पूरी जानकारी मांगी। आनंदी की पढ़ाई के लिए गए इस फैसले पर परिवार से लेकर समाज तक कोई भी सहमत नहीं था। ऐसा इसलिए क्योंकि उस समय एक हिंदू विवाहिता का घर से दूर जाकर पढ़ाई करना बिल्कुल भी संभव नहीं था।लेकिन आनंदी और गोपाल ने किसी की एक नहीं सुनी। उन्होंने न केवल पेंसिल्वेनिया के महिला मेडिकल कॉलेज में एडिमशन लिया बल्कि पढ़ाई पूरी करने के लिए अपने सारे गहने भी बेच दिए। समाज का एक तबका आनंदी के इस कदम से बहुत प्रभावित था, जिन्होंने उनकी सहायता के लिए 200 रुपए की राशि भी दी। साल 1886 में 19 साल की उम्र में आनंदीबाई ने एमडी की डिग्री हासिल कर ली। वह एमडी की डिग्री पाने वाली भारत की पहली महिला डॉक्टर बनीं। उसी साल आनंदीबाई चिकित्सक बनकर लौटी।भारत आने के बाद आनंदीबाई का यहां पर भव्य तरीके से स्वागत किया गया। जिसके बाद उन्हें कोल्हापुर रियासत के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल के महिला वार्ड में प्रभारी चिकित्सक की नियुक्ति मिली। आनंदी को महारानी विक्टोरिया की तरफ से भी एक बधाई संदेश मिला। कॉलेज के डीन ने उन्हें आनंदी की उपलब्धि के बारे में सूचित किया था। भारत लौटने पर, 21 साल की आनंदी को कोल्हापुर रियासत द्वारा अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल के महिला वॉर्ड के चिकित्सक प्रभारी के रुप में नियुक्त किया गया था।

"आप हमारे आधुनिक युग की महानतम महिलाओं में से एक हैं"

मराठी दैनिक केसरी के संस्थापक व स्वतंत्रता कार्यकर्ता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, विदेश जाने में आनंदी की कोई मदद नहीं कर सके थे। लेकिन उन्होंने उनसे संपर्क किया और अपने एक पत्र में लिखा, "मैं जानता हूं कि कैसे तमाम मुश्किलों का सामना करते हुए आप विदेश गईं और इतनी मेहनत से ज्ञान हासिल किया। आप हमारे आधुनिक युग की महानतम महिलाओं में से एक हैं।"

भाग्य और नियति पर वश नहीं होता। भारत की पहली महिला डॉक्टर बनकर कीर्तिमान रचने वाली आनंदीबाई जब डॉक्टरी की प्रैक्टिस कर ही रही थीं, तब वह टीबी की बीमारी का शिकार हो गईं। वह काफी बीमार रहने लगीं थीं, जिसके बाद 26 फरवरी 1887 को महज 22 साल की उम्र में आनंदीबाई का निधन हो गया। उनके साथ स्नेह का बंधन रखने वाली शोकग्रस्त थियोडिसिया ने गोपालराव से आनंदी की राख भेजने का अनुरोध किया, जिसे उन्होंने पकिप्सी के कब्रिस्तान में अपने परिवार के साथ दफनाया था।

आनंदीबाई का नाम आज भले ही बहुसंख्यक भारतीय नहीं जानते पर उनको वैश्विक स्तर पर बहुत सम्मान मिला। भोर का तारा कहे जाने वाले शुक्र ग्रह पर बहुत से गड्ढे (Craters) हैं और इन सभी के नाम उन महिलाओं के नाम पर रखे गए हैं, जिन्होंने अपने क्षेत्र में एक बड़ा योगदान दिया। उनमें से तीन ऐसे हैं, जिनके नाम उन भारतीय महिलाओं के नाम पर रखे गए हैं, जिन्होंने एक ऐसी लकीर खींची है, जिसे पार करना शायद मुश्किल होगा. ये अपने-अपने क्षेत्र में आज भी मिसाल हैं, इनमें से एक का नाम आनंदीबाई जोशी के नाम पर जोशी क्रेटर है।आनंदीबाई जोशी के नाम से चिकित्सकों को सम्मान भी प्रदान किया जाता है। आनंदी के प्रेरणादायक जीवन का अंत भले ही विडंबनापूर्ण हुआ हो किंतु लेकिन उनका यह छोटा सा जीवन वर्षो से चली आ रही सामाजिक रुढ़ियों को तोड़ने का मार्ग प्रशस्त कर गया।

आनंदी गोपाल राव जोशी का नाम इसलिए महत्वपूर्ण है कि भले ही वे असमय काल कलवित हो गई उन्होंने एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया और ये सिद्ध कर दिया कि स्त्रियों भी किसी भी प्रकार की तकनीकी शिक्षा सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकती है। उनके पति गोपालराव जोशी ने भी धारा के विपरीत चलकर अपनी पत्नी का जो साथ दिया वह भी एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसप्रकार भारतवर्ष की लड़कियों के लिए महिला चिकित्सक बनने के द्वार खोलने वाली आनंदी गोपाल इतिहास में सदैव के लिए अमर हो गई। ●●●

भागवत "संदेश" को ख़ारिज़ नहीं, बल्कि राष्ट्रीय फ़लक़ पर समझने की ज़रूरत

सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश के संभल जिले में हुए सर्वे के दौरान हुई हिंसा के बाद मंदिर-मस्जिद से जुड़े कई विवादों सतह पर आने के बाद, जब यह बातें सुप्रीम कोर्ट तक पहुंची तो सुप्रीम कोर्ट ने विवादित धार्मिक स्थलों के सर्वे पर अपनी अंतरिम रोक लगा दी। अब यह तो पता नहीं कि इस संबंध में देश की सुप्रीम कोर्ट का अंतिम निर्णय क्या होगा? लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि मंदिर मस्जिद से जुड़े विवाद क्या ऐसे किसी अदालती अदालत के दिशा-निर्देशों से हल हो सकेंगे? सवाल यह भी है कि क्या फिर ऐसे मामलों की सच्चाई जानने की जरूरत ही नहीं है या फिर देश में 1947 वाली स्थिति को बरकार रखा जाए। जिसके लिए संभवता देश का बहुसंख्यक वर्ग सहमत नहीं होगा। बहरहाल, इन्हीं तमाम सवालों और उनसे जुड़ी आशंकाओं के बीच संघ प्रमुख मोहन भागवत का एक ऐसा बयान आता है जो देश और दुनिया के स्तर से अपनी नई छवि गढ़ने के लिहाज से विचार करने योग्य है, लेकिन विड़ंबना यह है कि उसे स्वीकार करने के बजाए खारिज करने की आवाजें जब बुलंद हुई तो कहा जाए तो इस मामले में मोहन भागवत अलग-थलग पड़ते दिखाई दे रहे हैं।

अब बात भागवत के उस बयान की जिसने देश में एक नई बहस को जन्म दिया। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने बीते दिनों अमरावती में एक कार्यक्रम में बोलते हुए देश में सद्भावना की वकालत की और मंदिर-मस्जिद को लेकर शुरू हुए नए-नए विवादों पर अपनी चिंता जाहिर की। भागवत ने कहा कि हमारे यहां हमारी ही बातें सही, बाकी सब गलत, इस धारणा से निकलना होगा। यह नहीं अलग-अलग मुद्दे रहे तब भी हम सब मिलजुल कर रहेंगे, ऐसी सोच होनी चाहिए। हमारी वजह से दूसरों को तकलीफ न हो इस बात का ख्याल रखेंगे। जितनी श्रद्धा मेरी खुद की बातों में है। उतनी श्रद्धा मेरी दूसरों की बातों में भी रहनी चाहिए। हमें यह व्यवहार पालन करना होगा और मतों की भिन्नता नहीं चलेगी। लोभ, लालच, आक्रमण करके दूसरों की देवी देवताओं की विडंबना करना यह नहीं चलेगा। वैसे भी यह बातें हमारे देश की नहीं है। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन में समा ही नहीं सकती। मोहन भागवत ने कहा कि अब श्रद्धा के आदर की बात आती है। राम मंदिर होना चाहिए। हुआ भी। इसलिए तिरस्कार, शत्रुता के लिए रोज एक नए प्रकरण निकालना यह कैसे चलेगा, यह नहीं होना चाहिए। आखिरकार हमारा सॉल्यूशन क्या है। हमको दुनिया को दिखाना है कि हम एक साथ रह सकते हैं। इसलिए अपने देश में एक छोटा सा प्रयोग होना चाहिए। यह प्रयोग करते हुए अपने यहां इन सब बातों का संभालने वाले अनेक पंत, समुदाय के विचारधारा हमारे यहां है। मोहन भागवत ने कहा कि आपको यह बात समझनी चाहिए और यह सब पुरानी लड़ाइयां है। इन लड़ाइयां को भूलकर हमें सबको एक साथ लेकर चलना चाहिए। कुछ अलगाववाद और यह लड़ाई आज भी चलती है। इसका कारण क्या है? पूजा आपकी कौन सी है? उसका कोई मतलब नहीं बाद हमें यहां पर एक साथ रहना चाहिए। यही भारत की संस्कृति सिखाती है। लेकिन समय-समय पर इसमें भी विघ्न पैदा किए गए।

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि स्वतंत्र भारत में हमें भारत में रहना, ऐसा सब ने कहा हम भारतीय भारत में रहेंगे तो फिर अब यह अलग अलग बातें क्यों होती है। वर्चस्व की भाषा क्यों होती है। कौन माइनॉरिटी और कौन मेजॉरिटी सब एक जैसे ही है इस देश की परंपरा ही ऐसी है, जिसकी जैसी पूजा वैसा करता रहे। बस आपस में अच्छे से रहो। नियम कानून मानकर चलते रहो। इसलिए इस वर्चस्व वाद कट्टरवाद को भूलकर हम सबको भारत की सम समावेश संस्कृति के तहत एकजुट हो जाना चाहिए। देश की सम समावेश संस्कृति जिनके पास से चलती आई उन्हें क्यों डर लगता है। हम बंटे हुए है इसलिए डर लगता है। एकजुट हो सशक्त हो जाओ किसी का भी डर नहीं लगेगा। उलट जो डराते हैं उनको डर लगेगा इतना सशक्त हो जाओ। पर किसी

जानने की यह लड़ाई धार्मिक वर्चस्व की लड़ाई नहीं है। यह हिन्दू लोकाचार के खिलाफ है। यह हमारी राश्ट्रीय पहचान की पुश्टि और संभवता न्याय के बारे में हैं।

यह महत्वपूर्ण सवाल यह कि भागवत के बयान के विरोध में तो आवाजें उठी, लेकिन संघ प्रमुख के बयान के समर्थन में संघ के आनुषंगिक संगठनों व भाजपा नेताओं की तरफ से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व गृहमंत्री अमित शाह के ऐसे बयानों के समर्थन में पार्टी नेताओं में बयानबाजी की होड़ पैदा हो जाती है। समय की मांग है कि संघ प्रमुख के बयान में निहित संदेश को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। इसमें दो राय नहीं कि संघ की स्थापना के मूल में हिंदुत्व की विचारधारा रही है। यही इस संगठन का आधार भी रहा है। ऐसे में जब संगठन की तरफ से प्रगतिशील विचार सामने आता है तो उसे सुना जाना चाहिए। उसका स्वागत किया जाना चाहिए। निस्संदेह, धर्म एक जटिल मुद्दा है और इसके वास्तविक स्वरुप को समझे जाने में चूक होने की आशंका बनी रहती है। जिसके चलते सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिलने की आशंका बलवती होती है। वहीं सवाल उठता है कि क्या भागवत के बयान वाला दृष्टिकोण संगठन में उदारवादी व सख्त नीति के बीच विभाजित हो रहा है? यही वजह है कि संघ व भाजपा नेताओं की तरफ से इस बयान को सकारात्मक प्रतिसाद नहीं मिला है। इस बयान को बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद वहां कट्टरपंथियों के वर्चस्व के रुप में देखा जा सकता है। भागवत की चिंताओं को इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए। पूरी दुनिया में इस्लामिक कट्टरता के चलते संप्रदाय को अतिवाद के पोषक के रुप में देखा जाता रहा है। जिसके चलते इसकी छवि धूमिल हुई है। ऐसे ही यदि बहुसांस्कृतिक देश में कट्टरवाद को प्रश्रय दिया जाता है तो वैश्विक संदर्भ में देश की छवि पर इसका प्रतिकूल असर पड़ेगा। धर्म विशेष के नाम पर दुनिया में आतंकवाद की जो मुहिम चली है, उससे धर्म को हिंसा के पर्याय के रूप में देखा जाने लगा है। जिसको लेकर धारणा बनी है कि इससे धर्म की गलत व्याख्या की जा रही है। निश्चित रूप से ऐसे धुवीकरण के प्रयासों से देश में विकास का एजेंडा हाशिये पर चला जाएगा। इसे उत्तर प्रदेश के उदाहरण के तौर पर देखा जाना चाहिए जहां नित नये विवादों को तूल देने के कारण सांप्रदायिक तनाव में वृद्धि देखी गई। उदाहरण के तौर पर संभल में हुई घटना को देखा जा सकता है, जहां हिंसा में चार लोगों की जान चली गई थी। ऐसे कृत्यों से भारत के विश्वगुरु बनने के दावे तथा वसुधैव कुटुंबकम की सनातन परंपरा पर आंच आती है। जिसके लिए जरुरी है कि हमें अपनी बात को ऊंचा रखकर दूसरे विचार की अनदेखी की जिद से बचना होगा। हम अपनी आस्था का ख्याल तो रखें लेकिन साथ ही दूसरे पक्ष के विचार का भी सम्मान करें। ऐसे में देश के कर्णधारों को चाहिए कि वे सत्ता पर काबिज रहने के लिये धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति से बचें। ●●●

को डराओ मत।

वैसे यह पहला मौका नहीं है जब भागवत ने इस तरह की बात कही हो। इससे पहले भी वे यह कह चुके है कि हर मजिस्द के नीचे शिवलिंग की खोज नहीं की जानी जानी। जहां तक उनके अब के दिए गए बयान का सवाल है कि मोहन भागवत जो कह रहे हैं उससे इनकार नहीं किया जा सकता। शायद यही कारण है कि विपक्ष के कुछ नेताओं ने आगे बढ़कर उनकी बात का समर्थन भी किया है। पर देखने वाली बात यह है कि संभवता यह पहली बार हुआ है कि भागवत के बयान का विरोध स्वयं आरएसएस के साथ-साथ देश के विभिन्न साधू संतों की तरफ से हुआ। कुछ साधू-संतों ने तो भागवत को नसीहत तक देने का काम किया। जगतगुरु स्वामी रामभद्राचार्य ने कहा मैं भागवत के बयान से असहमत हूं। वे हमारे अनुशासक नहीं हैं, बल्कि हम हैं। अखिल भारतीय संघ समिति के महासचिव स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती ने कहा कि मंदिर मस्जिद का मुद्दा धार्मिक है। इसका फैसला धर्माचार्यों की ओर से किया जाना चाहिए। भागवत को तो यह मुद्दा छोड़ देना चाहिए। कुछ ने तो यहां तक कहा कि भागवत अब संघ को धर्मनिरपेक्ष बनाने की कोशिश कर रहे हैं। तो वहीं दूसरी ओर आरएसएस की विचारधारा से प्रभावित पत्रिका आर्गनाइजर में उसके संपादक प्रफुल्ल केतकर द्वारा लिखी गई संपादकीय में कहा गया है कि छद्म धर्मनिरपेक्षतावादी चश्मे से बहस को हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न तक सीमित करने के बजाए हमे सच्चे इतिहास से आधारित सभ्यतागत न्याय पाने के लिए एक विवेकपूर्ण और समावेशी बहस की आवश्कता है, जिसमें समाज के सभी वर्ग शामिल हो। सोमनाथ से लेकर संभल और उसे परे ऐतिहासिक सत्य को

पुस्तक समीक्षा

युद्ध का अर्थशास्त्र: आर्थिक संकट का जनक?

एन0एम0पी0वर्मा

लेखक आर0के0श्रीवास्तव की नवीन पुस्तक युद्धों का अर्थशास्त्र वर्तमान समय की सच्चाई को रेखांकित काती है। लेखक एक नवीन पृष्ठभूमि की खोज करता हुआ प्रतीत होता है, या यूं कहे कि वह आर्थिक मंदी व आर्थिक संकट के प्रचलित सिद्वातो के क्षेत्र में एक नवीन व अधिक गहरी हल रेखा खींचना चाहता है आर्थिक मंदी व आर्थिक संकट आज भी विश्व देशो में एक खतरा बना हुआ है, यद्यपि इसके निदान हेतू जान मेनार्ड कींस ने लगभग 100 वर्षो पूर्व ही एक सिद्धान्त हमें दिया था। कींस का यह आर्थिक सिद्धान्त, जोकि 1930 के आर्थिक संकट के कारणों की खोज से सम्बधित है। हमें बताता है कि आर्थिक संकटो का मूल कारण सकल मांग में कमी होना है और यह सिद्धान्त अभी भी उपयोगी है। हालाकि वर्तमान में सरकारे इस सिद्धान्त सें भली भाति अवगत है और वें समय समय पर ऐसें कदम उठती रहती है जिससे कि सकल मॉग में गिरावट न आनें पायें, फिर भी आर्थिक मंदी व आर्थिक संकट का खतरा अक्सर अपना सिर उठाता रहता है।

इस पुस्तक मे लेखक आर्थिक मंदी व आर्थिक संकटों और आधुनिक युद्धों व युद्धों की तैयारियों पर होने वाले खर्चों के मध्य एक सीधा सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। लेखक के अनुसार आधुनिक युद्व अब बहुत मंहगें व उच्चतम तकनीक युक्त हो गये है जब कि आज से 100 वर्ष पूर्व ऐसा नही था। जैसे-जैसे विज्ञान व तकनीकी का विकास व विस्तार होता गया, उसी के अनुरुप युद्धों मशीनें व हथिहार भी विकसित होते गये। इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि इन उच्च तकनीकी युद्व मशीनें व हथिहारों का उत्पादन क्रय व रखरखाव पर खर्च आसमान छूनें लगा। जहॉ एक ओर इससें सरकारी खजानें व करदाता जनता पर आर्थिक बोझ बहुत अधिक बढता गया, वही दूसरी ओर इसनें मुद्रा स्फीती को भी बढाया, क्योकि यह अनउत्पादक खर्च की श्रेणी में आता है। इस प्रकार सें यह खर्च एक दुघारी तलवार साबित हुआ जो दोहरा धाव करता है एक तरफ युद्ध खर्च आम जनता पर करों का बोंझ बढाता है, वही दूसरी ओर यह मुद्रा स्फीती को प्रोत्साहित करता है। जिसके कारण मूल्यों मे वृद्दि होती है और आम जनता की आम व क्रय शक्ति घटती है।

लेखक द्वारा प्रस्तुत विपरीत दिशा गुणक (Negative Multiplier) तथा शून्य त्वरक (Zero Accelerator) की अवधारणा, भारतीय अर्थव्यवस्था के सन्दर्थ में एक अभिनव प्रस्तुतीकरण है और इसको और गहराई से जॉचने परखने की आवश्यकता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में असंगठित वर्गो निरंतर गिरती वास्तविक आय तथा लगभग स्थिर औधोगिक क्षेत्र, विशेष रुप सें विनिर्माणक्षेत्र, इस तत्थ को दर्शाता है कि लेखक की उक्त आवधारणा सही है।

अंन्तिम बात जो लधु नही है। यह है कि लेखक ने अपनी पुस्तक में एक स्वरुप व सम्पन्न भारतीय अर्थव्यवस्था हेतू तीन मानदंड निरुपति किये है जो कि निम्न प्रकार है।

1. भारत में एक आदर्श जनसख्ंया को बनायें रखना जो कि हमारे देश के प्राकृतिक संसाधनो के अनुरुप हो लेखक ने यह संख्या 50.55 करोड लोगों को निधार्रित की है।

2. भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि को समावेशी होना।

3. अनउत्पाद खर्चा की न्यूनतम स्तर पर रखना (युद्ध, युद्ध-तैयारी का खर्च अनउत्पाद खर्चा की श्रेणी मे आता है)

यह एक अभिनव विचार है जिसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। यह पुस्तक अर्थशास्त्रियों, शिक्षाविदों व विद्यार्थियों का ध्यान केवल भारत में ही नही वरन विश्व में आकर्षित करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।पुस्तक मूल रुप सें अग्रेंजी भाषा में लिखी गई है।●●●

अर्थशास्त्र विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

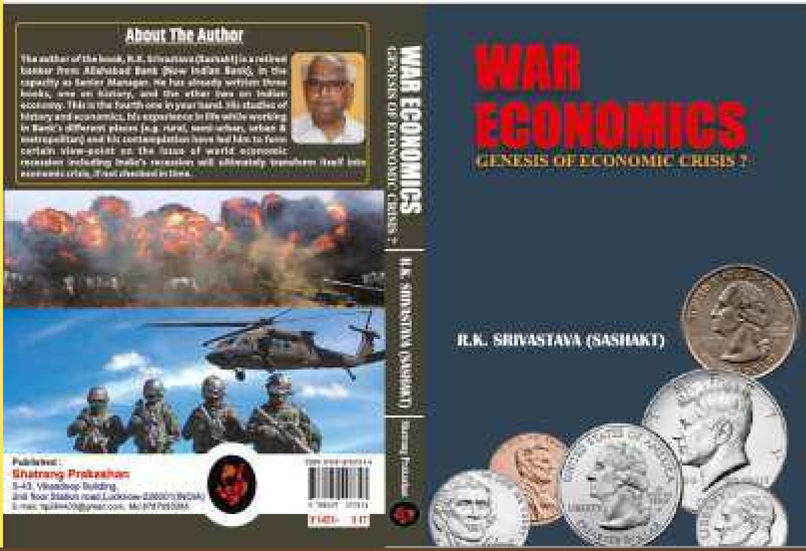

मास्टरिंग ट्रांसफार्मेशन ऑफ सेंटेंस

हम जिस भाषा में भी बात करें, जिस तरह की बात होगी वैसी ही भाव-भंगिमाएं हमारे चेहरे पर आएंगी। हमारी आंगिक मुद्राएं भी भाषा को सम्प्रेषित करेंगी। जब फेस एक्सप्रेशन और बॉडी लेंग्वेज भाषा के साथ इतना न्याय करते हैं तो शब्द और वाक्य न्यास में भी ये तासीर होना ज़रूरी है। भाषा के शब्दों और वाक्यों के भावों को सुन्दरता के साथ पेश करना ही बड़ी भाषाई कारीगिरी होती है। लेंग्वेज भी संगीत की तरह विषय अनुरुप उतार-चढ़ाव, आरोह-अवरोह, तीव्रता और कोमलता का सृजन मांगती है। इस हुनर को सीखने के लिए किसी टीचर, मार्गदर्शक, संगी-साथी,इंस्टीट्यूट या वीडियो सिरीज़ से लोग जुड़ते रहे हैं। लेकिन ये पहला मौक़ा है जब शब्द चयन और उसके क़रीने को अंग्रेजी ग्रामर की शुद्धता से सजाने का हुनर सिखाने के लिए एक किताब टीचर बन कर पेश हुई है। यानी शब्दों की दुनियां की बात शब्दों से ही की गई है। इस किताब की लेखिका ने भाषाई ब्यूटीशियन की तरह भाषा को दुल्हन की तरह सजाने के टिप्स दिए हैं।

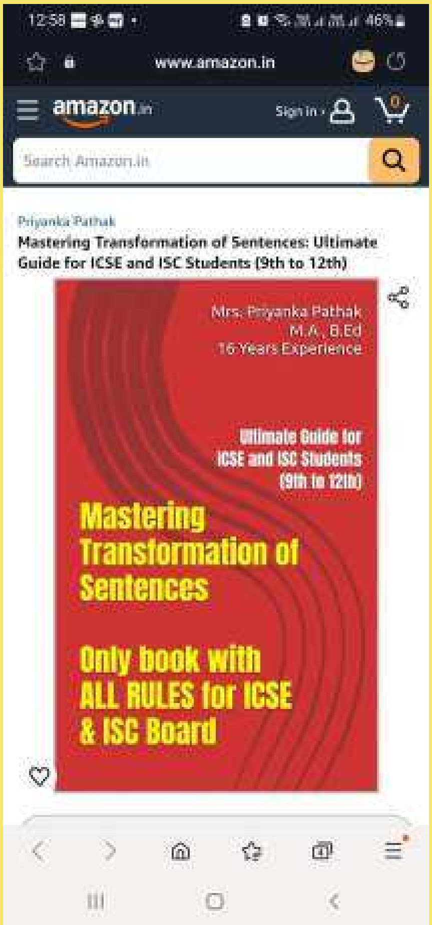

"मास्टरिंग ट्रांसफार्मेशन" नाम की ये पुस्तक छात्रों और अंग्रेजी भाषा प्रेमियों के लिए बेहद उपयोगी है। युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं में भी बहुत मददगार होगी ये पुस्तक। अपने शीर्षक के अनुरुप -महारत हासिल करना, उच्च स्तर का कौशल या विशेषज्ञता प्राप्त करने का मार्गदर्शन कराने वाली इस पुस्तक के वरक एक शिक्षक की तरह आपको उच्च कोटि की भाषा की दक्षता का अभ्यास कराते हैं। वक्ता के तौर पर आपको तक़रीर करनी हो या तहरीर लिखनी हो, पत्र, निबंध, भाषण, कविता, नाटक, उपन्यास, आमंत्रण, शोक संदेश, शुभ संदेश, शुभकामनाएं कहानी या लेख लिखना हो। ये पुस्तक आपको भाषा का सौंदर्य सिखाएगी। अभिव्यक्ति को शब्दों से सजाने का सलीका बताएगी।

प्रियंका पाठक ने कम उम्र में ऐसी अद्भुत पुस्तक लिखकर एक लेखिका के साथ एक टीचर या गाइड की दोहरी भूमिका निभाई है। "मास्टरिंग ट्रांसफार्मेशन ऑफ सेंटेंस" Amazon पर आसानी से उपलब्ध है। अद्भुत विषय-वस्तु के कारण भारत के अतिरिक्त विदेशी पाठकों ने भी इस पुस्तक में दिलचस्पी दिखाना शुरु कर दी है। बता दें कि प्रियंका पाठक के पिता उत्तर प्रदेश के चर्चित पत्रकार और उ.प्र.मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति के निर्वाचित सदस्य हैं। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु के अखबार समूह (एसोसिएट जर्नल्स लिमिटेड) के नवजीवन अखबार में सेवानिवृत्त होने के बाद श्री सिन्हा बतौर स्वतंत्र पत्रकार सक्रिय हैं। ●●●

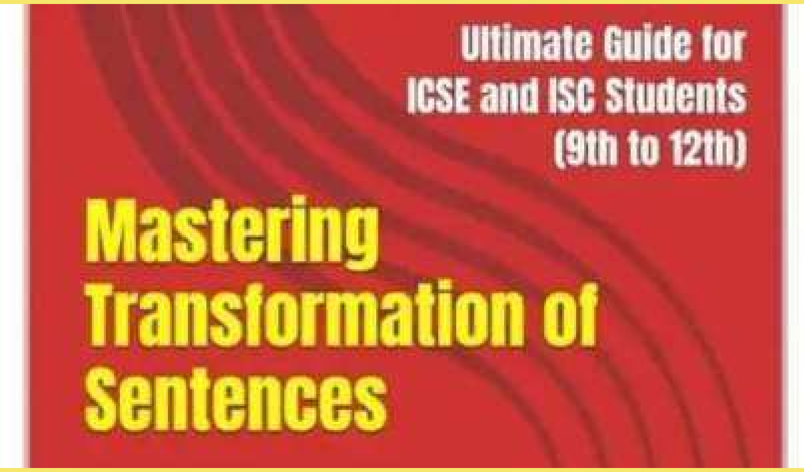

माली

ने सिल्वर सिटी में रचा इतिहास, दर्शकों के दिलों पर छोड़ी गहरी छाप

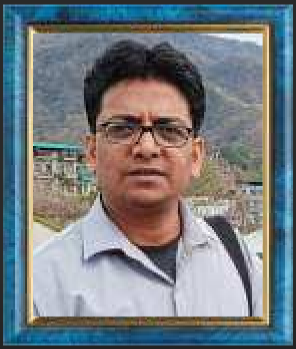

विकास कुमार

बहुप्रतीक्षित फिल्म "माली" को सिल्वर सिटी में पहले दिन ही जबरदस्त कामयाबी मिली। "माली" ने न केवल भारतीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी अपनी अद्भुत सफलता का परचम लहराया है। यह फिल्म स्वीडिश इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल 2024 में सर्वश्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय फीचर फिल्म का पुरस्कार जीतने के साथ ही 13वें शिकागो साउथ एशियन फिल्म फेस्टिवल 2022 में भी इसी श्रेणी का सम्मान प्राप्त कर चुकी है। इसके अलावा, निर्देशक शिव शेट्टी को 12वें क्वीन्स वर्ल्ड फिल्म फेस्टिवल 2022 में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक नरेटिव फीचर का पुरस्कार दिया गया। ये सम्मान फिल्म की वैश्विक प्रभावशीलता और इसके प्रेरक विषयों - संघर्ष, आशा और सशक्तिकरण - को प्रमाणित करते हैं।

दर्शकों ने फिल्म के संघर्ष, प्रकृति संरक्षण, और महिला सशक्तिकरण के संदेश से गहरा जुड़ाव महसूस किया और फिल्म की शानदार अदाकारी के तारीफों के पुल बांधे। "माली" एक ऐसी खूबसूरत फिल्म है जो किसी को भी अंतरमन में झांकने के लिए मजबूर करती है।

फिल्म की कहानी मुख्य किरदार तुलसी पर आधारित है, जिसे अनिता नेगी ने बखूबी निभाया है। इस फिल्म की एक और खास बात यह है कि इसे उत्तराखंड के स्थानीय तकनीशियनों और कलाकारों की टीम ने बनाया है। फिल्म का निर्देशन शिव सी. शेट्टी ने किया है, जबकि इसका निर्माण सोनाली राणा ने किया है। सिनेमैटोग्राफी (DOP) की जिम्मेदारी हृतिक एस. नौडियाल ने निभाई, और उनके सहायक अंकित श्रेष्ठा ने उनके काम में सहयोग दिया।

इस शानदार प्रयास को और अधिक समर्थन देने और प्यार बरसाने के लिए, प्रतिष्ठित अभिनेत्री पद्मिनी कोल्हापुरे आयोजित इस विशेष प्रीमियर में उपस्थिति रही।

"माली" का रोजाना शो सिल्वर सिटी, देहरादून में शाम 4:45 बजे आयोजित किया जा रहा है। बड़े पर्दे पर "माली" का अनुभव करें और इस स्थानीय प्रयास को अपना समर्थन दें।

HEART-ART PRODUCTION PRESENTS
IN ASSOCIATION WITH PRAGYA KAPOOR & EK SAATH FOUNDATION
MAALI
A FILM BY SHIV C. SHETTY
PRODUCED BY SONALI RANA & SHIV C. SHETTY
ASING IN DEHRADUN
20TH DEC 2024
ER CITY, RAJPUR ROAD
4:45PM SHOW
BUY YOUR TICKETS NOW
2024
WINNER
BEST INTERNATIONAL FEATURE FILM
QUEENS WORLD FILM FESTIVAL
2022
WINNER
WRITTEN BY : SHIV-SONALI | CREATIVE PRODUCER : SONALI RANA
CINEMATOGRAPHER : HRITHIK S NAUDIYAL & ANKIT SHRESTHA | CAMERA, LIGHTS & SOUND EQUIPMENT : NAHAL PRODUCTIONS
EDITOR : NEHA MEHRA | COLORIST : ROY GOURAV
SOUND : SUBIR KUMAR DAS | ORIGINAL MUSIC : SHASHWAT MALL | STUDIO : ACID STUDIOS
CAST : ANITA NEGI, AUROSHIKHA DEY, SUJATA SHARMA,
HEMWANT TIWARI, SUSHIL YADAV & ISHAN SINGH
RELEASE BY CITARA DISTRIBUTION

नो डिटेंशन पॉलिसी के खात्मे से शिक्षा में होगा सुधार

सुनील कुमार महला

हाल ही में केंद्र सरकार (शिक्षा मंत्रालय) ने 'नो डिटेंशन पॉलिसी' को खत्म कर दिया है जिसके तहत अब कक्षा 5 और 8 की वार्षिक परीक्षा में असफल छात्रों को फेल किया जाएगा, यह वाकई एक स्वागत योग्य कदम है। वास्तव में, केंद्र सरकार के इस फैसले से बच्चों के अंदर सीखने की इच्छा और ललक बढ़ेगी। नियम में बदलाव का फायदा यह होगा कि अब उन बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा जो किसी कारणवश पढ़ाई में अच्छी परफोर्मेंस नहीं दे पाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, इस दौरान छात्र की शिक्षा स्थिति को सुधारने के लिए शिक्षकों की ओर से विशेष कोशिश की जाएगी और मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। शिक्षक न केवल छात्र विशेष के शैक्षणिक प्रदर्शन पर ध्यान देंगे, बल्कि उनके माता-पिता, अभिभावकों को भी समय समय पर उसके बारे मार्गदर्शन व सुझाव आदि देंगे। इस पॉलिसी के खत्म होने के बाद पांचवीं और आठवीं कक्षा में जो छात्र फेल या असफल हो जाते हैं, उन्हें फेल/असफल ही घोषित किया जाएगा और उन्हें दो महीनों के भीतर एक बार पुनः परीक्षा में शामिल होने का अवसर प्रदान किया जाएगा और यदि वे इसमें भी फेल या असफल होते हैं तो उन्हें अगली कक्षा में प्रोन्नति नहीं दी जाएगी। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अभी तक आठवीं कक्षा तक फेल करने का प्रावधान नहीं था। यहां यह उल्लेखनीय है कि इससे पहले, प्रारंभिक शिक्षा के दौरान किसी भी छात्र को कक्षा विशेष में रोकने की परमिशन नहीं थी। हालांकि, अब 5वीं और 8वीं कक्षा में शैक्षणिक प्रदर्शन के आधार पर रोकने की परमिशन दी गई है। बहरहाल, एक और अच्छी बात यह है कि इस पॉलिसी के तहत किसी भी छात्र को स्कूल से निकाला नहीं जाएगा। वर्ष 2010-11 से पहले पांचवीं और आठवीं कक्षा में बोर्ड की परीक्षाओं का प्रावधान किया गया था,जिसे वर्ष 2010-11 से बंद

कर दिया गया था। विद्यार्थियों को अगली कक्षा में प्रमोट कर दिया जाता था। इससे स्कूली शिक्षा के स्तर में लगातार गिरावट आ गई थी। इतना ही नहीं, इसका प्रभाव 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं पर भी कमोबेश पड़ा और नतीजे खराब आ रहे थे। यहां तक कि राज्य सरकारें भी पहले से जारी व्यवस्था को लेकर असमंजस की स्थिति में थीं। नई व्यवस्था लागू होने के बाद राज्य चाहें तो परीक्षा करा सकते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि केंद्र सरकार ने कक्षा 5 व 8 के छात्रों को अनुत्तीर्ण न करने की नीति को खत्म करने के संबंध में शिक्षा के अधिकार कानून में बदलाव करके इसे वर्ष 2019 में ही अधिसूचित कर दिया था, लेकिन देश के बहुत से राज्य व केंद्र शासित प्रदेश इसे अपनाये हुए हैं। गौरतलब है कि जुलाई 2018 में तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर लोकसभा में शिक्षा का अधिनियम, 2009 के संशोधन पर अपनी बात रखते हुए यह कहा था कि 'कई सरकारी स्कूल अब मिड डे मील स्कूल बन गए थे क्योंकि इनमें शिक्षा और सीखना ग़ायब है।'गौरतलब है कि उस समय केंद्र में नो डिटेंशन पॉलिसी थी, जिसे अब केंद्र सरकार ने पांचवीं और आठवीं कक्षा के लिए हटा दिया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि शिक्षा संविधान में आज समवर्ती सूची का विषय है।1976 से पूर्व शिक्षा पूर्ण रूप से राज्यों का उत्तरदायित्व था, लेकिन 1976 में किये गए 42 वें संविधान संशोधन द्वारा जिन पाँच विषयों को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में डाला गया, उनमें शिक्षा भी शामिल थी। गौरतलब है कि समवर्ती सूची में शामिल विषयों पर केंद्र और राज्य मिलकर काम करते हैं। अब केंद्र सरकार ने शिक्षा (पांचवीं/आठवीं कक्षा के बच्चों) के संदर्भ में यह निर्णय लिया है कि कमजोर छात्रों की मॉनीटरिंग हो और इनकी कमजोरी को चिह्नित कर अभिभावकों की मदद से इन छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि शिक्षा के स्तर में सुधार किए जा सकें। यह पॉलिसी केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय व सैनिक स्कूलों सहित सरकार द्वारा संचालित तीन हजार से ज्यादा स्कूलों में लागू होगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर लंबे समय से सवाल उठाये जा रहे थे। अब नई पालिसी से शिक्षा में पहले से कहीं अधिक सुधार होगा। यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर कभी समझौता नहीं किया जाना चाहिए, क्यों कि शिक्षा का किसी राष्ट्र का प्रमुख आधार स्तंभ होती है, विकास की असली रीढ़ होती है। आज भी हमारे देश की शिक्षा प्रणाली कमोबेश मैकोले शिक्षा प्रणाली पर आधारित है। अतः आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर हमेशा ठोस कार्य हों। शिक्षा पद्धति को जटिल नहीं अपितु सरल होना चाहिए अथवा उसमें ऐसा समावेश किया जाना चाहिए, जिससे छात्र सरलता से जटिलता की ओर आगे बढ़ें। नीरस और स्तरहीन शिक्षा का कोई औचित्य नहीं होता। आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षा में परंपरागत पद्धतियों के स्थान पर आधुनिक पद्धतियों का समावेश किया जाए। आज के परिवेश में छात्र अधिक महत्वपूर्ण है। विद्यालयों में विभिन्न संसाधनों इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ ही शिक्षकों की कमी आदि पर भी आज ध्यान देने की जरूरत है। शिक्षा में पर्यावरण, प्रकृति व खेल को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी शिक्षा से जुड़ें। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि आज शिक्षा का अधिकार जितना अहम है, उतना ही उसकी गुणवत्ता में कंट्रोल भी जरूरी और अति आवश्यक है। बिना गुणवत्ता वाली शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है। समाज को भी यह समझना होगा कि अनुत्तीर्ण छात्र को अनुत्तीर्ण करना ही उचित व सही है। अनुत्तीर्ण छात्र को उत्तीर्ण करने से शिक्षा में गुणवत्ता कहां से आएगी ? अनुत्तीर्ण छात्र की शिक्षा पर ध्यान दिया जा सकता है, उसे अभ्यास और मेहनत से नये आयामों की ओर ले जाया जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज शिक्षा प्रणाली में निश्चित ही आमूलचूल परिवर्तन आए हैं, बहुत से सुधार किए गए हैं, लेकिन आज भी शिक्षा में और भी बहुत से सुधार किए जाने की आवश्यकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि शिक्षा को छात्रों को व्यावहारिक कौशल और ज्ञान से लैस करना चाहिए, ताकि वे आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बन सकें और दूसरों पर कम निर्भर हों। सच तो यह है एक व्यापक व अच्छी शिक्षा प्रणाली ही हमारे शरीर,मन और आत्मा को समृद्ध करती है और हमें देश के अच्छे नागरिक बनाती है और इससे व्यक्ति, देश, समाज और राष्ट्र उन्नयन और प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं। ●●●

परमहंस योगानंद जी का अवतार सदृश जीवन

अलकेश त्यागी

गणित के समान सत्य "क्रियायोग" के शाश्वत विज्ञान को आमजन तक पहुंचाने के लिए महान आध्यात्मिक विभूतियों ने जिस बालक को चुना उसका नाम था मुकुंद घोष। जन्म से लेकर महासमाधि तक की घटी घटनाएं उनके अवतार सदृश जीवन की गवाह है।

5 जनवरी 1893 को गोरखपुर में एक बंगाली दंपति के घर बालक मुकुंद घोष का जन्म कोई साधारण घटना नहीं थी। यदि साधारण होती तो जनवरी 1894 के कुंभ मेले में, उनके गुरु स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी से, जो उस समय स्वामी भी नहीं थे, अमर गुरु महावतार बाबाजी यह नहीं कहते कि "...कुछ वर्षों बाद मैं आपके पास एक शिष्य भेजूंगा जिसे आप पश्चिम में योग का ज्ञान प्रसारित करने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं।..." और अंततः स्वामी श्री युक्तेश्वरजी से, जुलाई 1915 में सन्यास दीक्षा ले मुकुंद, योगानंद बन गए। इसके अलावा सितंबर 1893 में शिकागो में स्वामी विवेकानंदजी ने एक किशोर डिकेन्सन से कहा कि "...नहीं बेटा, मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूं। तुम्हारे गुरु बाद में आएंगे। वह तुम्हें चांदी का गिलास देंगे।" अंतत: 1936 में योगानंदजी से क्रिसमस उपहार पा डिकेन्सन ने स्वीकार किया कि आज, तैंतालीस साल पूर्व स्वामी विवेकानंद द्वारा दिया आश्वासन पूरा हुआ। कालान्तर में सच हुईं, दोनों ही घटनायें तब घटीं जब योगानंदजी क्रमशः मात्र एक वर्ष और 9 महीने के थे।

ग्यारह वर्ष की आयु में मां को खोने के बाद मिला, मां का संदेश और कवच (ताबीज) भी उनके अवतारी होने को प्रमाणित करते हैं। शिशु योगानंद के लिए लाहिड़ी महाशय का कहना कि "छोटी मां तुम्हारा पुत्र एक योगी होगा। एक आध्यात्मिक इंजन बनकर यह अनेक आत्माओं को ईश्वर के साम्राज्य में ले जाएगा।" योगानंदजी के अवतारी जीवन का भौतिक प्रमाण वह घटना थी, जब प्रार्थना करती उनकी मां के जुड़े हाथों के बीच एक गोल विचित्र ताबीज प्रकट हुआ। इसमें संस्कृत के अक्षर खुदे थे। ताबीज के बारे में उनकी माँ को एक साधु ने बताया था कि गुरुजन उन्हें बताना चाहते हैं कि अगली बीमारी उनकी अंतिम बीमारी सिद्ध होगी। अमानत के रूप में रखने के लिए उन्हें एक चांदी का ताबीज दिया जाएगा जिसे मृत्यु की घड़ी में अपने बड़े बेटे को देकर एक वर्ष बाद दूसरे बेटे मुकुंद को सौंपने के लिए कहना। उस ताबीज के मर्म को मुकुंद समझ लेगा। कथन की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए साधु ने कहा कि मैं ताबीज नहीं दूंगा। कल प्रार्थना के समय वह स्वत: तुम्हारे हाथों में प्रकट होगा। और फिर वैसा ही हुआ। समय के साथ लाहिडि महाशय और साधू के कथन सही सिद्ध होना प्रमाण ही हैं।

योगानंदजी ने 1917 में, योगदा सत्संग सोसाइटी yssofindia.org की नींव डाली। 1920 में उन्हें अमेरिका के बोस्टन में आयोजित धार्मिक उदारवादियों के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने का निमंत्रण मिला। योगानंदजी की, ईश्वर से आश्वासन की प्रार्थना पर, महावतार बाबाजी ने 25 जुलाई 1920 को दर्शन देकर कहा कि "अपने गुरु की आज्ञा का पालन करो और अमेरिका चले जाओ। डरो मत; तुम्हारा पूर्ण संरक्षण किया जाएगा।" तत्पश्चात उन्होंने क्रियायोग के प्रसार हेतु अमेरिका में 1925 में self-realization फैलोशिप की स्थापना की। और अंत में 7 मार्च 1952 को लॉस एंजिलिस में भारतीय राजदूत विनयरंजन सेन के सम्मान भाषण के बाद मंच पर खड़े-खड़े महासमाधि लेना और उनकी पार्थिव देह का निर्विकारता की अद्भुत अवस्था प्रदर्शित करना उनके अवतारी जीवन का अंतिम प्रमाण था। अधिक जानकारी : yssi.org ●●●

भगवान पार्श्वनाथ करुणावतार तो थे ही वे कर्मावतार भी थे

संदीप सृजन

सनातन धर्म की पावन गंगोत्री से निकले विभिन्न धर्मों में जैन धर्म भारत का सर्वाधिक प्राचीनतम धर्म है। चौबीस तीर्थंकरों की समृद्ध जनकल्याण की परम्परा, जो वर्तमान अवसर्पिणी काल में ऋषभदेव से लेकर महावीर तक पहुंची, उसमें हर तीर्थंकर ने अपने समय में जिन धर्म की परम्परा को और आत्मकल्याण के मार्ग को समृद्ध किया है तथा संसार को मुक्ति का मार्ग दिखाया है।काल के प्रवाह में ऐसा होता आया है कि एक महापुरुष के निर्वाण के बाद उसका प्रभाव तब तक ही विशेष रुप से जन सामान्य में रहता है जब तक की उसके समान कोई अन्य महापुरुष धरती पर अवतरित न हो। लेकिन कुछ महापुरुष इसका अपवाद होते है। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में तेवीसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के बाद भगवान महावीर हुए लेकिन भगवान पार्श्वनाथ के प्रभाव में कोई कमी आज तक नहीं आई है। जैन मान्यताओं के अनुसार वर्तमान में भगवान महावीर का शासन चल रहा है लेकिन सर्वाधिक जैन प्रतिमाएँ आज भी केवल भगवान पार्श्वनाथ की ही है। जैन मंत्र साधनाओं में भी सर्वाधिक महत्व पार्श्वनाथ के नाम को ही दिया जाता है। भगवान पार्श्वनाथ का जन्म भगवान महावीर के जन्म से 350 वर्ष पहले हुआ। सौ वर्ष की आयु उनकी रही तदानुसार लगभग तीन हजार वर्ष पहले वाराणसी के महाराजा अश्वसेन के यहॉ माता वामा देवी की कुक्षी से पोष कृष्ण दशमी को हुआ। राजसी वैभव के बावजूद आत्मा में असीम करुणा का भाव जो सांसारिक जीवन में उनको लोकप्रिय बना देता है। वे उस दौर के तमाम आडम्बरों के बीच एक कमल पुष्प थे। धर्म और समाज में फैली हिंसा और कुरीतियों के बीच एक धर्म पुरोधा थे। जो मनुष्य समाज में मनुष्यता के गुण करुणा, दया, अहिंसा के जीवन की प्रतिस्थापना करने को आए थे। जैन धर्म ग्रंथो में एक प्रसंग आता है- जब भगवान पार्श्वनाथ मात्र उम्र सोलह वर्ष थे तब वाराणसी नगरी में एक तापस आया जो नगर के मध्य अग्नी तप कर रहा था। और सारा नगर उस तापस के इस हठ योग से प्रभावित हो कर उसके दर्शन के लिए जा रहा था। ऐसे में लोक व्यवहार अनुसार पार्श्वकुमार भी वहॉ पहुंचे। तभी उन्होने अपने ज्ञान से देखा की तापस ने जो लकड़ी अपने सामने जला रखी है उसमें नाग नागिन का जोड़ा है, और वो जल रहा है। पार्श्वकुमार ने तापस से कहा कि- योगी आपके इस हठ योग में जीवों की हिंसा हो रही है। इस पर तापस क्रोधित हो गया और अशिष्ठ भाषा का प्रयोग पार्श्वकुमार के प्रति किया। तभी पार्श्वकुमार ने अपने कर्मचारी को आदेश देते हुए काष्ठ के उस टुकड़े को आग से निकालने कर उसे चीरने को कहा, जैसे ही कर्मचारी ने लकड़ी को चीरा उसमें से जलता हुआ नाग नागिन का जोड़ा निकला जो मरणासन स्थिती में पहुँच चुका था । पार्श्वकुमार ने जलते नाग नागिन के प्रति अपनी करुणा बरसाते हुए उनको नमस्कार महामंत्र सुनाया और बोध दिया कि वैर भाव को त्याग करे और समाधी मरण का वरण करे। पार्श्वकुमार की वाणी उस समय उस सर्प युगल के लिए किसी अमृत से कम नहीं थी। क्योंकि कहा जाता है 'अंत मति सो गति'। पार्श्वकुमार के वचनों से उनके मन से वैर भाव खत्म हुआ और वे समाधी मरण को प्राप्त कर देव लोक में धरणेन्द्र और पद्मावती नाम से इन्द्र और इन्द्राणी बने। जो की भगवान पार्श्वनाथ के जीवन काल में हर समय उनके साथ रहे और माना जाता है कि आज भी भगवान पार्श्वनाथ का स्मरण करने वाले के साथ रहते है।

भगवान पार्श्वनाथ करुणावतार तो थे ही वे कर्मावतार भी थे उन्होने अपने सत्तर साल के दीक्षा पर्याय में कभी किसी से सहायता की याचना नहीं की अपने तपोबल के माध्यम से केवल ज्ञान को प्राप्त किया। और मोक्ष को गये। भगवान पार्श्वनाथ कर्मकांड और आडम्बर को धर्म नहीं मानते थे वे जीवंत धर्म को ही धर्म मानने और उसकी प्रतिस्थापना करने के लिए धरा पर आए थे। उन्होंने करुणा, दया, परोपकार और जगत कल्याण के कार्यों को धर्म बताया और उसी तरफ जगत के जीवों के ले जाने के लिए उपदेश दिया। भगवान पार्श्वनाथ का जन्मकल्याणक मनाते हुए हमें भी उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लेना चाहिए। ●●●

कविता

सुनामी के दस वर्ष

अरुण कुमार गुप्ता

सुनामी की प्रलयंकर लहरें
निगल गई कितने चेहरे।
वह सागर,
जीवन का कर्त्ता था, भर्त्ता था,
देवतुल्य था, पितृतुल्य था,
युगों-युगों से।
सागर तट निष्प्राण... सर्वथा निर्जन
प्रभु यीशु के जन्मदिवस के अगले ही दिन,
उल्लास पर्व का विद्यमान था,
सागर अपनी असीम गहराइयों में था,
नित्य की भांति शांत।
अचानक... तट से मीलों दूर,
कहीं कांपा धरती का मन,
सिहर उठा था मां का तन,
पिता सागर का मन था क्लांत
मानो खुला तीसरा नेत्र,
शिव के तांडव से कांपा सागर क्षेत्र।
सब अस्त व्यस्त, संहार विषम,
मानव बेबस, कोप प्रकृति का,
कुछ घंटों में हो गया शांत,
जन धन का हुआ विनाश,
लुटी हजारों परिवारों की आस।
पर गिर कर उठना,
मानव की है प्रकृति सनातन।
आशा की दो पंक्ति कह गये कविवर बच्चन,
ʻनाश के दुःख से कभी, दबता नहीं निर्माण का सुख,
प्रलय की निस्तब्धता से सृष्टि का निर्माण फिर-फिर।
नीड़ का निर्माण फिर-फिर।।
आओ लें संकल्प
करें प्रण नवनिर्माण का,
सबके मुख पर फिर आए मुस्कान।
समवेत स्वरों में पुनः सृष्टि का हो नवगान।।

तुम मत आना बस्तर

प्रभुनाथ शुक्ल

मुकेश ! तुम लौटकर मत आना बस्तर ?
बस्तर तुम्हारे लिए रो रहा है
तुम्हें खोने के बाद जंगल सो रहा है
झरने, नदिया, पहाड़ और गुफाएं
तुम्हें भूला नहीं पाएंगे
मुकेश ! तुम लौटकर मत आना बस्तर ?
तुम अब बस्तर की पीड़ा मत लिखना
आदिवासियों की भूख मत लिखना
जंगल की लुट मत लिखना
भ्ष्टाचार पर तुम चुप रहना
मुकेश ! तुम लौटकर मत आना बस्तर ?
पत्रकार बनकर मत आना
सच लिखने की हिम्मत मत लाना
नक्सल की पीड़ा पर चुप रहना
लेकिन, बिकना हो तो बस्तर आना
मुकेश ! तुम लौटकर मत आना बस्तर ?
सच लिखोगे तो मारे जाओगे
सेफ्टीटैंक में चुन दिए जाओगे
जिंदगी के सपने यूँ लुटा जाओगे
दोस्त ! अपनों को बिलखता छोड़ जाओगे
मुकेश ! तुम लौटकर मत आना बस्तर ?
मरकर भी इतिहास नहीं बन पाओगे
पत्रकार हो तो कोई सम्मान नहीं पाओगे
मौत देने वालों को क्या मौत दे पाओगे
खबर लिखने वालों खबर बन जाओगे
मुकेश ! तुम लौटकर मत आना बस्तर ?
तुम शहीद नहीं कहलाओगे
शौर्य और परमवीर चक्र नहीं पाओगे
तुम्हारे नाम पर बस्तर की वह सड़क न होगी
चौराहे पर ख़डी तुम्हारी कोई मूरत न होगी
!!समाप्त!!

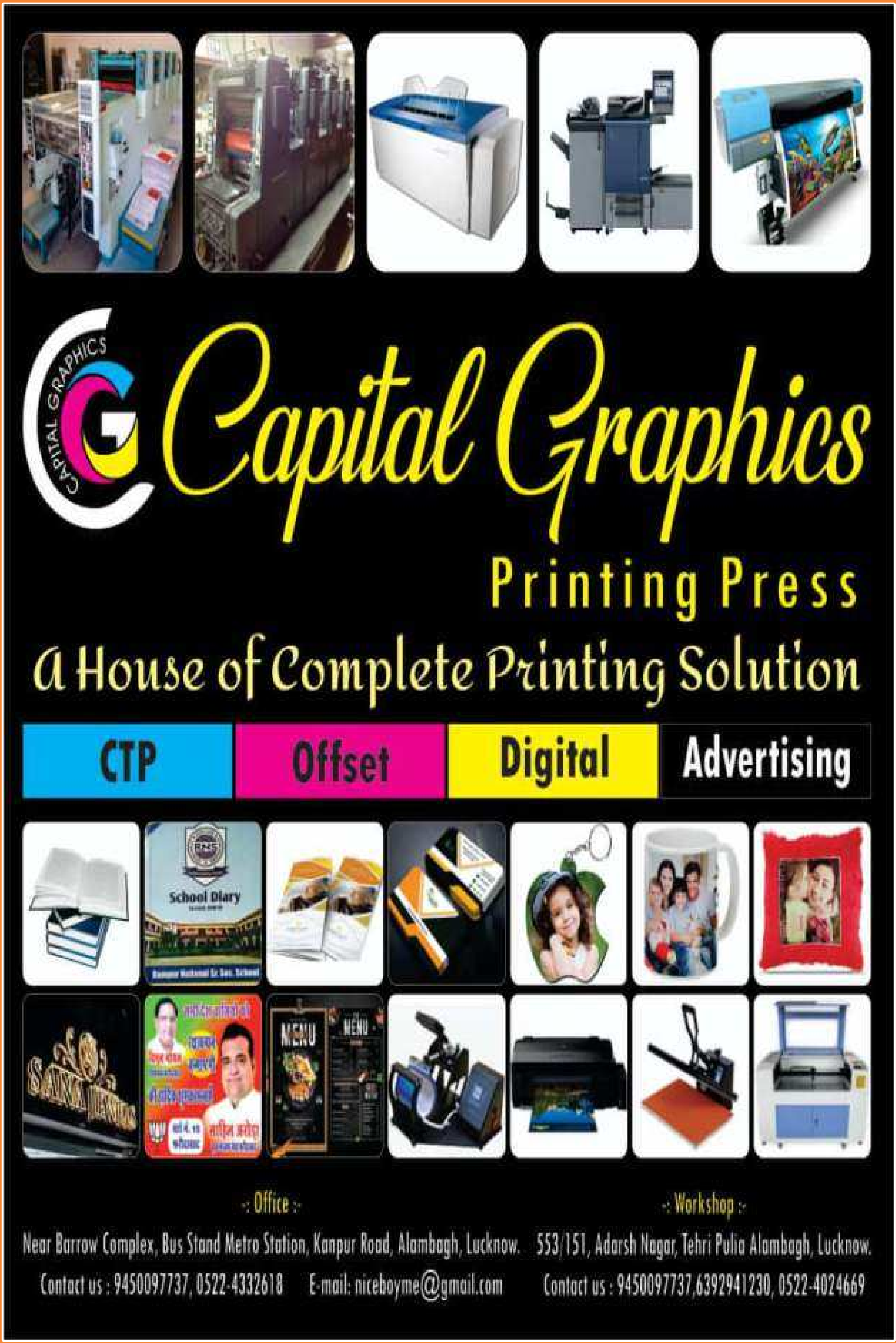
CAPITAL GRAPHICS
Capital Graphics
Printing Press
A House of Complete Printing Solution
CTP
Offset
Digital
Advertising
School Diary
MENU
MENU
-: Office :-
Near Barrow Complex, Bus Stand Metro Station, Kanpur Road, Alambagh, Lucknow.
Contact us : 9450097737, 0522-4332618 E-mail: niceboyme@gmail.com
-: Workshop :-
553/151, Adarsh Nagar, Tehri Pulia Alambagh, Lucknow.
Contact us : 9450097737,6392941230, 0522-4024669

RBSK
RASHTRIYA BAL SWASTHYA KARYAKRAM
राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम

24 घंटे आपातकालीन सुविधा

विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवायें
अब आपकी पहुँच में...

अमेरिका की स्माईल ट्रेन संस्था द्वारा जन्मजात कटे होंठ एवं कटे तालू का नि:शुल्क ऑपरेशन एवं उपचार

अमेरिका की स्माईल ट्रेन संस्था अब राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम से भी सम्बद्ध

हेल्थ सिटी हास्पिटल
TRAUMA CENTRE & SUPERSPECIALITY HOSPITAL
गोमती नगर थाने के पीछे

पहले

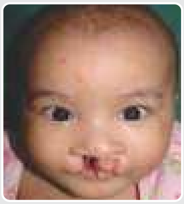

SmileTrain
TEAM EMPOWER

बाद में

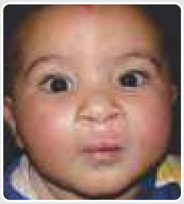

डॉ0 आदर्श कुमार
सीनियर कन्सल्टेंट–स्माइल ट्रेन, प्लास्टिक सर्जन

डॉ0 रोमेश कोहली
प्लास्टिक सर्जन

डॉ0 एस.पी.एस. तुलसी
मैक्सिलोफेशियल सर्जन

डॉ0 वैभव खन्ना
प्रोजेक्ट डायरेक्टर–स्माइल ट्रेन, प्लास्टिक सर्जन

प्लास्टिक सर्जरी विभाग में उपलब्ध अन्य सुविधायें

- समस्त प्रकार की चोट, यातायात दुर्घटना एवं घायल अवस्था (All types of Trauma & Accidents)
- जन्मजात एवं अन्य विकृतियों की पुन: निर्माण शल्य क्रियायें (Reconstructive Surgery)
- रीप्लान्टेशन व माइक्रोवैस्कुलर शल्य क्रिया (Replantation & Microvascular Surgery)
- कॉस्मेटिक शल्य क्रियायें (Cosmetic Surgery)
- बाल प्रत्यारोपण (Hair Transplant)
- अन्य समस्त प्रकार की प्लास्टिक सर्जरी की सुविधा उपलब्ध है

अगर आप ऐसे किसी भी रोगी को जानते हैं तो तुरन्त निम्न पते पर भेजें या सम्पर्क करें:

SmileTrain
Changing the World One Smile at a Time

SMILE TRAIN PROJECT (U.S.A.)-
FREE TREATMENT OF CLEFT LIP AND CLEFT PLATE PATIENTS

NH-A & B Vijay Khand-2, Gomti Nagar, Lucknow-226010
Ph.: 0522-4063608, 9935880201, 9453167711
Email: dr.vaibhavkhanna@yahoo.in, hrccpllko@gmail.com
www.lucknowwhealthcity.com

HELPLINE
CALL
9454159999